श्री सूर्यकरण पारीक स्मारक ग्रन्थमाला
प्रथम पुष्प

चौबोली

सम्पादक
डा० कन्हैयालाल सहल
साहित्यरत्न पं० पवराम गौड़ 'विशारद' एम० ए०

भूमिका-लेखक
श्री जैनेन्द्रकुमार



मिलने का पता
दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी
जयपुर १९६२ जोधपुर
मूल्य ८० नये पै०

प्रकाशक—
दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी
जयपुर जोधपुर

मुद्रक—
यूनाइटेड प्रिण्टर्स
जयपुर।

विषय-सूची

भूमिका

कहा गया कि मैं इस पुस्तक पर कुछ शब्द लिखूँ, शायद इस लिए कि मैंने कतिपय कहानियाँ लिखी हैं। कहानी के आदि का पता चलना कठिन है। इतिहास में उसकी इति भी होने वाली नहीं है। मनुष्य ने भाषा जब से सीखी और पारस्परिकता जीवनमें आरम्भ हुई, तभी से कहानी उपजी और मनुष्य में आपसीपन जब तक रहेगा, कहानी रहेगी।

आजकल छापा है और बहुत-से अखबार निकलते हैं। लगभग सभी को उनमें छापने के लिए कहानी चाहिए। इस तरह कहानियों का एक नया ढंग भी चल पड़ा है। जैसे कपड़ों के नये तर्ज निकलते हैं, कहानियों के भी रंगरूप नये निकलने लगे हैं। यानी कुछ के लिए कहानी ही साध्य हो गयी है। छापे से पहले ऐसा नहीं था। तब कहानी हमेशा साधन थी। घट से घटकर यही कह सकते हैं कि वह मनोरंजन का साधन थी, बढ़ से बढ़कर वही धर्म-तत्व का रूपक हो जाती थी। कहानी अपने आप में कला न थी यद्यपि कही जाने और सुनी जाने के कारण उसमें एक प्रकार की कला का होना अनिवार्य था। छापे से पहले की कहानी में इसीसे एक चित्रमयता है। जब कहानी समक्ष सुननेवाले से परोक्ष पढ़नेवाले के लिए लिखी जाने लगी, तब उसकी इस चित्रात्मकता में, लगता है, कमी भी आ चली। उसमें प्रसाद कम हुआ, उस वस्तु की कम माँग रह गई, जिसको अंग्रेजी में art कहते हैं और वह कुछ अध्ययन-मनन की चीज बनने लगी। मैं नहीं मानता कि आज की अखबारी कहानियों को कहानी का विक

भूमिका

कहा गया कि मैं इस पुस्तक पर कुछ शब्द लिखूँ, शायद इसलिए कि मैंने कतिपय कहानियाँ लिखी हैं। कहानी के आदि का पता चलना कठिन है। इतिहास में उसकी इति भी होने वाली नहीं है। मनुष्य ने भाषा जब से सीखी और पारस्परिकता जीवनमें आरम्भ हुई, तभी से कहानी उपजी और मनुष्य में आपसीपन जब तक रहेगा, कहानी रहेगी।

आजकल छापा है और बहुत-से अखबार निकलते हैं। लगभग सभी को उनमें छापने के लिए कहानी चाहिए। इस तरह कहानियों का एक नया ढंग भी चल पड़ा है। जैसे कपड़ों के नये तर्ज निकलते हैं, कहानियों के भी रंगरूप नये निकलने लगे हैं। यानी कुछ के लिए कहानी ही साध्य हो गयी है। छापे से पहले ऐसा नहीं था। तब कहानी हमेशा साधन थी। यह से बढ़कर नहीं कह सकते हैं कि वह मनोरंजन का साधन थी, यह से बढ़कर वही धर्म-तत्व का रूपक हो जाती थी। कहानी अपने आप में कला न थी यद्यपि कही जाने और सुनी जाने के कारण उसमें एक प्रकार की कला का होना अनिवार्य था। छापे से पहले की कहानी में इसीसे एक चित्रमयता है। अब कहानी समक्ष सुननेवाले से परोक्ष पढ़ने वाले के लिए लिखा जाने लगी, तब उसकी इस चित्रात्मकता में, लगता है, कमी भी आ चली। उसमें प्रसाद कम हुआ, उस वस्तु की कम माँग रह गई, जिसको अंग्रेजी में आर्ट कहते हैं और वह कुछ अध्ययन-मनन की चीज बनने लगी। मैं नहीं मानता कि आज की चमत्कारी कहानियों को कहानी का विक

सित रूप कहना ठीक होगा। उनमें मुझे टिकाऊ तत्व कम दीखता है। मानव की स्वच्छ मानविकता की जगह व्यक्तित्व प्रनाव उसमें विशेष है।

कहानी मैंने लिखी तो है, लेकिन यह मुझे अधिकाधिक अनुभव होता रहा है कि जिसमें कही जाने का गुण बिलकुल नहीं रह गया है, उसे कहानी भी नहीं कह सकते हैं। जो कही नहीं जा सकती वह आसपास के आदमी को प्रभावित कैसे कर सकती है? छापे से आज सुविधा मिली है कि हम ऐसी भाषा लिख सकते हैं जिसे पास-पड़ोसी न समझें, इने गिने शिक्षित लोग ही समझें। प्रत्यक्ष श्रोता उससे अप्रभावित रहते हैं और उसका प्रभाव परोक्ष पाठक के लिए ही छूट जाता है। इस सुविधा से कहानी जन-सामान्य के हित के लक्ष्य से दूर जा पड़ी है। अब यह एक व्यसन तक बन गई है। पश्चिम की कहानी की बारीकी का मैं कायल हूँ, लेकिन यह भी है कि उसमें तकल्लुफ ज्यादा है, दम कम।

भारत के जनपदों में अनेकानेक कहानियाँ श्रुति-क्रम से चली आई हैं। ये हमारी रीति-नीति, हमारे आदर्श और हमारे जीवन-दर्शन को प्रत्यक्ष रूप में अपने में धारण किये हुए हैं। इतिहास में तिथि और व्यक्ति होते हैं। कथा में वैसा ऊपरी कुछ नहीं रहता। काल-भेद लुप्त हो जाता है और आदमी राक्षस और देवता, पशु और वनस्पति संक्षेप में अखिल प्रकृति के साथ एकाकार हो जाता है। कथा का पात्र केवल संस्कृति के अन्तरंग को वहन करने के लिए है। उसका अपने आपमें अस्तित्व नहीं। इससे वह यथार्थ से भी परिबद्ध नहीं है। 'पंचबोली' में राजा भोज के मित्र उसके समकक्ष नहीं है। एक है वैताल दूसरा है सुथारी तीसरा मदवाण और चौथा चोर। यानी वहाँ राजा अपने राजत्व से घिरा नहीं, शेष दुनिया के लिए वह खुला

है। यों कहो, दुनिया का नहीं यह तो कहानी का राजा है। उस राजा को किसी राक्षसी के फेरा में फँस रहनेवाली एक मक्खी बनने में कठिनता नहीं होती। ऐसे ही उसके मित्र भी कुछ न कुछ बन जाते हैं—अर्थात् इन कहानियों में सम्भव असम्भव के बीच कोई रेखा नहीं छोड़ी गई है। सुना है नेपोलियन ने कहा था कि 'असम्भव' जैसा शब्द उसके कोष में नहीं है पर हमारे कहानीकार के आगे नेपोलियन की क्षमता लँगड़ी ही समझनी चाहिए। नेपोलियन के लिए जो डींग हो सकती है, हमारे कहानीकार के लिए तो वह नित्यप्रति का खेल है। आज का बुद्धिवादी पाठक कुछ भी कहे, पर यह झूठ नहीं है कि हमारे कहानीकार ने मानव-अमानव चेतन-अचेतन और आकाश पाताल के भेदों को एकमेक करने की बेहूदगी करके भी हमारे जातीय जीवन के ढाँचे को थामे रक्खा। जिन कहानियों में पशु पक्षी मनुष्य की भाषा में बात करते हैं, उन कहानियों ने यथार्थ की अवज्ञा ही कितनी हानि की, यह तो हमें नहीं मालूम पर मानव-जाति का पर्याप्त मनोरंजन उनसे सधा, इसमें हमें सन्देह नहीं।

आदर्श हवा में नहीं रह सकता। रूपक पहिनकर शब्द में वह रहता ही आया है। इसमें शब्द पर सदा ही बोझ पड़ गया है। विचार शब्द में रखा जा सकता है, पर भाव सदा शब्दातीत है। शब्द संकेत में उसे बाँधा ही सकता है, घेर नहीं सकता। इसी से शुद्ध भाववस्तु रूपक और आख्यायिकाओं के रूप में उपलब्ध है। आनन्द और अनुभूति एक से दूसरे तक, और आत्म से अन्त तक यदि पहुँचाये जा सकेंगे तो किस माध्यम से? वह माध्यम है कथा। उसमें प्रतिपादन नहीं, मात्र उद्घाटन है। तर्क के बल से नहीं, रस के योग से कथा प्रभावक होती है। स्पष्ट

है कि यह रस अध्यात्म की ऊँचाई से भोग की निचाई तक इस धरातल पर नाना रूप में कथा द्वारा विस्तार पाता रहा है। यह भी स्पष्ट है कि यह रस जितना भोग से अध्यात्म की ओर उठता हुआ होगा, कहानी उतनी ही श्रेष्ठ होगी। पर कहानी विषय की विशेषता जो भी हो वर्णन की विशेषता भी वहाँ दरकार है। कहानी का कहानीपन वर्णन की सचित्रता में है।

प्रस्तुत कहानियाँ धर्म-गाथा नहीं लोककथायें हैं। लौकिक रीति-नीति के बारे में उनमें व्यंग्य है। अवश्य कहीं मनोरंजन ही अपना इष्ट बन गया दीखता है। मनोरंजन से च्युत कहानी को विफल ही समझिए, खास तौर से जब कि सुननेवाला सामने हो। सुननेवाले का मन उचटा कि कहानी ही व्यर्थ हो गई। इससे मन लगाये रखने की अतिरिक्त चेष्टा भी इन कहानियों में नजर आती है। पर वह क्षम्य होनी चाहिए।

हिन्दुस्तान के विविध प्रान्तों में लोक-प्रचलित ऐसी कथाओं का संग्रह हो तो भला हो। भाषा वही उनकी बोलचाल की रहे। सीधे सरल हिन्दी में कथा हो। ऐसे हमें अपने अतीत इतिहास और अपने वर्तमान के भी अन्तरंग का प्रत्यक्ष होगा और भारत के अखण्ड निर्माण में सहायता मिलेगी।

पंचपटी कुण्डेश्वर
(टीकमगढ़)
२४ जून १९४१

जैनेन्द्रकुमार

आमुख

संसार के प्रत्येक देश के इतिहास में कहानी की प्रधानता रही है। राजस्थानी साहित्य भी इस विषय में कोई अपवाद नहीं है। उन भाट और चारणों की कृपा से जो अपने शासकों की प्रशस्ति वर्णन करने में सिद्धहस्त थे आज भी हम प्राचीन राजस्थानी काव्यों और वार्ताओं का रसास्वादन कर सकते हैं। अन्य जातियों की तरह राजपूतों में भी कहानी कहने–सुनने की परिपाटी प्राचीन काल से ही चली आती है।

इस सम्बन्ध में एक बात विशेषतः उल्लेखनीय है। साधारणतः लोगों का ध्यान हो सकता है और उनका ऐसा विचार होना स्वाभाविक भी है कि राजस्थानी साहित्य में जो कहानियां उपलब्ध हैं उन सबमें राजपूतों की वीरता और उनके शौर्य की ही झलक है, उनमें जीवन की विविधता नहीं पाई जाती किन्तु वास्तव में वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है। यह तो निःसन्देह सत्य है कि अधिकांश राजस्थानी कहानियां राजपूत राजाओं की वीरता को लेकर लिखी गई हैं, किन्तु प्रेम, वैचित्र्य, आदर्श तथा नीति के अनेक पहलुओं पर स्वतन्त्र रूप से लिखी हुई कहानियों का भी राजस्थानी साहित्य में अभाव नहीं है। स्वर्गीय पण्डित सूर्यकरणजी पारीक राजपूती सभ्यता, राजपूतों के अनुपम युद्ध-कौशल, उनकी दृढ़-प्रतिज्ञा, आत्मगौरव की मर्यादा रक्षा, अनुशासन के नियम, दान-वीरता और आदर्श धर्मवीरता के अनन्य प्रशंसक थे और उनका विश्वास था कि राजपूती सभ्यता और संस्कृति का चित्रण करने वाली राजस्थानी कहानियों के प्रकाशन से राजस्थानी और साथ ही साथ हिन्दी-साहित्य की भी श्रीवृद्धि होगी और इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने प्रथम प्रयास में वीरता से सम्बन्ध रखने वाली सात ऐतिहासिक कहानियों का संकलन 'राजस्थानी बातां' के नाम से किया था।

उनकी यह भी इच्छा थी कि इसके बाद धर्म नीति आदि इतर विषयों से सम्बन्ध रखने वाली कहानियों का संकलन भी यथावसर उपस्थित किया जाय। किन्तु विधि-विधान के वैचित्र्य से उनके अरमान मन के मन में ही रहकर उनको काम को अधूरा छोड़कर वे सदा के लिए उस प्रदेश को चले गये जहाँ से लौटकर कोई नहीं आता। स्वर्गीय पारीकजी की यह भी अन्यतम इच्छा थी कि राजस्थानी भाषा की कुछ कहानियाँ हिन्दी अनुवाद-सहित हिन्दी जगत् के सम्मुख रखी जायें। प्रस्तुत संकलन उसी दिशा में कार्य को आगे बढ़ाने के लिए एक प्रयास है।

इन कहानियों में आधुनिक रुचि के समालोचक को कथा का यह विकसित रूप देखने को न मिलेगा जो आजकल की कहानियों में पाया जाता है। यदि राजस्थानी कहानियों में आधुनिक कहानियों की भाँति जीवन के अन्तस्तल को स्पर्श करने की क्षमता नहीं है तो उनमें बाह्य दृश्यों के चित्रण की सुन्दरता और कल्पना की स्वच्छन्द उड़ान अवश्य मिलती है। यदि उनमें आधुनिक पाठक चरित्र-चित्रण, संवेदना, कथोपकथन और कथा का उपन्यास नहीं पा सकता तो कम से कम प्राचीनता-प्रेमी पाठक के लिए उनमें मनोरंजन और रस की पर्याप्त सामग्री अवश्य है। एक अन्तर्मुखी है, दूसरी बहिर्मुखी। एक चिन्तनमय है, दूसरी हृदयमय। एक व्यक्तिगत अनुभूति की तीव्रता लिए हुए है, दूसरी में कल्पित व्यवहार।

राजस्थानी कहानियाँ किसी व्यक्ति-विशेष की लिखी हुई नहीं हैं। ऐसा मालूम पड़ता है मानो सम्पूर्ण समाज ही कहानी कहने वाला तथा सुनने वाला हो गया है। इस प्रकार की लोककथाओं में सम्पूर्ण समाज की मनोवृत्तियाँ एक साथ प्रतिबिम्बित हुई हैं। इनमें जनश्रुति के आधार पर चली आती हुई एक प्राचीन परम्परा का क्रमिक विकास मिलता है जो राजस्थान की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का परिचायक है। ये कहानियाँ घटना-प्रधान हैं। इन कहानियों में मनोरंजन की तो पूर्ण और प्रचुर सामग्री है किन्तु काव्योचित रस की कमी है।

फिर भी ये लोकगाथाएँ बहुत लोकप्रिय हैं और इनकी लोकप्रियता का मुख्य कारण बनावट कम ही है। लोकप्रियता और कला का परस्पर मेल भी नहीं है, क्योंकि कलात्मक कृतियाँ बहुत कम लोकप्रिय हुआ करती हैं।

इन राजस्थानी बातों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये लिखित कहानियाँ नहीं हैं किन्तु मौखिक परम्परा के आधार पर चली आती हुई 'बातें' हैं। लिखित और कथित कहानी में बड़ा भारी अन्तर होता है। राजस्थानी बातों के पढ़ने पर यह अन्तर स्पष्ट प्रतीत होता है। अलिखित कहानी में शब्दों पर इतना संयम नहीं रखा जा सकता। परन्तु जब दाढ़ी पर हाथ फेरकर वृद्ध चारण "बर मजल्यां बर कूंचां" कहते हुए रसपूर्वक अपनी कहानी के प्रवाह को आगे बढ़ाता है उस समय श्रोता न जाने किस अनिर्वचनीय आनन्द में डूबा रहता है। राजस्थान की विभूति अपने अङ्क में समेटे हुए जब इन कहानियों के नन्हे-नन्हे वाक्य वृद्ध वक्ता की जिह्वा पर थिरकते हैं, उस समय उनकी बालक की-सी सरलता और भोलेपन पर श्रोता का मुग्ध होना स्वाभाविक ही है। इस प्रकार मनोरञ्जक वक्ता तथा मनोरञ्जक बात के अपूर्व सम्मिलन से आनन्द द्विगुणित हो जाता है।

विविधता भी राजस्थानी कहानियों की एक अनुपम विशेषता है। एक ओर उनमें जहाँ अरेबियन नाइट्स जैसी काल्पनिक कहानियाँ हैं वहाँ दूसरी ओर हितोपदेश तथा पंचतंत्र जैसी उपदेशात्मक कहानियों की भी कमी नहीं है। जहाँ उनमें हमें वैचित्र्यपूर्ण तिलस्माती कहानियाँ मिलती हैं, वहाँ जासूसी कहानियों के ढंग की कहानियों की भी कमी नहीं है। कहीं कहीं अपरिष्कृत रूप में राजस्थानी कहानियों में आधुनिक मनोवैज्ञानिक तथा यथार्थ और आदर्श-प्रधान कहानियों के बीज मिल सकते हैं। किन्तु अधिकतर कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें अलौकिक तत्व और कथानक के अन्तर्गत कथानक पाया जाता है। एक ओर जहाँ कुछ कहानियाँ इतनी लम्बी हैं कि शायद एक रात में समाप्त भी न हों तो दूसरी ओर कुछ कहानियाँ इतनी

छोटी है कि १०-१२ मिनट में ही आसानी से समाप्त की जा सकती है। इन कहानियों में हास्य, भयानक, अद्भुत और आदि सभी रस मिलते हैं। इन कहानियों ने जड़ और चेतन, चल और अचल, पशु, पक्षी और मनुष्य सभी को अपना विषय बनाया है।

किन्तु रूप-चित्रण और रस-वर्णन इन कहानियों में जिस मधुर्यता और विलक्षणता के साथ किया गया है वह प्रशंसनीय है। उक्तियों पर उक्तियाँ उपमाओं पर उपमाओं की झड़ी और बात का रस देखते ही बनता है। उदाहरण—

"सो पनां किण मोवरी सीसरी सोमा नारेल परवाण निलाड बोखिरी आँख चंद नासिका आर्यो दीपकरी लोह। कंठ मयो कोमल परसावे जिको पीवतां पाणी निजर आवे। भोगल्यां मु गजम्यां सूं तुले नाहि। ओखे गुलाब रो फूल। हास मंद मानो दाँते कला उद्योत चंद......"

इन बातों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें अनेक पुनरावृत्तियाँ होने पर भी एकतानता का सूत्र शायद ही किसी कहानी में खण्डित हो। ज्यों-ज्यों कहानी का प्रवाह आगे बढ़ता है त्यों-त्यों श्रोता की उत्सुकता भी बढ़ती जाती है। कथित कहानी में इस प्रकार के औत्सुक्य का अभाव होने पर कहानी का सारा मजा ही किरकिरा हो जाता है। कहानी में यह औत्सुक्य-वृत्ति आधुनिक समालोचकों के मतानुसार अत्यन्त आवश्यक है। यदि कहानी का अंत पहले ही मालूम हो जाय तो कहानी के रसास्वादन में व्याघात उपस्थित हुए बिना नहीं रहेगा।

प्रभाव की एकता कहानी-कला की सबसे बड़ी विशेषता है। यदि किसी कहानी में इस एकता का अभाव हो तो उसे कहानी की संज्ञा ही नहीं मिल सकेगी। राजस्थानी कहानियों में भी यह ऐक्य प्रायः सर्वत्र पाया जाता है। कभी-कभी ऐसा जान पड़ता है कि वक्ता ने कहानी के सूत्र को छोड़कर कहानी कहना प्रारम्भ किया फिर उस सूत्र को इस प्रकार घुमाता है जिससे श्रोता को कभी-कभी यह भ्रम होने

सकता है कि पाठक अपने विषय से बाहर जा रहा है किन्तु जब कहानी समाप्त होने को होती है तो कथा-सूत्र इस प्रकार घुमा दिया जाता है के पाठक कहानी की एक-सूत्रता को देखकर एक आश्चर्यमयी प्रसन्नता में मग्न हो जाता है और पूर्वापर घटनाओं का सम्बन्ध सहज सभी भांति समझ लेता है।

प्रस्तुत पुस्तक में राजस्थानी कथा-साहित्य की चार विभिन्न-विषयक प्रतिनिधि-कहानियों का सानुवाद संकलन है। इन कहानियों में सर्वप्रथम कहानी 'चौबोली' कथा की दृष्टि से ही नहीं, अपितु कला की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है और उसी के नाम पर पुस्तक का नामकरण किया गया है। इसके अतिरिक्त 'चौबोली' पुस्तक में चार कहानियां संगृहीत हैं तथा प्रत्येक कहानी में चार अन्तर्गत कहानियां हैं, इसलिए केवल चौबोली ही चौबोली नहीं है किन्तु चारों कहानियां चौबोली हैं। शीर्षक को समझना इसलिए भी आवश्यक था कि कहीं पाठक 'चौबोली' को अमीर खुसरो वाले 'चोचले' न समझ बैठें।

साहित्य के इतिहास की दृष्टि से भी इन कहानियों का मूल्य कम नहीं है। आधुनिक साहित्यिकों का ध्यान भी राजस्थान के कथा-साहित्य की ओर आकर्षित हुआ है। श्री ब्रजमोहन गुप्त एम० ए० तथा राजस्थानी एवं जैन साहित्य के अन्वेषण-अनुसंधान में विशेष अभिरुचि रखने वाले श्री अगरचन्दजी नाहटा ने साहित्य के इस उपेक्षित अङ्ग की पूर्ति करने पर जोर दिया है। हिन्दी में प्राचीन गद्य-साहित्य का प्राय अभाव है, किन्तु राजस्थानी का गद्य-साहित्य बहुत प्रचुर है जिसके प्रकाश में आने पर हिन्दी गद्य-साहित्य की विकास-परम्परा का बहुत कुछ निश्चित अनु-मान लगाया जा सकता है। बातों और ख्यातों के रूप में राजस्थानी का विपुल गद्य-वाङ्मय अब भी सुरक्षित है। स्वामी नरोत्तमदासजी के शब्दों में 'इन सबका संग्रह किया जाए तो न जाने कितने कथासरित्सागर' और 'सहस्ररजनीचरित्र' तैयार हो जावें।' यह बहुमूल्य मौखिक साहित्य की श्रुति-परम्परा के कारण ही भाट-चारणों की कृपा से अब तक जीवित है,

कहीं काल के गर्त में विलीन न हो जाय इसलिए इसके प्रकाशन की नितान्त आवश्यकता प्रतीत होती है।

इसके अतिरिक्त इस प्रकार के साहित्य की उपयोगिता एक दूसरी दृष्टि से भी है। इन वार्तों और ख्यातों में हमें राजस्थानी जीवन का प्रतिबिम्ब भी देखने को मिलता है। यदि केवल 'बीजोजी' की वार महाणियों पर ही दृष्टिपात करें तो उसमें भी हमें शकुनवाद, डाकिया-जादू, मन्त्र पालन आर्यलक्षणा अफीम-सेवन, भूत-प्रेतादि-संबंधि अलौकिक बातों में विश्वास सत्यवादिता और धर्म आदि के अनेक उदाहरण यथास्थान ही उपलब्ध हो सकते हैं; किन्तु इस सम्बन्ध में हमें यह न भूलना चाहिए कि इनमें से अधिकांश कहानियों का केन्द्र राजपूती जीवन रहा है और इसके मध्य उनके सामाजिक व्यवहार और वाद हैं। फिर भी अन्वेषक को इनमें तत्कालीन सभ्यता और संस्कृति के अनुसंधान के लिए काफी मसाला मिल सकता है।

श्रीयुत वियोगी हरिजी ने 'बीजोजी' पढ़कर हमें कुछ आवश्यक सुझाव भी दिये एतदर्थ हम उनके अनुगृहीत हैं। हिन्दी-साहित्य के प्रसिद्ध ग्रन्थ-लेखक एवं उपन्यासकार श्री जैनेन्द्रजी ने इस पुस्तक की भूमिका लिखकर [illegible] उपकृत किया है, जिसके लिए उन्हें अनेक धन्यवाद देकर भी हम अपनी कृतज्ञता को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं कर सकते।

कन्हैयालाल सहल
पद्मधर गौड़ 'विशारद'

चौबोली

॥ अथ राणी चौबोली री वात ॥

उजेणी नगरी राजा भोज राज्य करै। नव बारी नगरी। चौरासी चोहटा, छतीस पोळी। च्यार वरण रहै। छतीस पवन जाति लोक बसै। कोड़ीधज व्यापारी रहै। पट दरसणी रहै। तिण नगरी रै विषै राजा भोज राज्य करै। छतीस राज कुळी राजा री सेवा करै। तिण राजा रै च्यारि मित्र। भागीयो वेताळ। कपड़ियो जुवारी। माणिकदे मनुवांण। खापरो चोर। सु राजा भोज रै घरे आया। घणा आदर किया। अनेक भांति री भक्ति हुई। घणौ सनमान दे नै कह्यौ-पनरहवीं विद्या मोनु जिण भांत आवै तिम करौ। ताहरां च्यारां ही कह्यौ-जु शारदा देवी रे जाइ नै पूजा आह्वान करि देवी आराधिस्यां। तिण

उज्जैन नगरी में राजा भोज राज्य करता था। वह नौ दरवाजों वाली नगरी थी। चौरासी चौराहे (और) छत्तीस पौलें थीं। उसमें चारों वर्ण रहते थे। सब प्रकार के छत्तीसों जाति के लोग (वहां) रहते थे। करोड़पति व्यापारी रहते थे। षड्दर्शनी (पंडित) रहते थे। उस नगर में राजा भोज राज्य करता था। छत्तीसों राजघराने के लोग राजा की सेवा करते थे। उस राजा के चार मित्र थे। भागिया वेताल। कपड़िया जुआरी। माणिकदे मन्वाण। खापरा चोर। वे राजा भोज के घर आये। राजा ने उनकी बहुत इज्जत की। अनेक प्रकार से उनकी आवभगत हुई। बहुत सम्मान देकर राजा ने कहा कि पन्द्रहवीं विद्या मुझे जिस भांति आवे वैसा करो। इस पर चारों ने ही कहा कि शारदा देवी के यहां जाकर पूजा-आवाहन करके हम देवी की आराधना

हेक बोल माहाराज करणो छे । पण राणीजी म्हर थां गाढ़ो सुख है । कोई बात पूछे तो नटो मती । म्हर नटो तो म्हो मती । अरु बात नटि ने कहीयो तो थारो मरण हुसी ।

राजा कह्यो—म्हे क्यों ही नु कहिस्यां । एक दिन राजा आरोगतो हुतो और रांणी जी मांख्यां उडावता हुता । गढ गरी री मोगसो थी, तिरदे एक कीड़ी चावल ले ने हाली हुती तिरदे पीछी माह खोसण नु मू थी । ताहरां कीड़ी बोली—भो भागा अस्तू खोसे । ए चावल राजा भोजरी थाली माहे घणाहि पडिया छे । तू और ले आव । ताहरां कीड़ी कही—म्हारे पाहुणा आया छे ते आर्पण पे मोसु । इसी बात सांभलि ने राजा भोज हंसीयो । राजा जीवमात्र सरब जाणतो । ताहरां रांणी पूछीयो—तु महाराज कुण वास्ते हंसीया । राजा नटीयो । रांणीजी

करिये । परन्तु महाराज ! एक बात तुमको करनी है । चूंकि रानीजी और तुम में अमिट प्रेम है, इसलिये यदि यह कोई बात पूछे तो इन्कार मत करना और यदि इन्कार कर दो तो कहना मत । और यदि बात को इन्कार करने पर कहोगे तो तुम्हारा मरण होगा ।

राजा ने कहा कि हम क्यों कहेंगे । एक दिन राजा भोजन कर रहा था और रानीजी मक्खियां उड़ा रही थीं । पराया भोजन था । वहाँ एक चींटी चावल लेकर चली । उसी समय दूसरी चींटी आकर छीनने के लिए चिपट गई । तब चींटी ने कहा—मेरे पास से क्यों छीनती है ? ये चावल राजा भोज की थाली में बहुत पड़े हैं । तू और ले जा । इस पर चींटी ने कहा—हमारे मेहमान आये हैं, मुझ से मांगे हैं । ऐसी बात सुनकर राजा भोज हँसा । राजा सब जीवों की भाषा जानता था । तब रानी ने पूछा कि महाराज, आप किस कारण

बहुत गाढ़ करि पूछण लागी । तु महाराज, मोनु हंसीया रो विरतंत कहीजै। राजा मन में विचारीयो—कहीयां तो कहण रो नहीं । कहीयें तो मरण हुवे । राणी जीवण फाड़े नहीं । तारां राजा कह्यो—म्हां गंगा जी रे तट कहीससी । राजा चालीयो।

गंगाजी रे कांठे सिहूकर सहर हुवो। बाहिर जाइ उतरीया उठा हु कोस पांचे परे नदी रे कांठे जंगल माहे डेरा हुवा। नदी री डूंगा देख कर जंगल पधारीया । एकत पधारीया। आगे कूवो छे। कूवे माहे बबूल रो बेल बहुत फली छे। कूवे कांठे चवड़ चरे छे। एक बकरी बाकरे नु कहे छे—कूवे मांहि बबूर ले दे तो तोनु वरू। तारां बाकरो बोलीयो—म्हारी बकल राजा भोज सिरी नहीं छे। बाहर रे कहीयें मरण हु

हूं ? राजा ने इन्कार किया । रानी बहुत आग्रह करके पूछने लगी कि महाराज मुझे हंसने का वृत्तान्त कहो । राजा ने मन में विचार किया—इन्कार कर दिया तो अब मैं कहने का नहीं । यदि कह दिया तो मरना होगा । रानी मानती नहीं थी । तब राजा ने कहा कि गंगाजी के तट पर बात कहूंगा । राजा चला ।

गंगाजी के समीप सिंहकर शहर था—उसके बाहर जाकर राजा उतरा । वहां से पांच कोस की दूरी पर एक नदी के समीप जंगल में डेरा डाला गया । नदी की शोभा देखकर राजा जंगल में गया जहां एकान्त था । आगे एक कुआ था । कुए के अन्दर बबूल की बेल के बहुत से फल लगे हुए थे । कुए के पास भेड़-बकरियों का झुण्ड चर रहा था । एक बकरी बकरे को कह रही थी—कुए वाला बबूल यदि लेकर दे तो मैं तुमसे शादी करूं । इस पर बकरे ने कहा—मेरी बुद्धि राजा भोज जैसी

आग सै । सिर सावन री ब्याह परणो । तिका बात सांभळि नै राजा विचारीयो सु हू चौवह विद्या री निधान सु म्हारी मति गमारै कही । राजा पाछो डेरै आयो । राणी आय हजूर बैठी छै । राणी कहै—रावळे गंगा री जात्रा कांइ करणी छै नहीं । रावळे विवाह करणो छै । राजा कहै—राणीजी, म्हारे विवाह कोई करणो छै नहीं । महाराज विवाह अवस्य करिस्यो । बीमाई करो तो चौबोली परणीजिस्यो । ज्यु हूं ई समझु खोड आई । राजा जाणीयो, राणी म्हारे कथन नहीं । ताहरां घोड़ो मंगाइ तोसदान मुहरां भरि सुवे बटक पकड़ी चढ़ि चालीयो । आवतां आवतां देखै तो असू एक पाहाड़ मांहे राक्षस राक्षसणी रै गोडै माथो दे सूतो छै ।।

नहीं है जो स्त्री के कहने पर मरने जा रहा है । "सिर सावन तो ब्याह परने ।" यह बात सुनकर राजा ने विचार किया कि मैं चौदह विद्या-निधान और मेरी बुद्धि का एक बकरे ने भेद प्रकट कर दिया (पोल खोल दी) । राजा लौट कर डेरे में आया । रानी आकर सामने बैठी । रानी ने कहा कि आपको गंगा की तीर्थ-यात्रा तो कुछ करनी है नहीं—आप तो (दूसरा) विवाह करेंगे । राजा ने कहा—रानीजी मुझे विवाह तो कोई करना है नहीं । रानी—महाराज ! विवाह अवश्य करेंगे । विवाह करें तो चौबोली से करिये कि जिससे मैं भी समझूँ कि खोट तो आई । राजा ने समझा—रानी मेरे कहने में नहीं । तब घोड़ा मँगा कर तोशदान मोहरों से भर कर चाबुक को थामा हुआ छोड़कर राजा अकेला निकल पड़ा । जाते-जाते क्या देखता है कि पहाड़ में एक राक्षस राक्षसी के घुटने पर मस्तक रखे हुए सोया हुआ है ।

केसरी का गाछो उकलो छे। नगर रा लाकड हेठे धुखे छे। राजा नगर री बास सु मन में विचारीयो—जे एथ कोई स्वर्णबंध राजा छे। के पवनबंध जोगी छे। तेरे नगर बसे छे। राजा भोज नगर री बास सु अथ आयो। राक्षसणी राजा नु देखि ने साडी रो पल्लो फेरियो। समस्या कीधो तू एथ क्यु आयो। थोनु राक्षस खासी। राक्षसणी सोवनमाखी राजा नुं करि ने जटा माहे राखीयो। राजा च्यारे ही धरम-भाई समरिया। आगीयो। बावडीयो। खापरो। माणिकदे। धरम-भाइ च्यारे ही कह्यो हुतो। राजा थोनु काई दोहरी परीया हुवे तेथ म्हानुं समरे। आइ हाजिर हुस्यां। राजा राक्षसणी री जटा माहे विमासे छे। म्हारी अष्ठन चूक सु गंगाजी रे कंठ

केसर का काढ़ा उबल रहा है। नगर की लकड़ियाँ नीचे जल रही हैं। राजा ने नगर की सुगन्धि से मन में विचार किया कि यहाँ कोई शक्तिशाली राजा है अथवा प्राणायामी योगी है जिससे नगर बस रहा है। राजा भोज नगर की सुगन्धि से यहाँ आया। राक्षसी ने राजा को देखकर साड़ी का आँचल (मुह पर) डाल लिया और प्रश्न किया कि तू यहाँ क्यों आया ? तुझे राक्षस खा जायगा। राक्षसी ने राजा को स्वर्णमक्खी बना कर जटा के अन्दर रख लिया। और राजा ने अपने चारों धर्म-भाइयों—आगिया, बावड़िया खापरा और माणिकदे को स्मरण किया। चारों ही धर्म-भाइयों ने कहा था कि राजा जब भी तुम्हारे ऊपर आपत्तिकाल उपस्थित हो, तभी हमें स्मरण कर लेना—आकर हाजिर हो जायेंगे। राजा राक्षसी की जटा में विचार-विमर्श कर रहा है—मैंने कितनी भूल की कि गंगाजी

मरण हुवे इण री मुगति आवंत । तेथी न गयो । हिवै म्हारा धरम-भाई हुंता जोक तु समरीस म्हु माखी हुवो नीसरीस । सु वदे च्यारे ही चोर कोई पातिसाह री चोरी गया हुंता ।

सु घणो ही माल ल्याया हुंता सु पापड़ी देवी री पूजा करे छै । ताहरां सबो ओळखीयो—राजा संकटे पड़ीयो । म्हानुं समरे छै । ताहरां घोड़े चढि चर ससीया । राक्षस हुतो तेथ आया छै । ताहरां आपन मांहे विचार मांडीयो—आपां काइ करिस्यां । ताहरां आपरो बोलीयो । मो कन्हे उपाय भलो छै । वरमारी खोपरी में काजळ पाड़ीयो छै । तिको काजळ दृग में पातिस्यां । नास्वी । पावठाही मूरछा गति हुवी । ताहरां राक्षसणी रै माथै सोवनमाखी रै रूप राजा हुतो सु काढि बारहो कीयो । ताहरां

के बाद मरता होता तो मुक्ति मिलती । वहाँ मैं नहीं गया । अब जो मेरे धर्म-भाई थे, उनको स्मरण करूँगा जिससे मक्खी की योनि से छुटकारा पाऊँ । वे चारों ही चोर किसी बादशाह के यहां चोरी करने गये थे ।

वो बहुत माल लाये थे । इसलिए बावड़ी देवी की पूजा कर रहे थे । उस समय उनको ज्ञान हुआ कि राजा पर विपत्ति पड़ी है और हमें स्मरण कर रहा है । तब घोड़े पर चढ़ कर चल पड़े । जहाँ राक्षस था वहाँ आये । तब उन्होंने आपस में विचार किया कि हमें क्या करना चाहिए । तब चारों ने कहा—मेरे पास अच्छा उपाय है । वैश्या की कपालमाली (खुपोरणी) में काजल बनाया हुआ (तैयार किया हुआ) है । यह काजल इसकी (आँखों में) डालेंगे । काजल डाला । डालते ही राक्षसी मूर्छित हो गई । तब राक्षसी के मस्तक पर जो स्वर्ण-मक्खी के रूप में राजा था उसको निकाल कर बाहर ले गये । तब उन लोगों ने राजा से

राजा नु पुछीयो—सु थां कासु विचार कीयो। म्हांसी थांनु घणी हुती। ताहरां राजा कहे—आ बात परमेश्वर री थाही हुई। रांणी म्हांनु बोलीया—सु चोबोली परणीया छु परणी चाहीजे। ताहरां उवे कहे राजा चोबोली री बात माहा कठिन छै। पिण थारो भाग बडो छै, सु उपाय सफरी करिस्यां। ताहरां भेला हुय ने पैंडे चालीया छै। मारगी लोपि नर चोबोली रै सहर पधारीया छे।

माळीरे घरे सफरी आइगा बागीचा माहे डेरो लीयो। माळण नु मोहरी बोधी। जीमण करायी। डेरे सरं आमतो कीयो। तद माळण नु पुछे छे—चौबोली नु बोलावण चावे छे सु किसी भांत बोलावे छे। जे रात्रि चोबोली न बोले तो

पूछा कि यह तुम्हें क्या सूझा? हमने तो तुम्हें पहले ही कहा था। तब राजा ने कहा—यह बात भगवान् की मर्जी से हुई है। रानी ने मुझसे कहा कि चौबोली से विवाह करो। इसलिए उससे विवाह करना चाहिए। तब उन्होंने कहा कि राजा! चौबोली की बात बड़ी कठिन है लेकिन तुम्हारा भाग्य बड़ा है, इसलिए भरसक उपाय करेंगे। तब वे इकट्ठे होकर रास्ते चल पड़े। रास्ता पार करके चौबोली के शहर में आये।

माली के घर आकर बगीचे में अच्छी-सी जगह डेरा डाला। मालिन को एक मोहर दी और उसने उनके भोजन की व्यवस्था कर दी तथा डेरे का पूरा जमघटा कर दिया। तब (राजा ने) मालिन से पूछा कि जो चौबोली से बुलवाने के लिए (मुख से शब्द निकलवाने के लिए) आते हैं, वे किस प्रकार बुलवाते हैं? (उसने उत्तर दिया)—यदि रात में

मरण हुवै इंण री मुगति आवंत। तठी न गयो। हिवै म्हारा धरम-भाई हुता तांह नुं समरीस ज्युं मारी हुवी नीसरीस। सु सवे च्यारे ही वीर कांई पातिसाह री चोरी गया हुंता।

ते घणो ही माल ल्यावता हुता सु चारणी देवी री पूजा करै छै। ताहरां सगां जांणीयौ—राजा आंकडै पडीयो। म्हानु समरै छै। ताहरां घोडै चढि कर आवीया। राजस हुयी देख आया छै। ताहरां आपस मांहि विचार कीयौ—आपां कासूं करिस्यां। ताहरां चारणी बोलीयो। मो कन्है उपाव भली छै। वेस्यारी खोपरी में काजल पाडीयो छै। तिको काजल द्रग में घातिस्यां। नास्यो। पातसाही मूरछा गति हुवी। ताहरां राजसणी रै माथै सोवनमाखी रै रूप राजा हुतो सु आर्य उडी कीयौ। ताहरां

के पास मरण होता तो मुक्ति मिलती। वहाँ मैं नहीं गया। अब जो मेरे धर्म-भाई थे, उनको स्मरण करूं था जिससे जल्दी ही योनि से छुटकारा पाऊं। वे चारों ही वीर किसी बादशाह के यहाँ चोरी करने गये थे।

वे बहुत माल लाये थे। इसलिए चारणी देवी की पूजा कर रहे थे। उस समय उनको ज्ञात हुआ कि राजा पर विपत्ति पड़ी है और हमें स्मरण कर रहा है। तब घोड़े पर चढ़ कर चल पड़े। जहाँ राक्षस था वहाँ आये। तब उन्होंने आपस में विचार किया कि हमें क्या करना चाहिए। तब चारणे ने कहा—मेरे पास अच्छा उपाय है। वेश्या की कपालखोपड़ी (खुपरी) में काजल पाड़ा हुआ (तैयार किया हुआ) है। यह काजल इसकी (आँखों में) डालेंगे। काजल डाला। डालते ही राक्षसी मूर्छित हो गई। तब राक्षसी के मस्तक पर जो स्वर्ण-मक्खी के रूप में राजा था उसको निशान कर अलग ले गये। तब उन लोगों ने राजा के

राजा नुं पूछीयो—थुं थां काहूं विचार कीयो। म्हांती थांनुं कह्यो हुतो। तारां राजा कहै—आ वात परमेसर री चाही हुई। रांणी म्हानुं बोलीया—थुं चौबोली परणीया सुं परणी चाहीजे। तारां उणे कहै राजा चौबोली री वात माहा कठिन छै। पिण थारो भाग बडो छै, सु उपाय सखरो करिस्यां। तारां भेला हुइ नै पैंडै चालीया छै। परभी लोपि नै चौबोली रै सहर पधारीया छै।

मालीरै घरे सखरी जायगा बागीचा माहे डेरो कीयो। मालण नु मोहरी दीधी। जीमण करायो। डेरै सरंजाम कीयो। तद मालण नु पुछै छै—चौबोली नु बोलावण आवै छै सु किसी भांत बोलावै छै। जे राति चौबोली न बोलै तौ

पूछा कि यह तुम्हें क्या सूझा? हमने तो तुम्हें पहले ही कहा था। तब राजा ने कहा—यह बात भगवान की मर्जी से हुई है। रानी ने मुझसे कहा कि चौबोली से विवाह करो। इसलिए उससे विवाह करना चाहिए। तब उन्होंने कहा कि राजा! चौबोली की बात बड़ी कठिन है लेकिन तुम्हारा भाग्य बड़ा है, इसलिए भरसक उपाय करेंगे। तब वे इकट्ठे होकर रास्ते चल पड़े। रास्ता पार करके चौबोली के शहर में आये।

माली के घर आकर बगीचे में अच्छी-सी जगह डेरा डाला। मालिन को एक मोहर दी और उसने उनके भोजन की व्यवस्था कर दी तथा डेरे का पूरा प्रबन्ध कर दिया। तब (राजा ने) मालिन से पूछा कि जो चौबोली से बुलवाने के लिए (मुख से शब्द निकलवाने के लिए) आते हैं, वे किस प्रकार बुलवाते हैं? (उसने उत्तर दिया)—यदि रात में

परभात हुवे भागो पाणी ढोवावे छे। ते सारु पेड़ बिचारि आइ बैसिया। ते ऊपर राजा भोज। भागीयो बैताल। कवडीयो जुआरी। खापरो चोर। मांखियके मरपांणा पांच ही बैसि बिचार कीयो—आपां किस्यो भांति बोलावस्यां। सु कूड सुहावसी नहीं। ताहरां बोलसी—ऐ पांचे ही ठाकुर समस्त पाणी सरीरा हुइ नै दरबार नुं हालीया। ताहरां च्यारे ही बोलीया—तू तो राजा जाइसी तारे पैसीस ताहरां म्हारो जोर कोई चालिसी नहीं। पिण म्हे च्यां वीर काया मांझ करि चिहू ठिकाणैं आइ बैसिस्यां ताहरां थे बाति कहि नै म्हानु पुछीया म्हे कूड बोलिस्यां ताहरां रांणी बोलसी। ताहरां खापरो चोर हार मैं आइ बैठो। कवडीयो जुआरी डोरीये मे आइ बैठो।

चोबोली न बोली तो प्रभात होने पर यह नौकर की तरह पानी भर लाती है। सारी बात का यह विचार करके वे आकर बैठ गये। इस पर राजा भोज, भागिया बैताल, कवड़िया जुआरी, खापरा चोर, माखियों के मर जाए—इन पाँचों ने बैठ कर विचार किया कि इसे किस प्रकार बुलवाना चाहिए। झूठ अच्छी लगेगी नहीं। इससे (झूठ का आश्रय लेने से) बोलेगी। ये पाँचों ही शरीर पञ्चभूत-जैसे आदि से निवृत्त होकर दरबार की तरफ चले। तब चारों ने कहा कि राजा तुम तो जाकर [चोबोली के] के पास बैठ जाओगे और फिर हमारा कोई वश चलेगा नहीं परन्तु हम हैं वीर। शरीर को धारण करके चार स्थानों पर जा बैठेंगे। तब तुम बात कहकर हमसे पूछना—हम झूठ बोलेंगे तब रानी बोलेगी। तब खापरा चोर [रानी के] हार में जा बैठा। कवड़िया जुआरी डोर पर जा बैठा।

माणिकदे मदनाणा मारी ऊपर आइ बैठो। भागीयो बैताल दीवै आइ बैठो। ए च्यारे वीर माळी रो रूप करि चिहुं ठिकाणे जाइ बैठा। राजा भोज आइ दरबार ऊभो रह्यो। ताहरां आगे दरबार माहे ठाकुर उमराव ऊभा हुता सु राजा नु पूछण लागा— राजा, चौबोली नु बोलाविस्यो? राजा बोल्यो—मनसा छै, बोला विस्यां। ताहरां सवे ठाकुर बोलीया आगला राजा बारह बरस हुवा पाणी भरतां। जे राणि न बोली तो परभाति थेइ वसां भेला हुस्यो। तद राजा बोलीयो—म्हारे नु वसां पांणी भरणो लिख्यो छै तो म्हेई वसां भेला हुस्यो। पिण इकरसां इणनु बोलाविस्यां। ताहरां मांहि गिलमां बिछायां। ऊपर चादरा बिछाया। ताहरां राजा नु ले गया। आगे चीक तांणी हुती नै बाहिर राजा नु

माणिकदे मदनाणा मारी (बर्तन-विशेष) पर आ बैठा। भागिया बैताल दीपक पर आ बैठा। ये चारों वीर माली का रूप बनाकर चारों स्थानों पर जा बैठे। राजा भोज दरबार में आकर खड़ा हुआ। तब दरबार के अन्दर जो ठाकुर उमराव खड़े थे, वे राजा से पूछने लगे—क्या राजा चौबोली को बुलवाओगे? राजा ने कहा—इच्छा तो है, बुलवाऊंगा। तब वे ठाकुर कहने लगे कि अगले राजाओं को ही पानी भरते बारह वर्ष हो गए। जो राजकन्या चौबोली न बोली तो प्रभात होने ही तुम भी उनमें शामिल हो जाओगे। तब राजा ने कहा—मेरे भाग्य में भी यदि उसी तरह पानी भरना लिखा है तो मैं भी उनमें शामिल हो जाऊंगा। परन्तु एक बार इसे बुलवाऊंगा अवश्य। तब अन्दर कालीन बिछाये गये। उन पर चद्दर बिछाई गई। वे राजा को वहाँ ले गये। आगे परदा तना हुआ था। उसके बाहर राजा को बिठाया। भीतर उसी चौबोली बैठी

पैसारियी। भीतर राणी चोबोली बैठी छै। बीजो लोक दासी खवास सरप पहुचाया। राजा अरु राणी बीच मील दीयां महलां मांहि बैठा छै। च्यारे बीर थिकु ठिकाणे माखी रूप बैठा छै।

[इम करता राजा भोज चोलीयो जु महलरी पणीयाली बोले नहीं च्यार पहर राति किसी भांति वितीत हुसी। ते ऊपर रूप कीयो कुमारी दोझीये ऊपर माखी रूप बैठी हुती सु बोलीयो—हे राजा, सुणि। पहिली तो पाहाड मैं काठ हुतो सु सुथारै नै सुथार छोलीयो घडीयो। आडे ठोरै बांधीयो। नवार सु पणीयो ऊपरि साढ़ा तीन मणारी पेटी चाबाली तपस्या करै। बात तो कहि सगु नहीं। जु तुं बात कहै तो हुंकारो घु।] राजा कहे साबास रे ढोलीया साबास। हुंकारो देवे तो वो सारीखो कासु छै।

थी। अन्य सब लोग दासी, दाई आदि बाहिर चले गए। राजा और रानी बीच में परदा किये हुए महल के अन्दर बैठे थे। चारों बीर चारों स्थानों पर मक्खी के रूप में बैठे।

इस प्रकार बैठे हुए राजा भोज ने कहा कि महल की मालकिन बोलती नहीं—रात के चार पहर किस तरह कटेंगे? इस पर कपड़िये पुजारी ने जो कि मंच पर मक्खी के रूप में बैठा था कहा—हे राजा सुनो—पहले तो पहाड़ पर मैं जो काठ था, उसको सुथारकर बढ़ई ने मंच बनाया और उसको ठोंक-ठाक कर ठीक किया फिर निवाड़ से बुना। इस मंच पर साढ़े तीन मन वजन वाली चौबोली तपस्या कर रही है। इसलिए बात तो मैं कह नहीं सकता जो तुम बात कहो तो मैं हुंकार देता चलूं। राजा ने कहा—शाबाश रे मंच शाबाश। यदि हुंकार देता रहे तो तुझ-जैसा और कौन? तब राजा भोज बात कहता है-एक

ताहराँ राजा भोज बात कहै छै। एक हुवो ब्राह्मण रो बेटो। एक हुवो सिलावटे रो बेटो। एक हुवो सूजी रो बेटो। एक हुवो सुनार रो बेटो। याँ च्यारे ही मित्राचारी थी सु भेला हुय देसावर नु हालीया। सातवाँ आठवाँ पहे उद्यान वन बिये आथुणा हुवो। ताहराँ च्यारे बोलीया–रोही रो समीयो छै। पुहरै पुहरै सावचेत रहणो। पहले पहर सिलावटे रो बेटो बैठो ताहराँ सिलावटे मन मे बिचारीयो। निकम्मौ तुँ रात्रि कटे नही कोई आयत कीजै। तब एक पत्थर दीठो।

[ताहराँ पूतली निपूँ ली। तितरै पहर वितीत हुवो। ताहराँ सूजी नु जगायो। ताहराँ सूजी पूतली देखि बिचारीयो–आधी घड़ी। ताहराँ सूजी कपड़ा सीवि पहिराया। इतरै दोय पहर वितीत हुवा। ताहिराँ सोनी नु जगायो। सोनी पूतली देखि अर गहणा

था ब्राह्मण का लड़का। एक था कारीगर का लड़का। एक था दर्जी का लड़का। एक था सुनार का लड़का। इन चारों में मित्राचार था इसलिए वे इकट्ठे होकर परदेश को चले। एक वनोद्यान में पहुँचते पहुँचते सूर्यास्त हुआ। तब चारों कहने लगे—जंगल का समय है, पहरे पहरे से सावधान रहना चाहिए। पहले पहर कारीगर का लड़का बैठा तब कारीगर ने मन में विचार किया। निकम्मे बैठे रात कटेगी नहीं कोई समय बिताने का उपाय करें। तब उसे एक पत्थर दिखाई दिया।

उस पत्थर की उसने पुतली बनाई। इतने में एक पहर बीत गया तब दर्जी को जगाया। तब दर्जी ने पुतली को देखकर सोचा कि आधी गढ़ी हुई थी। इस पर दर्जी ने कपड़े सीकर पहना दिये। इतने में दो पहर बीत गये। तब सुनार को जगाया। सुनार ने पुतली को देख और गहने गढ़ कर पहना दिये।

घडि पहिराया । तितरे तीजो पोहर वितीत हुवो । ताहरां ब्राह्मण नुं जगायो । ब्राह्मण पूतली देखि नै मन मैं विचारीयो । म्हारा साथीये पूतली तैयार कीवी । हिवै श्री परमेसर रो भजन करूं ज्युं जीव पडै । ताहरां पूतली फिरण लागी । तद चवै च्यारे ही विरढीया । ऊ कहै म्हारी बायर, ऊ कहै म्हारी बायर । डोलीया, कहो कैरी बायर । ताहरां डोलियी बोलियी—कपडा पहिराया जै री बायर । ताहरां रांणी चौबोली डोलीये नुं लात मारी । डोलियो चूर चूर हुवो । ताहरां कहे—क्युं रे कुकाठ कपूत । तद कपडा बेटी नुं बाप पहिरावै । गहणा पहिराया तैरी बायर । ताहरां बडा नीसाण धुरीया । तो ऊपरि राजा भोज एक डंको दीयो । ताहरां चौबोली रा मावित बाहर लोक सब खुसी हुवा ।

इतने में तीसरा पहर बीत गया । तब ब्राह्मण को जगाया । ब्राह्मण ने पुतली को देखकर मन में सोचा कि मेरे साथियों ने पुतली को तैयार कर दिया । अब मैं श्री परमेश्वर का भजन करूँ जिससे यह सजीव हो जाय । तब पुतली चलने-फिरने लगी । तब वे चारों आपस में झगड़ने लगे । वह कहने लगा—मेरी स्त्री, वह कहने लगा—मेरी स्त्री । (राजा ने पूछा) हे मंच ! बताओ कि यह स्त्री किसकी है ? तब मंच ने उत्तर दिया कि जिसने कपड़े पहनाये उसकी स्त्री है । इस पर रानी चौबोली ने मंच के लात मारी, जिससे मंच चूर-चूर हो गया । और वह कहने लगी—अरे कुकाठ कपूत ! कपड़े तो बेटी को बाप पहनाता है, जिसने गहने पहनाये उसकी स्त्री है । वहाँ पर बड़ा-सा नगाड़ा पड़ा हुआ था । उस पर राजा भोज ने एक डंके की चोट मारी । तब चौबोली के माता-पिता और शहर के सब आदमी खुश हुए ।

आज कोई राजा बैठो थो सु देक वारीयां बोलाई । इतरै एक पहर वितीत हुवो । हिवै बीजै पैहर रै प्रथम माहि राजा मोब उच्चार बोलीयौ–तीन पहर रात रहै छै माछली बलीपाणी बोलै नहीं, रात किसी भाँति वितीत हुसी । ताहरां माछिकरे मसवाण मछरी मैं बैठो हुवो सु बोलीयौ–राजा सुणो, हूं मछरी मछी अर पाणी सुं भरी । हूं किसी भांति बोलूं । बात कहीस तो हुंकारो दे तो बो सांभळो बीजो क्युं नहीं । ताहरां मछरी हुंकारो दे छै । राजा बात कहै छै । एक हुवो ब्राह्मण तेरै बेटी एक कुमार हुती । सगावण उक च्यार ठोड़ चाली हुती । च्यारे ही ठौड़े सगाई करि एक साहो थापि दीयो । च्यारे ही जानां आय उतरीयां । ब्राह्मण नुं विचार उपनो । बेटी एक नै जानां च्यारि आयां । हिवै कासुं कीजसी । ताहरां बेटी बोली–बाप चिन्ता मति करो । हूं म्हारी बापै निवे

(सातों में छापा) आज कोई राजा आकर बैठ जिसने बोलोनी मे एक बार बुलवा लिया । इतने में एक पहर बीता । जब दूसरे पहर के प्रारम्भ में राजा आज ने कहा–तीन पहर तो रात बाकी है, मछली की मालकिन बोलती नहीं रात किस तरह कटेगी ? तब मालिकने मरघट की मछरी पर बैठ कर कहने लगा–हे राजा ! सुनो मैं मछरी हूं जो मछली हूं और पानी से भरी हुई हूं । मैं किस तरह बोलूं ? राजा ने कहा कि बात कहने पर तू हुंकारा देती रहे तो दूसरी-प्रतीकी दूसरी कोई नहीं । तब मछरी हुंकारा देने लगी और राजा बात कहने लगा । एक था ब्राह्मण । उसकी बड़ी लड़की कुमारी थी । उसका चार जगह नेगा था । चारों ही स्थानों पर सगाई करके मुहूर्त निश्चित कर दिया । चारों ही बरातें आ उतरीं । ब्राह्मण के मन में विचार हुआ—बेटी एक और बरातें चार आईं । अब क्या किया जायगा ? तब बेटी बोली—हे पिता चिन्ता म

बीस । ताहरां ब्राह्मण पिंडु नुं सीधा पांखी दीया । कह्यो—केस-रीया वागा पहरि नै तोरण आवो । गाजा च्यारि पंखण मंगाइ अरु चारोंगी ब्याह नै मांहे ब्राह्मण री बेटी आइ बैठी ।

अै च्यारे बीर तोरण आय ऊभा रह्या । ताहरां ब्राह्मणी बोली–मोसुं हथलेवो घोड़ै सुं आवो । ताहरां एक बीर घोड़े हुं ऊपरि हथलेवो जोड़ि बैठो । बीजा ऊभाहीज रह्या । ताहरां सबानुं आगनि लगाय दीधी । ताहरां बीर ऊपरि नै चाल्या अर फकीर हुवा । जातां आपरे घरे गया । ताहरां एक तो थी गंगाजी फूल ले गयो । बीजो देसावर चालतो रह्यो । तीजो मसाण सेवण बैठो । अेकने देसावर नुं जातीयो सु एके गरड़ै अतीत रो चेलो हुवो । ताहरां कंथा मेखली पाखि अरु भिख्या मांगि खावै । मेख्ली

ये । मैं उनके साथ उसमें बिवाह करूँगी । इस पर ब्राह्मण ने चारों के खाने-पीने का प्रबन्ध किया और कहा—केसरिया बाना पहन कर तोरण के लिए आओ । अग्नि की लकड़ी की चार वाड़ियां मंगा कर और चिता बना कर ब्राह्मण की लड़की उस पर जा बैठी ।

ये चारों दूल्हे तोरण के लिये आकर खड़े हो गये । तब ब्राह्मणी ने कहा–जो मुझसे पाणिग्रहण करे, वह आवे । तब एक दूल्हे ने घोड़े से उतर कर पाणिग्रहण किया । दूसरे खड़े ही रहे । तब उन्होंने अग्नि लगा दी । इसके बाद वीर दूल्हे उतर कर चल दिये और फकीर हो गये । वापस लौट गये । उन फकीरों में से एक तो थी अपनी फूल ले गया । दूसरा परदेश चला गया । तीसरा मसान सेने लगा । जो परदेश गया था वह एक वृद्ध संन्यासी का चेला हो गया । वह कंथा और मेखला डालकर भिक्षा माँगकर खाता । मेखला में एक लकड़ी थी जो पीठ के

माँहि एक लाकड़ी सु मंगरा लागो । तायरां गुरु नुं कह्यो—मेकलनी बीच लाकड़ी है सु काम देसी । तायरां गुरु बोलीयो-लाकड़ी घणुं गुणकारी है । काम री नहीं । तायरां कह्यो—बाबाजी, लाकड़ी माँहि गुण है सो कहो तो रखां, नहीं तो नाख देवां । कह्यो यो इस लाकड़ी को गुण है जो मु आदमी की हाडी मुं लगाइ तो आदमी मुवो जीवे । तायरां एक समइये लाकड़ी ले चलतो हुवो । मासे ३, ४ मसाण आयो । गंगा फूल परवाह्या गयो हुवो सुई आयो उवे लाकड़ी आँखि मसाण सुं लगाई ।—

सु बेउ उठि बैठा हुवा । तायरां तिहुं आपसीच झगड़ो हुवो । ऊ कहे—म्हारी नार, ऊ कहे—म्हारी नार । तायरां म्हारी बोली—मसाण सेवीयो तेरी नार । तायरां जोगीजी रीस करि अब चमकि म्हारी चोटी । मार कहण लागी—तेरी नार जो साथ

जलती थी । तब गुरु ने कहा—मेकला में जो लकड़ी है उससे काम है क्या ? तब गुरु ने कहा—लकड़ी बहुत गुणकारी है फेंकनी नहीं चाहिए । उसने कहा—बाबाजी लकड़ी में क्या गुण है, वे बतलाओ, तब तो रखें नहीं तो डाल दें । उसने कहा—इस लकड़ी में यह गुण है कि जो इसे आदमी की हड्डी के लगा दे तो मुर्दा भी उठे । तब वह एक समय लकड़ी लेकर चलता बना । तीन-चार महीने बाद मसान में आया । गंगा में फूल डालने जहाँ से ब्राह्मण गया था उस जगह आया । उस लकड़ी को उसने मसान के लगाई ।

तो वे दोनों उठ बैठे । तब उन चारों में आपस में झगड़ा हुआ । यह कहता—मेरी स्त्री वह कहता मेरी स्त्री । तब म्हारी बोली-जिसने मसान सेया था, उसकी स्त्री है । इस पर जोगीजी ने क्रोध करके तथा चमक कर म्हारी चोटी खींची और कहने लगी—उसकी स्त्री है जो साथ

वजीयो। ताहरां राजा नीसाण घाव दीयो। दोइ वेला चौबोली बोली। रात्रि पहर दोइ वितीत हुई। हिवे तीजी बात कहै छै। हिवे तीजै पहर के अमल राजा बोलीयो। दोइ पहर रात रहै छै। महलरी धणीयांणी बोलै नहीं रात्रि किसी भांति वितीत हुवै। ताहरां दीवे ऊपरा आगीयो बैताल बोलीयो—पहिलै लोइ री घडियो दीवी। मांहि घालीयो तेल। ईरी वाटी जगाई। बोल सगूं नहीं। साबास रे साबास दीवा। हूँ कारो वै तो साबास छै। ताहरां राजा मोज बात कहै छै। एक हुती राजारी कुंवरी। एक हुवो मुहते रो बेटो। एक हुवो ब्राह्मण रो बेटो। महते रो बेटो पणि विचित्र हुवो ब्राह्मण री बेटो मूरख रह्यो। ताहरां सर्व लोक ब्राह्मण नूं मूरिखो बोलावै। ताहरां राजा री बेटी नै मुंहते रै बेटै मतो कीयो—तु मोनें ले नीसरे तो हूं थारे साथे हालूं।

बजा था। तब राजा ने नगाड़े पर डंका लगाया। दो बार चौबोली बोली दो पहर रात व्यतीत हुई। अब तीसरी बात कहता है। अब तीसरे पहर के आरम्भ में राजा बोला—दो पहर रात रही है। महल की मालकिन बोलती नहीं। रात किस तरह कटेगी? तब दीपक के ऊपर बैठा हुआ आगिया बेताल कहने लगा—पहले लोह का दीपक गढ़ा गया। उसके अन्दर डाला गया तेल। कई भी बत्ती जलाई गई। इसलिए मैं बोल तो सकता नहीं। शाबाश रे शाबाश दीपक। यदि हुंकारा है तो तुम्हें शाबाश है। अब राजा मौज बात कहता है। एक थी राजकुमारी एक था मन्त्री का लड़का, एक था ब्राह्मण का लड़का। मन्त्री का लड़का पढ़-लिखकर होशियार हुआ। ब्राह्मण का लड़का मूर्ख रहा। सब लोग ब्राह्मण को मूर्ख कहकर बुलाते थे। तब राजा की लड़की और मन्त्री के लड़के ने सलाह की—यदि तू मुझे लेकर निकल चले तो मैं तुम्हारे साथ चलूँ।

वाहरां मुहते रै बेटै कह्यो—हु घरे जाइ तैयार हुइ आऊ छू। कुंवरी नूं कह्यो—थे राजारै पायगह रा घोड़ा २ जय विजय नाम छै सु ले मरदानो वागो पहर कटारी ले नै बाग में आवो। मूरिखै नूं मेल्हि समस्या करावियो। जिम म्हे पिण भरम ले आवां। वाहरां राजा री कुंवरी महल में गई। जाइ आगला कपड़ा उतारि मरदानगी कपड़ा पहरि मुहरां सूं तोसदान भर छोकरी १ ले नै पायगह गई। पायगह जाइ राति रै समइये जय-विजय घोड़ा छोड़ाया। घोड़े चढि बाग में आया। वाहरां कुंवरी मूरखो नु मेल्हीयो—जु मुहते रै बेटै नु कहे थु बेगो आवे। वाहरां मूरखो सामें हु दौड़तो आवतो। देवी सारदा साम्ही आई। वाहरां पूछीयो—तू कुण छै। वाहरां कह्यो—हूं देवी सारदा छूं। वाहरां मूरखो माथो ले सिर फोड़ण लाग्यो। हूं

तब मन्त्री के लड़के ने कहा—मैं घर जाकर तैयार होकर आता हूं। राजकुमारी ने कहा कि तुम राजा की घुड़साल से जय-विजय नाम के दो घोड़े हैं उनको लेकर, मर्दाना जामा पहन कर, ढाल-तलवार लेकर बाग में आ जाना। मूर्ख को भेजकर सूचना दिलवा देना ताकि मैं धर्म ले आऊं। तब राजकुमारी महल में गई। जाकर पहने हुए कपड़े उतारकर, मरदाने कपड़े पहनकर, मोहरों से तोसदान भरकर तथा एक छोकरी साथ लेकर घुड़साल में गई। घुड़साल में जाकर रात के समय जय-विजय घोड़े खूंटे से खोल लिये। घोड़े पर चढ़कर बाग में आई। तब राजकुमारी ने मूर्ख को भेजा कि मन्त्री के बेटे को कहो कि वह जल्दी आवे। मूर्ख सामने से दौड़ता हुआ आ रहा था। देवी शारदा सामने आई। उसने पूछा—तू कौन है? उसने कहा—मैं देवी शारदा हूं। तब मूर्ख पत्थर लेकर अपना सिर फोड़ने लगा और कहने लगा—मैं ब्राह्मण का

परधान री बेटो अर मूरख । का विद्या दे का कोड़ी पाटीस । ताहरां सारदा बोली—मुंह मांडि । ताहरां मुंहडे मांहि राख मेली । ताहरां मूरिखे नूं तीन लोक सूझण लागा ।

मूरखो पाधरो मुंहते कन्हे गयो । मुंहते सूं कह्यो सारो उ कीयौ । मूरखे नूं कपड़ा पहराय, हथीयार बंधाय तासदान सूं हराय के मुंहते कह्यो—तूं ले जाइ । मूरखो राज री कुंवरी कन्हे आयो । कुंवरी जाणीयो—मुंहते री बेटो आयो । हेकै घोड़े मूरिखे चढ़ियो । हेकै घोड़ै कुंवरी चढ़ी । चढ़ि हालीया । आपणां आपणां प्रमाणि हूवो । ताहरां कुंवरी बोली—मुंहता [illegible] बेटा राति च्यार पहर मारिग चालीया पिण बोलीया क्यूं नहीं सु किसी संचीवाई । ताहरां मूरिखो बोलीयो—हूं मूरिख छू । मुंहते री बेटो मुंहते राखीयो । ताहरां राजा री कुंवरी सचींत हुई । जो पाछा जाउं

लड़का और मूर्ख । या तो विद्या दे या धन भी वापिस कर । तब सारदा ने कहा—मुंह खोल । तब मुंह के अन्दर थाल रख दी । तब मूर्ख त्रिलोकदर्शी हो गया ।

मूर्ख सीधा मन्त्री के पास गया और मन्त्री ने सारा वृत्तान्त कहा । मूर्ख को कपड़ा पहना कर, हथियार बंधाकर तोसदान में मोहरें भरकर मन्त्री ने कहा—तू ले जा । मूर्ख राजकुमारी के पास आया । राजकुमारी ने समझा—मन्त्री का लड़का आया है । एक घोड़े पर मूर्ख चढ़ा । एक घोड़े पर राजकुमारी चढ़ी । चढ़ कर दोनों चल दिये । चलते-चलते प्रातःकाल हुआ । तब राजकुमारी बोली—हे मन्त्री के लड़के ! रात में चार पहर रास्ते चले परन्तु तुम बोले क्यों नहीं ? ऐसी क्या चिन्ता है ? तब मूर्ख ने कहा—मैं मूर्ख हूं । मन्त्री के बेटे को मन्त्री ने रख लिया । इस पर राजकुमारी को चिन्ता हुई । यदि लौटें तो जगह नहीं । अब तो दूर

तौ ठीक नहीं । हिवै मूरखी गति । ताहरां मूरखौ बोलीयौ—श्री देवी सारदा मोनुं वर दीयौ हिवै हूं मूरिख नहीं । सचीव मथा हुवौ । इम करता पछै सहर मांह ठिकाणौ ले नै मांह रहीया । मास २ । ३ तिहां रह्या । तिवरै सहर बिचै एक तलाव खणीजतौ थौ । तिण मैं कीरतथंभ नीसरियौ । तिण ऊपर अक्षरां सु लिख्यौ बंचै नहीं । पछै दिन मूरिखौ आय नीसरीयौ सु मूरिखै नाम्यो बाँचीयो । तै नीचे सवा कोड़ धन पायौ । ताहरां राजा सुपाय धन कढायौ ।

ताहरां मूरखै रो नाम रतनपारखू दीयौ । रतन परखावण लोक आवै । खोटै खरै री खबरि करि दै । ताहरां कुंवरी कही तिण भाणा हुवी राजरी कराई । जे बाधीजै तौ आदमी हुवै । एक समै सूवटो करि बैसारियौ हुतौ सु अन्याव करतो जरीयौ । आय सहर रै राजा री कुंवरी पैमकंवरी नैं मिल्यो चंपेरी कला

का ही अनुरूप है । तब मूर्ख ने कहा कि देवी शारदा ने मुझे वरदान दिया है, अब मैं मूर्ख नहीं हूं, चिन्ता मत कर । इस प्रकार बात करते हुए वे एक शहर में जाकर एक स्थान लेकर ठहर गये । २ । ३ महीने वहां रहे । उस शहर में एक तालाब खुदवाया जा रहा था । उसमें कीर्ति-स्तम्भ निकला । उसके ऊपर एक ऐसा लेख था जिसे कोई नहीं पढ़ सका । एक दिन मूर्ख (जवर) वा निकला । मूर्ख ने लेख [illegible] लिया । उसके नीचे सवा करोड़ का धन बतलाया । तब राजा ने खुदवा कर धन निकलवा लिया ।

तब मूर्ख का नाम रत्नपारखी रखा गया । रत्न-परीक्षा करवाने के लिए लोग आने लगे । (मूर्ख) खोटे-खरे की जाँच कर देता । तब राजकुमारी ने किसी सिद्ध से एक ऐसी राखी बनवाई जिसके बाँधने से तो आदमी हो जाय वरना तोता रहे । एक समय उसने तोता करके उसे बिठा रखा था । वह कुछ विचार करके गया । जाकर शहर के राजा की लड़की पेमकंवरी से मिला जो चम्पे की कलियों में तुलती थी । इसलिए

सु हुलती। तेरो नाम पंचकली कहावती। तैरें मैहल आइ बैठो। पंचकली पकड़ि लीयो। चर ख्याल करता देखो तो राखड़ी छै। राखड़ी दीयें तो मनिख हुवो। राति मनखि करे। दिने सूवटो करें। इम करतां उपै सु पूछी। मू मालण फूल ल्याई कुंवरी-सु छुसे नहीं। मालण आय राजा सु वीनती की। कुंवरी फूलां सु ----। ताहरां राजा नगरनाइका तेड़ी। तूं कुंवरी रै मैहल में निगाह कर। ताहरां नगरनाइका आइ महल में छिप बैठी। ताहरां नगरनाइका चोर चोर कर पुकारी। ताहरां राजा रा लोक सही दौड़िया। ताहरां मूरिखो रजवारी कुंवरी रैं मैहल हेठैं साह री घर हुतो तैं मांहे कूद पड़ीया। साहनु कह्यो—हूं राजा री चोर किण विध उबरूं। साहूकार रैं घर कुमार बेटी सूती छी। भैलो सुवाडीयो। राजा रा आदमी आइ फिरि गया।

उसका नाम पंचकली था। उसके महल पर जाकर बैठ गया। पंचकली ने उसे पकड़ लिया और सम्हाल कर देखा तो राखी दिखाई दी। राखी ज्यों ही छुड़ाई वह मनुष्य हो गया। इस प्रकार रात को उसे मनुष्य बना दे और दिन में सूआ बना दे। इस प्रकार करते हुए वह पथभ्रष्ट हो गई। मालिन फूल लाई। किन्तु राजकुमारी बराबर न छुन पाती। तब मालिन ने जाकर राजा से प्रार्थना की कि राजकुमारी का मन न जाने फूलों से वंचित क्यों हो गया? तब राजा ने नगर की नायिका को बुला भेजा और कहा कि तू राजकुमारी के महल में जाकर बात का पता लगा। तब नगरनायिका जाकर महल में छिपकर बैठ गई। जब नगरनायिका 'चोर चोर' कहके पुकारी तब सब राजकर्मचारी दौड़े। सूआ राजकुमारी के महल के नीचे जो साहूकार का घर था उसमें कूद पड़ा। साहूकार से कहा—मैं राजा का चोर हूं। कैसे बचूं? साहूकार के वहाँ कुमार की लड़की सोयी हुई थी—जिसके साथ सूए को सुला दिया। राजा के आदमी आकर वापस चले गये।

चोर नास गयौ। प्रभाति साह री बेटी कहै—च्यारि पहर इणभेली सूती। सो तु चोढ़ीज परणाइ। ताहरां साह चोढ़ीज परणायो। एक दिन मूरखो बाजार गयौ हुतौ ताहरां पहिली की कुंवरी री डीकरी ओलखीयौ। ताहरां उवा कुंवरी तिण जग आइ। पदमणी तिण जाइ भेली हुइ। ताहरां तीने कहै—उवा कहै म्हारो भरतार, उवा कहै म्हारो भरतार। कहै दीवा! थौं कैरो भरतार? ताहरां दीवो कहै—जिका ले नीसरी तीयै रो भरतार। ताहरां चौबोली रीस करि दीवौ छोडि दीयौ। अर कहै माटी × जीयै रो जीयँ मारीजतौ राखियौ। साहरी बेटी रौ भरतार। ताहरां वले राजा भोज नीसाण घाव दीयौ। तन फेरा चौबोली बोली। तीन पहर वितीत हूवा। [चौथे पहर रै अमल राजा बोलीयो। पाछिली राति अर महल री धणियाणी बोलै नहीं। राति किस भांति वितीत

चोर भग गया। प्रातःकाल साहूकार की लड़की ने कहा कि चार पहर इसके साथ सोई थी इसलिए मेरी इसी से शादी कर दो। तब साहूकार ने इसी से शादी कर दी। एक दिन मूर्ख बाजार गया हुआ था। उस समय पहले वाली राजकुमारी की नौकरानी ने पहचान लिया। तब वह राजकुमारी वहाँ आई। पद्मनी भी वहाँ आकर मिल गई। तब तीनों आपस में झगड़ने लगीं—यह कहती मेरा पति यह कहती मेरा पति। हे दीपक! बतलाओ यह किसका पति है? तब दीपक ने कहा—मूर्ख जिसको लेकर निकला था उसका पति है। तब चौबोली ने क्रोध करके दीपक छोड़ दिया और कहने लगी कि जिसने मारे जाते को जीवनदान दिया, उस साहूकार की लड़की का यह पति है। तब फिर राजा भोज ने नगाड़े पर चोट मारी। तीन बार चौबोली बोल चुकी। तीन पहर व्यतीत हो गये। चौथे पहर के प्रारम्भ में राजा कहने लगा—

× माटी=पति

हुवै । ताहरां सामरो चोर हारमें बैठो हुवो सु बोलीयो । सुणिहो राजा भोज ! चौबोली रा भरतार ! हार इसी कह्यो । ताहरां चौबोली रीस करि सवा कोड री हार हुती सु तोड़ियो । छोड़ि नै बोली—क्युं रे बेसरम ! राजा भोज चौबोली कद परणी हुती ? ताहरां राजा भोज नीसाणों घाव दीयो ।

ताहरां धाय डावड़ियां खवासां सहेल्यां चौबोली आगे आइ ऊभ्यां रह्या । थारी बड़ो भाग सु थारो नेम ही रह्यो अर राजा भोज भरतार पायो । ताहरां चौबोली कहे—मोनुं रीस सु बोलाई । ताहरां बडारण समझाइ अर कह्यो—थारै भाग में हुतो सु वर आयो ताहरां राजा रै विवाह री साजत हुई । ताहरां च्यारे मीर खानी हुआ । राजा भोज आइ तोरण ढूको । आला नीला बांस करि

रात का अन्तिम पहर है और महल की मालकिन बोलती नहीं—रात किस तरह कटेगी ? तब सामरा चोर जो हार में बैठा था कहने लगा—सुनो हे राजा भोज ! चौबोली के भरतार ! हार ने ज्यों ही यों कहा त्यों ही चौबोली ने क्रोध करके सवा करोड़ का जो हार था उसे तोड़ डाला । तोड़कर बोली—क्यों रे बेशरम ! राजा भोज ने चौबोली से कब विवाह किया था ? तब राजा भोज ने नगाड़े पर डंके की चोट मारी ।

तब धाय दासियाँ नाजरें और सहेलियाँ चौबोली के आगे आकर खड़ी हो गई [और कहने लगी] कि तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम्हारा प्रण भी रह गया और राजा भोज जैसा पति भी मिल गया । तब चौबोली ने कहा कि मुझे क्रोध करवा कर बुलवा लिया । तब बड़ी बूढ़ियों ने समझाकर कहा—तुम्हारे भाग्य में जो वर लिखा था वह मिल गया । इसके बाद राजा के विवाह की तैयारी हुई और चारों ओर बधाई बजे । राजा भोज ने आकर तोरण मारा जल से भरे हुए नीलगुम्ब

राजा भोज चौबोली परणीयी । सवारै राजा जितरा पाणी भरता सरब छोड़ीयी । सायी आप आपरै देस बसायो । हाथी घोड़ा सिरपाला छोकरयां घणी दाइजी में घर हलाया । राजा भोज राणी चौबोली नु ले घर घरै आयो । घणो उछाह कर राणी भानमती बधाया । बोल बोलीया हुता सु राणी भानमती पासै राणी चौबोली आणी बैसाणी । बात चौबोली री संपूर्ण ।

इसपर राजा भोज ने चौबोली से विवाह किया । सबेरे राजा ने जितने पानी भरने वाले थे उन सबको छुड़ा दिया और कहा—जाओ अपने अपने देश को बसाओ । बहुत से हाथी घोड़े और दासियां तथा खूब दहेज देकर (राजा भोज को) विदा किया गया । राजा भोज रानी चौबोली को लेकर घर आया । रानी भानमती ने बड़े उत्साह के साथ बधाई दी । रानी भानमती ने ताना मारा था सो उसके पास राजा भोज ने चौबोली को लाकर बिठा दिया । चौबोली की कहानी समाप्त ।

खींवै बीजै री वात

खींवो—बीजो भाखरी भला दोन्हूं भला चोर। बीजो सोझित बसै। खींवो नाडोल बसै। मेहू रा मोसाप वधा। ऊ ऊण री नाम आवें। ऊ ऊण रो नाम आवें। पिण मिलीया कदे नहीं। एक समीये बीजै मन में आणीयो। जू नाडूल घणी आयगा अर नाडूल कदे चोरी न की। नाडूल चोरी करां तो भला। बरसा रितु छ। मेह उनमीया छै। इसा समीया मां बीजो नाडूल आयो छै। बीजौ नाडूल आइ नै दिन दोइ रह्यो। गली कूंची सरब दीठी। पछि नै भादवा अमावस री राते आई, आधा भादवा री आधी रात गई छ ताहरां घणी कांबल री गाती मारे टोपी माथे मेल्हि आधीयो पहिरि छुरो काढि कटि बांधि अर सहर मांहे

खींवा और बीजा की कहानी

खींवा और बीजा बड़े चोर थे और वे बड़ी लूटमार करते थे। बीजा सोझित में रहता था और खींवा नाडोल में। दोनों का साहस बहुत बढ़ा-चढ़ा था। उसने उसका नाम सुना था, उसने उसका नाम सुना था, पर मिले कभी नहीं थे। एक समय बीजे ने मन में विचार किया कि नाडोल बड़ी जगह है और नाडोल कभी चोरी भी नहीं। नाडोल में चोरी करें तो अच्छा रहे। वर्षा ऋतु है। बादल उमड़ रहे हैं। ऐसे समय बीजा नाडूल आया है। बीजा नाडूल आकर दो दिन रहा। सब गली कूंचे देखे। जब उसने देखा कि अमावस्या की रात आई, आधे भादवा की आधी रात गई तब काली कम्बल शरीर पर लपेटकर और टोपी सिर पर रखकर, आंगिया पहनकर, छुरी कमर में बांधकर शहर में चोरी के

चोरी नु चालीयो । सहर माहे फिरतां फिरतां किणही री घर मध्य मां नार्यो । तिसे समीयै सीवे रै पढ़े आइ मालीयी । घर माथो राति मिल गई छै । सीवो बग ठाम आइ ऊभो छै । मन मैं विचारै छै । जांणे छै । पण चोरीये सु तो क्यु मजा छै । मजी परस आवे हाथ पर मारीजु तो पिण भर्ला । आइ नै पछीतरां नेवा ऊभा रहो । माहे सीयी सूती छै, जागे छै ।

सीवो माहे सूतो चीतवै छै, बारै चोर छै । सीवे घर नु सम भराई पेले मत्ता । खुंटै सु तलवार ली । तलवार लेतां थकां मालो थको तेरे पीठे विमासीयी सु घर रो धणी आगीयो । पीछे पीछे स्याल ती हुई इराम करि सु । बाहरां पछीत खोरणी [redacted] नीचीत थको खोरे छै । खोरते खोरते गली की सिरकी मैं माथी मांडै । सीवो तरवार काढि नै बेठो छै । माथी माथो करै आवे मैं घर

लिए निकला । शहर में घूमते-घूमते किसी का घर बाहु में आ गया । ऐसे समय वह सीवे के डेरे में आ निकला । आधी रात हो गई है । सीवा उस स्थान में आकर खड़ा है । मन में संकल्प-विकल्प करता है । यहां तो चोरी करना कुछ अच्छा भी है, कोई अच्छी चीज हाथ लगेगी और मारा जाऊं तो भी अच्छा है । बाहर के पीछे भी चोर झुक कर खड़ा हो गया । अन्दर सीवा सोया हुआ है किन्तु जग रहा है ।

अन्दर सोया हुआ सीवा सोच रहा है कि बाहर चोर है । सीवे ने अपनी स्त्री को समझाया कि जागो मत । खूंटी से तलवार उतारी । तलवार लेते समय अच्छी नहीं, जिससे सीवा समझ गया कि घर का मालिक जग गया है । सीवे ने सोचा—तमाशा तो मैं इसको दिखाऊंगा । तब पीछे के हिस्से को खोदने के लिए बैठ गया । निश्चिन्त होकर खोद रहा है । खोदते-खोदते उसने दीवार में इतना बड़ा छेद कर लिया, जिसमें सिर घुस सकता था । सीवा तलवार निकाले हुए बैठा है कि

वार री घु । इण आंगुली घाल करे नै जोयो। जोहने लपाखुप रे माथे हांडी देइ नै आगो कीयो। तिणरे सीरे धम मारि नै तर वार पाढी सु हांडी ऊपरा बाही । सु हांडी फूटि गई सीवों ही हंसीयौ अर बीजोई हंसीयौ। हंसीयां पछा बीजो बोलीयो सु इसडो मैं ही एक सीवो सुणीयो हुतो । सीवो कहीयो इसडो बीजो सुणीयो हुतो। कहीये बीजियो म्हारो नाम। तो कहीयौ सीवजो म्हारो नाम। तो कहीयो आछी मिली। म्हारलुं थारे मिलण री चाहा हुती। नो कहीयो म्हानुं ही मिलण री चाहा हुती। थाइ नै मिलीया। एकठा बैठा। वैर नुं कहीयौ उठि चलावो हूँ। वैर उठि मुंहडै आगे आणि सूलां री थाल मेल्ही।

मद रो ठाम आणि मेल्हीयो। मद पीवण लागा। सूलां खावण लागा। इणै समय मैं दिन ऊगौ। घणो हरख हुवो।

यह सिर आगे करे और मैं सिर में तलवार की चू । उसने अंगुलि डाल कर देखा। देख कर सीवे ने कपीन खोपने के चीजार के सिरे पर काली हंडिया रख कर आगे कर दी। इतने में सीवे ने वेग से तलवार का वार किया और तलवार हंडिया के ऊपर पड़ी। सो हंडिया फूट गई। सीवा भी हंसा और बीजा भी हंसा। हंसते हुए बीजे ने कहा—ऐसा तो मैंने सीवा ही सुना था। सीवे ने कहा—ऐसा आदमी मैंने बीजा ही सुना था। उसने कहा—बीजा मेरा नाम है। उसने कहा—सीवा मेरा नाम है। तब उन्होंने कहा—अच्छी मिली। मुझे तुमसे मिलने की इच्छा थी। दूसरे ने कहा—मुझे भी तुमसे मिलने की इच्छा थी। आकर मिले। इकट्ठे हुए। स्त्री से कहा—उठ कर आना चाही था। स्त्री ने उठकर मुंह के सामने शूलों (मांस के पके हुए टुकड़े) की थाल रखी।

मद का प्याला लाकर रखा। शराब पीने लगे और मांस खाने लगे। इसी बीच में दिन उगा। बड़ा हर्ष हुआ। आनन्द होने लगी।

भक्ति हुयणे लागी । दूम गावणो लागा गाढो संतोष हुवो । घणो मेल हुवो । ३-४ दिन हुवा इसी समीये में पाछिलो पहर रो जीमण तईयार हुवो छै । पाजपट बिछाय नै थालि मांडि नै जीमण बैठा । कवा २-३ लिया तिसै सीधा री बैर बोली । जीजाजी तू नै थारो भाई बेय बडा रजपूत । थांहरो बडो नाम । थांने एक उमर आली ये भेला हुया । किसी एक बात करो जिगसूं मालूम हुवै । बीजो बोलीयो भाभी कहो तु कहै जिकाई करां । इण कह्यो हूँ कांई कहूँ । कहूँ तो चीतोड़ घोड़ी २ जय नै विजय साह देवीदास रे छै जीसां रे पगे लागी सेजरी आय छै तै घोड़ी लावो तो थे बडा साहबी । बीजा तो थांहा घणा ही करो छो छोटा मोटा । इसरो कह्यो बेउ भाई उठि नै चलू करे नै बोलीया । चलू भरि पाणी ले नै कहीयो । जे उवे घोड़्यां आणा तो एथ आइ नै जीमा नहीं तो ए कलंक माथे चढ़क आवसी ।

होम करते करते बड़ा सन्तोष हुआ । खूब मेल-मुलाकात हुई । ३-४ दिन इस तरह बीते । ऐसे समय अन्तिम पहर का भोजन तैयार हुआ । चौकी बिछाकर, थाल रखकर वे भोजन करने बैठे । दो-तीन ग्रास लिये । उस समय सीधा की स्त्री बोली—जीजाजी तुम और तुम्हारे भाई दोनों बड़े राजपूत हो । तुम बड़े नामी हो । अपेक्ष उम्र में तुम मिले हो । कोई ऐसी बात करो जो सब जगह प्रसिद्ध हो जाय । बीजे ने कहा—भाभी तू कहेगी वही करेंगे । इसने कहा—मैं क्या कहूँ । कहूँ तो बात यह है कि चित्तौड़ में घोड़ी दो जय और विजय नाम की शाह देवीदास के यहाँ हैं जो एक मारने से हवा हो जाती हैं । घोड़ियाँ ले आओ तो तुम बड़े शाह हो । दूसरी जगह तो छोटे-मोटे कार्य खूब करते हो । इतना कहते ही दोनों जने उठकर आचमन करके चोले—चुल्लू भर पानी लेकर कहा—जब व घोड़ियाँ लायेंगे तभी आकर भोजन करेंगे नहीं तो यह जन हमारे मस्तक पर कलंक लगाये ।

दोनूं चितोड़ नुं चालीया। चितोड़ आइ पहूंता। बीजो हुतो जिको पाटा बांधि नै साह रै बारणै आइ बैठो। बीजो रहै सहर मांहि। इयुं करता थकां मामूंम रै आइ सम्भि करि करि आइ समाचार पूछै। पूछतां दिन ५ ३ ६ हूआ तठै सारी माहरम पाई। घर दोला छै परकोटा तीयां बीच सातमों पड़वो जिण मांहे चोकी चसे एक एकणा खूणो। पड़वो केलूयां सुं छायौ। सात ताला मांहे जड़ीजै। सातां ही दरवाजां री कूंची सिरहाणै देने साह चोका री पछाड़ी ऊपरा किंवाड़ सुं मांचो जड़ाइ नै सुवै। पाछै दरवाजा ओहिला ताला जड़ीजै। कूंची सिरहाणै दे सूवे। आ खबरि बीजै बीजे नुं कही। तरै बीजै आइ लोहारां रे लोह री खूंटी घड़ाविया। घड़ाइने अमावस री रात्रि आइ नै बीजो लागो। घरीयालै री घड़ी बाजै तरै खूंटी ५-६ मारे। पछे घड़ी

दोनों चित्तौड़ को चले। चित्तौड़ जा पहुँचे। बीजा पट्टियां बांधकर शाह के दरवाजे जा बैठा। बीजा शहर में रहा। [illegible] करते हुए दूर्वास के समय आकर बीजा देखभाल कर जाता और (बीजे से) समाचार पूछ जाता। पूछते हुए ५ ६ दिन हो गये तब सारा भेद मालूम हो गया। घर के चारों ओर ६ परकोटे थे उनके बीच में सातवां पड़वा था जिसमें एक-एक कोने में एक-एक चोकी बैठती थी। खपरैल छप्पर से छाया हुआ था। सात ताले उसके लगे हुए थे। सातों ही दरवाजों की चाबी सिरहाने देकर शाह चोकों की पिछाड़ी से किंवाड़ लगाकर और उसके पार सटाकर सोता था। सातों दरवाजों के अलावा उनमें भी बड़े ताले थे और शाह चाबी सिरहाने देकर सोता था। यह बात बीजे ने बीजे को बताई। तब बीजे ने आकर लुहारों से लोह की खूंटियां घड़वाई। [illegible] अमावस्या की रात्रि को बीजा आकर छिप गया। घड़ियाल की

माथे वरे लूटी मारे । इयुं करता थका पड़कोटा लोपि ने पड़पा दोतो भाइ फिरीयो । भाइ फिरि ने पडवे कवो चढ़ीयो । पड़वे चढ़ि ने एके बाती पिचला कोटरू उतारीया ।

पसवाड़े भरती मूकीया । मूकि ने वैरू बाती पकड़ि ने मांहि ली बाती पस सु उतरीयो । उतरि ने दीवो बुम्भाइ दीयो । दीवो बुम्भाइ ने माथा रा पागा हाथ अमर ढळाई ने पारसवी कीया । पारसवी करि नैं सिरहांणैं हूं हवलै हवलै कूँची लीवी । कूँची ले ने साते दरवाजा खोलीया । खोलि ने जय रै लगाम देर ने चढ़ी । चढ़ि ने सलाम करि ने कह्यो माहरी आगे ही जय हुइज्यो । ले ने लीवैं नु पकड़ाई । पकड़ाइ ने अपूठ हाला वळतो गयो । वळि ने कूँची सिरहाणै देने आंपो वळे दिवाळा नु लगाई ने जीव मारिग आयो हुतो तीयै ही मारिग अपूठो उतरीयो । कैसू स्यूं हुता

नहीं चल सकती तब वह ६-७ मेख मारता । फिर नहीं चलती फिर मेख मारता । यों करते हुए सातों परकोटों को पार करके बुरजल को देख । फिर जाकर बुरजल के ऊपर चढ़ा । बुरजल पर चढ़कर पिछले अमर की एक बाती उतारी ।

पास में जमीन पर छोड़ दी । छोड़ कर दूसरी बाती पकड़ कर अन्दर की ओर झट से उतर गया । उतर कर दीपक बुझा दिया । दीपक बुझा कर माथे उठाकर खाट को पार्श्ववर्ती कर दिया । पार्श्ववर्ती करके सिरहाने से धीरे-धीरे चाबी ले ली । चाबी लेकर सातों दरवाजे खोले । खोलकर जय की लगाम लगाकर खोला । खोलकर सलाम करके कहा कि हमारी आगे भी जय हो । लेकर लगाम डोरे को पकड़ाई । पकड़ा कर फिर पीछे चढ़ता गया । चढ़कर चाबी सिरहाने रखकर, चाड़ फिर दिवारों से लगा कर जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते वापिस चला गया । अमर जैसा

स्यंहीज दीसी । पोथी सनैं कह्यौ सीतांजी थाहरै हैसेरी रहै छै य
से भाखियो । वस तो पोथी लेनै आपाहीज आवीया । तिरै मैं
माख पाटी साह नु नींद आई सु जागै नहीं । तरै चाकर आय
नै पोसीस्या साहजी क्यु जागौ नहीं । ताहरां साह जाग्यो । साह
जागि नै देखै तो पोथी नहीं । ताला जडीया दीठा मांथी किंवाड
सु लागो छै । कुंच्यो सिरहाणै छै । सु देखि नै साह साहणी
साम्हौं जोयो । साहणी साह साम्हौं जोयो जोय नै किंवाड़ खोल्या ।
खोलि नै च्यार आदमी आपरा कुवा दीया सु देखि नै कह्यौ सुरंग
दीसे नहीं । नींव प्यारी दीसे नहीं ताहरां सारां ही मिलि नैं कह्यौ
साहजी पोथी देवीक हुती पोथी उपल गई । साह ही कह्यौ साची
बात । छोड़ै कहीयो थोडी रा पण उपल करो । जिके भावै तिको
सु हीज उहरावै । दिन ४ ५ ६ गुदरीया ताहरां एक दिन दोपहर री

था वैसा ही कर दिया । पोथी लेकर कहा—सीताजी तुम्हारे हिस्से की
यह नहीं है तुम कैसे आना । यह [illegible] पोथी लेकर आये चल दिया ।
इतने में भी पड़ी । साह को नींद आई हुई थी इसलिए जगा नहीं ।
उसके नौकरों ने आकर कहा—साहजी जगते क्यों नहीं ? तब साह
जगा । साह ने जगकर देखा तो पोथी नहीं । ताले बन्द जिनसे बाद किवाड़ों
के लगी हुई थी । चाबियां सिरहाने हैं । यह देखकर साह ने अपनी स्त्री
की ओर देखा और सेठानी ने साह की ओर देखा । देखकर किवाड़ खोले ।

खोलकर जो चार अपने आदमी थे, उनको बुलाकर कहा—सुरंग तो
दीखती नहीं । नींव भी कहीं से टूटी हुई नहीं दीखती । तब सब ने
मिलकर कहा—साहजी पोथि अलौकिक थी पोथी तो उड़ गई । साहजी ने
भी कहा—बात सच्ची है । दोनों ने कहा—(अब यह पोथी तो गई सो गई) दूसरी
की मनसूबा पूर्णता करो । जो आता वह कहो पढ़ता । तब ४, ५ दिन बाद

घरियो मीना रिगसता रिगसतो आयो । ताक साय ही आप आप बैसे । लोक साहूकीयो । मीणो बोलीयो साहजी घोड़ो रो कम्यु हुयो । कहीयो मीणा घोड़ी उपन गई । कहीयो राजि पसु ही कदेई उपनायी । कह्यो उपन नही कम्यु हुयो । कह्यो चोरे काढी । साह कह्यो रे चोर क्यूं करि काढे । इसे कहीयो हूं नींद सेठासी काढू । कहीयो क्यु करि । कह्यो थे क्यु सुता हुता स्यु सूयो । सु हूंही हाकि ने सूंचो । आपी तो मोनु भीम सुं काढेस्यो । सु हूंतो मतो रखेसो । अकेली तो परम री सपथ छै । सु करि सूता क्यु हुता स्यू । इसे मीणयो कोट मे चढीयो । पछे चढि ने केन्हू परहा करि ने उतरीयो ।

ऊपरि नें सिरहाणे हूं तू क्या लीयो । लेने वास्ता अकेलीया । अकेलि नें घोड़ी आगे गयो । पे लगाम नें खोसि माची नें घोड़ी

थे । तब एक दिन दुपहर के समय मीणा टहलता-टहलता वहाँ आया । सब आदमी पास आकर बैठ रहे थे । लोग सो गये । मीणा कहने लगा—साहजी घोड़ी का क्या हुआ ? कहा—मीणा घोड़ी अन्तर्धान हो गई । मीणा ने कहा—महाराज ! पशु भी कभी अन्तर्धान हुए हैं ? साह ने कहा—यदि अन्तर्धान नहीं हुई तो क्या हुआ ? उसने कहा—चोर ने निकाल ली । साह ने कहा—अरे चोर किस तरह निकाल सकता है ? उसने कहा—मैं बैठे-बैठे निकाल सकता । साह ने पूछा—किस तरह ? उसने कहा—तुम जिस तरह सोये हुए थे वैसे ही जाओ । मुंह ढककर सोओ । यदि मालूम हो जाये तो मुझे भीम से दगाव कर देना । मुंह मत खोलना । मुंह खोलो तो धर्म की सौगन्ध है । इस तरह करके साह को ज्यों सोया हुआ था त्यों सुला दिया । वह भीत चढ़ कर चढ़ा । चढ़ने के बाद पत्थर को दूर करके उतरा ।

ऊपर कर सिरहाने से कपड़ा ली । लेकर तासे पेचे । खोल कर घोड़ी के पास गया । लगाम लगाकर, गाथा हटाकर, घोड़ी बाहर

बाहिर काढी । कमाड़ि नैं अपूठा किंवाड़ जड़ीया नहीं घोड़ी असवार [illegible] नैं चलाया । घोड़ी ज्ञेनैं देखतां आगे बाहिर हुई । शाह पिण धीम लिपलिपातो हीज रह्यो । कुसल खेमे घोड़ी लेनैं घरे आया । घोड़ी बेची लाख लाख रुपया । बैठा साहिबी करै । मद पीजै हुम गवाईजै । इसे समीये मांहे बैठा एक दिन जीमै छै । जीवा री बैर बोली । जीवाजी कह्यो क्यु आमी । एक तो अचल धोरी नाम हुवो सु थे जी पिण जो पाटण हुवे छै सवा क्रोड़ रो सतयुग रो इसो रो मांडो ही थे पधा पावसी । इसां सवू देखि नैं कह्यो आमी थे हिवे इसो थारैं मुड़दा आगे आणिस्यां थो थारैं मुड़दा आगे जीमस्यां हाहरां साहूकार हुआ सबो सवेस करि थारैं स करि बहिर दौ त्यार करि । कमटी ले नैं पालीया साहूकार करि कह्यो साहिब म्हे परदेसी चाकर छां म्हाने एक

निकाली । निकाल कर पीछे से किवाड़ बन्द नहीं किये । घोड़ी पर सवार होकर चल पड़ा । घोड़ी को लेकर देखते-देखते गुढ़ के आगे से बाहर निकल गया । शाह धीम लपलपाता ही रह गया । जीवा घोड़ी लेकर घर आया । घोड़ी बेची, लाख-लाख रुपये पैदा किये । जीवा बैठा साहिबी करता था । मद पीता था हुमों से मौज मनाता था । इस समय बैठा हुआ एक दिन भोजन कर रहा था । जीवे की स्त्री ने पूछा—अब जीवे ने कहा—क्या बात ? एक बात तो तुमने ऐसी की जिससे तुम्हारा नाम अचल हो गया लेकिन पाटण में जो सवा करोड़ का सतयुगी कमठ (मंढा) है उसको ले आओ तो तुम बड़े शाह हो । इसने फिर सोचकर कहा-आमीजी ! जब कमठ (मंढा) तुम्हारे सामने लाकर रखेंगे तो ही तुम्हारे सामने भोजन करेंगे । तब उन्होंने साहूकार का वेश बनाकर वेश और ठाट तैयार किये । कमठे लेकर चले । किसी साहूकार से कहा—साहब हम परदेशी

इसरी ठौड़ थो सु एक ही आदमी बैठे रखवालो । ताहरां देहुरा मे
रा हाट छै उठ डेरो दिरायो । उठा चौफेरी सात चोकी फिरै । उठा प
रा हुक्म हुवो । ताहरां साह कह्यो म्हानु अपूठी हाटां घो ।

ताहरां पूठ री हाटां दीयो । उठै रहै । अठै रहता करतां बरस
१ हुवो ताहरां गोहरो बचो एक पालीयो । पाखि न हाटा ही मे
सम्भाई । सम्भाई गलै भमर डोरी बांधि नै सम्भाई । सम्भाइ नै
ताहरां पोह माह रा दिन आया तरै एक दिन आधी रात
अमावस रै दिन सो परमेसर री नाम ने गोह चलाइ । कहीयो
ई रो अवारंख समान चलसीजसी । ई रो हीरा माणिक जड़ीया
छै । ताहरां पकलो कीयो तिण करि मांहि कीयो दीठो भूकि
दीनो ने ऊपरा मेण कपड़े सु लपेटि ने पट सु बांधि ने चीढो
चढीयो । जिसरे चौकी वाला आवे तरै पेहरा नु लागि रहे ।

नौकर है । हमें एक ऐसा स्थान दो जहाँ एक ही आदमी रखवाली पर बैठा
रहे । तब वहाँ मन्दिर की दुकान थी वहाँ डेरा दिलाया । उसके चारों ओर
सात चौकीदारों का पहरा था । वहाँ का हुक्म हुआ । तब इन्होंने कहा—हमें
पीछे की दुकानें दो ।

तब पीछे की दुकानें दीं । वे वहाँ रहने लगे । वहाँ रहते हुए जब
एक वर्ष बीत गया, तब एक गोहरे का बच्चा पाला । पालकर उसको
दुकान में [illegible] छिपाया । छिपाकर गले में भँवर-डोरी बांध कर रखाया ।
छिपाने के बाद जब पोह-माह के दिन आये तब एक दिन अमावस्या की
आधी रात को परमेश्वर का नाम लेकर गोहरा चलाया और आपस में
बातचीत की कि हमारा बनाओगे समय पहचान लेंगे । हमारा हीरा-
माणिकों से जड़ा हुआ था । तब एक पकवान बनाया । लेकिन
उसके अन्दर रखा हुआ दीपक दीख रहा था, इसलिए ऊपर मोमजामे से
लपेट कर कपड़ा बाँधकर सीधा चढ़ा । जब चौकी वाला आता तब

चौकीदार आइ नै घसो पडे । यू करतो करतो आइ पहुंचो । पहुँच न घड़ीयालसी घड़ी मारे तरें चोडी ठड़काबे । तेने घड़ीयाल मारे तर पछे चौडी सु ठड़काइ ठड़काइ नै कमस माठीयो । माडि नै दूर कीया । कमस माप लपेटि नै बांधि नै लियी । पकण चोर नु बारह बरस हुआ ई रे ऊमर मसवां भर बेस्या रे घरे रहे कठे भटकलीयो ई रे नु चोर लागा ।

चौकीदारसौ भटकलीयो नहीं । (उण दीठो) भली बात हुई । उपर री उतरीयो । म्हारी हेमो होसी । इ यु करि इ डां उतरि नै हाट माहिं पैसि रह्या । पाछिली घड़ी दो राति हुइ तरें दरवाजे आइ ऊमा । दरवाजा नु कमो रावळो वरस चोड री फौज हुवो छ । उघाडि । इण कमो हूँ उघाडूँ नहीं । ताहरां रुपिया दोइ काढि

मन्दिर के निकट जाता । चौकीदार के जाने पर फिर चढ़ता । यों करते करते वह पहुंचा । पहुंचने के बाद घड़ियाल बजाने वाला जब घड़ियाल बजाता तब वह चौडी खड़का देता । जब फिर घड़ियाल बजा दी फिर छीडी से खड़ा-खड़का कर कलश निकाल लिया । निकाल कर दूर रख दिया । कलश अपने शरीर के कपड़े से लपेट कर बांध लिया । एक दूसरा चोर बारह वर्ष से कलश के लिए कोशिश कर रहा था और वह वेस्या के घर रहता था । वहीं से उसने अनुमान किया कि कलश के तो चोर मत भरे ।

चौकीदार इस बात को ताड़ नहीं सके । उसने (चोर ने) देखा-अच्छी बात हुई । इनरे न उठाय । और मेरा भी हिस्सा होगा' यों बातें कर इधर उतार कर दुकान में बैठ गया । जब रात्रि के अन्तिम दो प्रहर बाकी रहे, तो दरवाजे के पास जाकर खड़ा हो गया । दरवान से कहा—दो वर्ष हुए एक कमा चला रहा दिखाई आयी । उसने कहा—दिखाई खोलूंगा नहीं । तब दो

दीया । तरै खिड़की उघाड़ि दी । ए नीकलिया । आगौं गुसाई नै कह्यौ म्हारा साथी नीकलिया कह्यो जी ए हो आइ । चलीया चलीया मसाण नीजी कनै । उठ गया उठ आइ नै ऊभा । तिसड़ै पांसलो चोरि कपड़ा माथि मन मन आइ नै सूतो । वाहरां कह्यौ पीवस की मुड आरण छै । कह्यौ माएस छै । वाहरां लागी चार रै बीच आइ नै बोलीया कहीयो इण सगलां मड़ां रै ऊपरि कटारी ये मारौ । इणां दिसरां रै । इणे दिसरां रै हूं मारु छू । वाहरां कटारी मारी । चोर उठै रै लागी वाहरां बोलीयो ही नहीं । कहीयो कही बोलाबी पडीसी छै । कुण खाड मैं पूरौ । तरै खाड खणि नै कलस पूरीयो ।

उठै पूरि नै आपरै हाटे आया । आइ बैठा । उवे उठि नै कलस काढि नै लपेटि नै वेस्या रै घर आयौ । आइ नै कलस पूरि

उसमें निकाल कर दिये । तब खिड़की खोल दी और यह निकल गया । (दूसरा) सपने में जाग गुस्सा कर बोला—मेरा साथी गया है । द्वारपाल ने कहा—अभी अभी गया ही है । चलते-चलते मसान समीप था, वहां पहुंचा । वहां जाकर खड़ा हो गया । इसी बीच में पिछला चोर कपड़े उतार कर मठ में जाकर सो गया । बीजे ने पीछे से कहा—तुम्हीं चालक है । उसने जवाब दिया—चालक है । तब मसान के बीच जाकर बीजे ने कहा—इस दिशा में इन सब मुर्दों पर तीरण कटारी का वार करो । उस दिशा वालों के मैं मारता हूं । बीजे ने उत्तर दिया—इस दिशा में मैं वार करता हूं । तब कटारी का वार किया । जो वहां चोर था उसके लगी पर वह बोला नहीं । बीजे ने कहा—यहीं पांव की धूल पड़ गई । खोदकर मुर्दे को पूर दो । उन्होंने गड्ढा खोद कर कलश गाड़ दिया ।

उसको पूर कर स्वयं दुकान पर आ गये । आकर बैठ गये । और यह (चोर) उठ कर कलश निकालकर, लपेट कर वेश्या के घर आया । आकर

मैं छिप रह्यो। मास पूगो। दीवे री जोति मंद पड़ी। ज्यु दिन चढ़ण लागो त्यु त्यु दीवा री जोति मिटती गई। तारां लोकां कहीयो चढ़ग्यो, ईं की नाहीं। लोक एकठा हूवा। कहीयो चोरे ई रो जस दीयो। राजा सु खबरि हुई। पछ्छ शहर रे चोतारै सह भेळा हुवा। सारे ही हैकार हूवो। राजा अन न खाइ सही। लोक सरव हाहाकार करबे लागो। तारां कीयो नैं बोल्यो बोलीस्य शहरे इणरो खंद्र लोप कर्यो थो। आगो ही कही अ आदमीयां दीय कलस करायो हुतो पछे कलस नवो करावो अर पांच हजार रुपीया मोहरा ल्यो। फेर ई को करायो दीवा री छाहूघर रुपीया घौ। राजा इणरी बात सुणि नैं बहुत राजी हूवो। बड़ो सुख पायो। प्रधानां उमरावां विचार नै राजा सु वीनती कीवी। महाराज हिवै कलजुग आयो। ईं को पाथर रो कराइ जै। राजा बात मानी पाखांण रा ईं को करायो।

कलश गिर कर छिप गया। पौ फटी। दीपक की ज्योति मंद पड़ गई। ज्यों-ज्यों दिन चढ़ता गया त्यों-त्यों दीपक की ज्योति मंद पड़ती गई। तब लोगों ने कहा—यहां ईंडा नहीं है। लोग इकट्ठे हुए और कहने लगे–चोर ने ईंडा चुरा लिया है। राजा को खबर हुई। शहर के एक चौराहे पर सब इकट्ठे हुए। सब जगह हाहाकार मच गया। राजा ने अन्न-पानी छोड़ दिया। सब लोग हाहाकार करने लगे। तब धीरे-धीरे न राजा से कहा—राजा! इतनी चिंता क्यों कर रहे हो? पहले भी तो यहाँ के आदमियों ने कलश चढ़वाया था, फिर नया कलश कराया और ५०००) रुपये हमारे को फिर ईंडा बनवायो हुवारे छाहूकार (भी) रखे हैं। राजा इनकी बात सुनकर बहुत खुश हुआ। बहुत सुखी हुआ। प्रधान वजीरों ने विचार करके राजा से विनती की—महाराज! अब कलियुग आ गया। ईंडा पत्थर का बनवाना चाहिये। राजा ने बात मान ली और पत्थर का ईंडा बनवा लिया।

दिन ४ 5 ६ मारगा पहीया । ताहरां खीवो थीठो बोलीया माही ईंढी जोइ बावां । परभाव रा से मोटो मेदानां रे मिस नाठी गया । आगे पसे तो खाड खाली छै । थीठो बोलीयो खियां में तो कढी मुंह मारणा छै । कहीयोस पिछाणो छै । सहर मांहे हीज छै । पाछा आया इयां नै कहीयो एकै बाजार मूं बेसि । एकै हूं बेसूं । अर बाजार माहे जिको पुराणा मूंग । सारो मास । फूलदार । जिको मोलावै सु जोवो । इयुं करतां बाजार मांहे फिरै कपड़ा मोलावै । इणगी उणगी जोवै । खबरदारी करै । इयुं करितां तीसरा पहर री वेला वेस्या सिणगार करि नै बणाव बणाइ नै बाजार मांहि आइ नै पुराणा मूंग पूछीया । खीवो बोलीयो बीजा आपणै पुराणा मूंग न छै । कहीयो आपे तो बेचां नहीं । कही रे पाव मोवै तु चाहीजै । कहीयो पाव मोवै तु तो थर्मा जड़ी छै ईज

४, ५, ६ दिन का पर्व हुआ । तब खीवे-थीठे ने मारग में समाई की—आगे, ईंधा देख आये । प्रातःकाल के समय शौच के मिस लोटा लेकर मकान में गये । आगे जाकर देखा तो कमरा खाली पड़ा है । थीठे ने कहा—खीवा ! मैंने तो कहा था, मुम्मी चालाक है और पूछा—उसे पहचानते हो ? शहर में ही रहता है । वापिस आये और थीठे ने कहा—एक बाजार में तुम बैठो, एक में मैं बैठता हूँ । और बाजार में पुराना मूंग, अच्छा मांस और फूल वाला जो कोई मोल करावे, उस पर निगाह रखो । इस तरह देखभाल करते हुए बाजार में घूमते और कपड़े भी दर पूछते रहते थे । इधर-उधर निगाह रखते और देखभाल करते थे । इस तरह करते-करते तीसरे पहर वेश्या ने शृंगार कर और बन-ठनकर बाजार में आकर पुराने मूंग पूछे । खीवे ने कहा—बीबा ! अपने यहाँ पुराने मूंग हैं न ? उसने उत्तर दिया—अपन तो बेचते नहीं । उसने कहा—अरे ! पाव पीने के लिए चाहिए । उसने

लगावी जे घर तुरत धाय मिले। तरै वेस्या सांभलीयौ। कहीयौ अस् कहीयौ आ। कहीयौ जी आगे म्हारै छै तिसु धाय तुरत मिले। वेस्या सीदो लने डेरै सु चाली।

वांसै सीतो बीजो ही चालीया। वेस्या आइ घर मांहि पैठी वांसै सीतो बीजो ही पैठा। वेस्या रै पांसो वांस ही आ गया। आगे ठकुरसा पाटो पांधी सूती छै। तिनेरै सीतै बीजै राम राम कीयौ। तरै ही ओलखीया उवां ही ओलखीयो। ताहरां सीतो बीजो बोलीया थें बुरो काम कीयौ चोर रो जायो नहीं। इसी बात कोई करै। या तो सरमरी बात छै। बडो चोर होइनै पाप काई कीया। इयै कहीयो हुणकी। जीमण करायौ भला रहणा घणो सुख करि। विदा मांगि डेरै गया। दिन ५ । ७ हुवा। ताहरां सीतै बीजै विमासीयो हिवै चालीजै। आइ राजा सु

उत्तर दिया—आप जैसे की तो यह जगह है ही। लगाई और सीदा साथ लिया। तब वेश्या का उधर ध्यान गया। उसने कहा—क्या कहा जी? कहा—जी हमारे पास जगह है जिससे आप जल्दी घर जाना है। वेश्या सौदा लेकर डेरे को चली।

उसके पीछे पीछे सीता और बीजा भी चले। वेश्या जाकर घर में घुसी। पीछे से सीता और बीजा भी घुसे। वेश्या के पीछे-पीछे ही गये। आगे ठाकुर पट्टी बांधे सोया हुआ था। जाकर सीते-बीजे ने राम राम किया। उसने इनको पहचाना और इन्होंने उसको पहचाना। तब सीते-बीजे ने कहा कि तुमने बुरा काम किया तू चोर का बेटा नहीं। कोई ऐसी बात भी करता है? यह तो शर्म की बात है। इतने बड़े चोर होकर तुम पागल क्यों हुए? उसने कहा—होनहार ऐसी ही थी। भोजन करवाया, एक साथ रहे, बड़ा आनन्द मनाया। विदा मांग कर डेरे गये। जब ५-७ दिन गुजर गये तो सीते—बीजे ने विचार किया कि अब चलना चाहिये। जाकर राजा

मुजरी कीयौ। कहीयौ महाराज घरां री खबर आई छै। बेटी रो विवाह छै। राजा सिरोपाव दे बिदा कीयो उवे चोर कन्है गया। कह्यो ई रा हिस्सा करो। कहीयौ करस्यां। ताहरां खीवे बोलीयो एथ हिंदै करस्यां नहीं मारवाड़ मांहि नै जाइ नै पछै करस्यां। ताहरां उ चोर बोलीयो कितरा हिसा करिस्यो कह्यो तीन हिसा करिस्यां।

कहीयो ना जी युं नहीं च्यार हिसा करिस्यां। कह्यो जी च्यारि क्यांहि रा। कह्योजी मे वेस्यां रै रहतां बारह बरस हूवा। इये म्हारा ठीक कीया। कहीयोजी म्हारे रै बेटी छै जे हिसो होसी तो। ताहरां खीवो बोलीयो जी वेस्यारी रो हिसो करो। ईया ही खिज मत कीजी छै। ताहरां वेस्यारी रो हिसो कीयो। घरां तैयारी करां हालण री। एकत्र होइ नै हालीया छै। आवतां आवतां ताहरा

से मुजरा किया। कहा—महाराज ! घर से समाचार आया है, बेटी का विवाह है। राजा ने सिरोपाव देकर बिदा किया। वे उस चोर के पास गए और कहा—इसके हिस्से करो। उसने कहा—यहीं करो। तब खीवे ने कहा—यहीं नहीं करेंगे मारवाड़ में चलकर हिस्सा करेंगे। तब उस चोर ने पूछा—कितने हिस्से करोगे ? उन्होंने उत्तर दिया—तीन हिस्से करेंगे।

उसने कहा—नहीं जी इस तरह नहीं चार हिस्से करेंगे। उन्होंने पूछा—चार किसके ? उसने कहा—जी मुझे वेश्या के पास रहते हुए १२ वर्ष हो गये। इसने मेरी सेवा की है और मेरी स्त्री ही है, इसलिए इसका हिस्सा रहेगा। तब खीवे ने कहा—अच्छी बात है, वेश्या का भी हिस्सा रहेगा। इसने भी सेवा की है। तब वेश्या का भाग भी निश्चित हो गया। कहा—अच्छा चलने की तैयारी करो। इकट्ठे होकर सब चल पड़े। आते-आते जब रास्ते में पहुँचे तब खीवा कहने लगा—खीवजी

हाँतीवाडै आया ताहराँ जीवो बोलीयो लीवा की इण भाइनु
दूध पायो काई नहीं आपा ही केय लेआइस्याँ। बेहूँ पासि नै
इण कन्है आइ बैठा। इणे बिछावणाँ कीया आइ बैठा। देखि नै
कह्यो इणी बाँटी। लीवौ बोलीयो बाँटणी कांइ ? तिराइ भाग
करिस्याँ। ताहराँ नाचिणवालो बोलीयो मा जी थाँ कहीयो
हुतो। इणे मु इतरी भुइ बाहरे कहीये आंणी। हिमै नाँ क्यूं
करो। तितरै आपस मे असरची हूवौ। आपस मैं बोलणे लागा।
ताहराँ लीवै कटारी काढि मे मारी। प्रहार

तितरै जीवै पिण कटारी वाही। चोर मारि नाखीयौ।
तितरै नाचिण बोली हाय हाय क्यो हुँ ऊबरू। क्यो तुनु बचे
राखि मैं काँई करिस्याँ। ताहराँ नाचिण नु ही मारी। माल ले नै
दोऊँ घरे गया। घणा आनन्द कीया। दिन ५-७ रह्या पछै इन

इस भाई को दूध क्यों नहीं पिलाते ? आप कहाँ से आओगे ? दोनों
चलकर इसके पास आ बैठे। वह बिछौना बिछाकर बैठ गया। जीवन
देखकर कहा—ऐसे के हिस्से करो। जीवे ने कहा—हिस्सा क्या करना
है ? तीन को हिस्से कर लेंगे। तब नर्तकी वाला चोर कहने लगा—
नहीं जी, तुमने कहा न था ! इसको (वेश्या को) इतनी दूर तुम्हारे
कहने से ही तो लाया हूँ। अब इन्कार क्यों करते हो ? इतने में आपस
में तकरार हो गया, बोलचाल हो गई। तब जीवे ने कटारी निकाल कर
प्रहार किया।

फिर जीवे ने कटारी चलाई। चोर को मार डाला। तब नर्तकी
ने हाहाकार किया और कहने लगी—मुझे बचाओ। उन्होंने कहा—
फिर तुम्हें बचाकर क्या करेंगे ? तब उस नर्तकी को भी मार डाला। माल
लेकर दोनों घर पहुँचे। खूब आनन्द रहे। ५-७ दिन रहे। इनों ने खूब

गवाया। ताहरां बीजै बोलीयो सोरा म्हानु सीख दें तो घरे जावां। कह्यो जाइ जाइ। ताहरां सोरो बोलियो जी म्हारी बधाई द्यो। कहीयो जी बधाई क्यांह री। कहीयो जी म्हारा घर सूं उठीया म्हारी बाहर थानु मूकिया तै म्हारी बधाई। कहीयो जी इतरा दिन थे कछु न ल्याया। अर पहिलां मां हीज पोथी ल्यायो म्हां पहिल की। थानु बधाई क्यांह री। पछे आपस में तकरारी हुवी। झगड़ीया। पछे पंचे गया। पंचे देखि नै कह्यो कुरलांवली रा ईंडा ल्यावै तैरी बधाई। ताहरां एकै पीपल री माळी हेरि नै आया पाछिली रात्रि घड़ी ४ थकां चौकीदारां नु छोडि नै बैठा सोया। कुरलांवली बोली ताहरां सोरै बीजै नै कह्यो तू ईंडा ल्याव।

बीजै कह्यो जिके नु जाइ री जाइ हुसी तिको चढिसी। ताहरां सोरै आंगीयो पहिरी पछेवड़ कसि नै कायर ४ पलेट माहे कसि नै पीपल माहे चढीयो। बीजो पिण पछेवड़ बांधि नै

गीत गवाये। तब बीजे ने कहा—सोरा मुझे विदा दो तो घर जाऊं। उसने कहा—जाइ! तब सोरे ने कहा मेरी बधाई मुझे देकर जाओ। बीजे ने पूछा—बधाई किस बात की? उसने कहा—मेरे घर से निकले मेरी स्त्री ने तुम्हें भेजा, इसलिए मेरी बधाई। इतने दिन तुम कुछ भी नहीं ला पाये। और पहले मैं ही पोथी लाया—मैंने ही मौपरोध किया। तुमको बधाई किस बात की? पीछे आपस में तकरार हो गया। दोनों झगड़े और बाद में पंचों के पास गये। पंचों ने देखकर कहा—जो कुरलांवली के अंडे लावे, उसी की बधाई। तब एक पीपल के अन्दर घोंसला देख कर आये। जब चार घड़ी रात बाकी रही, तब चौकीदारों को छोड़कर बैठ गये। जब कुरलांवली बोलने लगी तब सोरे ने बीजे से कहा—जाओ अंडे लाओ।

बीजे ने कहा—जिसको ध्यान जाइ लगी, वह चढ़ेगा। तब सोरा आंगिया पहनकर कमर कसकर, कमरबन्द में ४ कायर लपेट कर पीपल पर जा चढ़ा। परन्तु बीजा भी कमरबन्द बांध कर चढ़ा। एक तरफ सोरा

हालोयो। एकै दिस सीयो चड़ीयो एकै दिस बीजौ चढीयौ। सीयो जाइ नै कोंकणीमार रा ईंडा लेवो गयो अर बीजै मगर कोंकणीमार अर सीयै दोनु पर राख सीयो काचर मेल्हि अर ईंडो लै। अर बोजो सीयै री पलट मांहे मीगणी मूंकै अर ईंडो लै। यु करतां ४ मीगणा मूंकीया ४ अडा लीया। पे अर एकै दिस सीयो उतरीयो बीजै दिस बीजौ उतरीयौ। बेने गांम आया। आयने पञ्चा आगै आया। कहीयो स्याबो। ताहरां सीयै काढीया। देसे तो मीगणां। ताहरां बीजै काढि नै ईंडा दिया। ताहरां पञ्चां कह्यो ईंडा स्याबो तेरो अधिको हिसो। ताहरां बीजौ बोलियो जी हालो आधो-आध बहिंच लेस्यां। केरै आइ नै आधो-आध बहिंच दीयो। आपस में घणी प्रीती की घणी हरख करि नै बीजो सोम्यिक आयो। सीयो नाहूल रह्यो। इसे समाचे पिसासे छै। बीजे सीयै री बात सम्पूर्ण। श्री।

चढ़ा, एक तरफ बीजा चढ़ा। सीया जाकर काचर रखता गया और कोकमार का अंडा लेता गया और बीजा मगर और सीये दोनों पर निगाह रखता गया। सीया काचर रखता और अंडा लेता। और बीजा सीये की लपेट में ऊंट के मींगण डालता जाता और अंडा लेता जाता था। यों करते-करते उसने चार मींगणे डाले और चार अंडे ले लिये। लेकर एक तरफ तो सीया उतरा और दूसरी तरफ बीजा उतरा। दोनों गांव में आये। अपने पंचों के सामने पहुंचे। पंचों ने कहा—लाओ। तब सीये ने निकाले—देखा तो मींगणे !! तब बीजे ने निकालकर अंडे दिये। तब पंचों ने कहा—जो अंडा लाया है, उसका हिस्सा अधिक है। तब बीजे ने कहा—नहीं, आधा-आधा कर लेंगे। घेरे जाकर आधा-आधा हिस्सा दिया। आपस में बड़ा प्रेम रहा। बहुत हर्षित होकर बीजा सोम्यिक आया। सीया नाहूल रहा। अमन—चैन से रहने लगे। बीजे सीये की बात समाप्त।

अथ वात राजा मानधाता री

राजा युवनास्वर राजा सबैसाल री बहिन परणीयी । राजा युवनास्वर मोटो राजा मोटी राजधानी राजा युवनास्वर रै पुत्र नहीं । तीर्थ करि राजा मधीन रहै । ताहरां राजा रिपीस्वरां री सेवा करै । एक दिन रिषीस्वर मेहरबान हुवा छै । राजा नु संतुष्ट हुइ नै पाणी मंत्र दीयौ छै । कह्यौ राजा आ पाणी राणी नु पाए थारै पुत्र हुसी । ताहरां हरखित हुवो छै । पांणी रो प्यालो आंण रांणी नु सेम्ह दीयौ छै । राजा नु बात वीसारि गई । इतरो कह्यो नहीं नु पांणी रांणी पीज्यो । ताहरां प्यालो पाणी रो आदमी आइ रांणी नु दीयौ रांणी पांणी रो प्यालो कलस ऊपर मेल्हाइ मे रख्या नै स्मारो दीठो राजा कही पाणी मेल्हीयो छै सु आपे कहिसी । राजा रावि महलां माहि पधारीया छै । पौढीया छै । ताहरां आधी रावि

राजा युवनाश्व का सबैसाल की बहिन से विवाह हुआ था । राजा युवनाश्व बड़ा राजा था और उसकी बड़ी राजधानी थी । राजा युवनाश्व के कोई पुत्र नहीं था जिससे वह चिन्तित रहता था । इसलिए राजा ने ऋषीश्वरों की सेवा की । एक दिन ऋषीश्वरों की कृपा हुई । प्रसन्न होकर उन्होंने मन्त्र से पवित्र किया हुआ जल दिया । कहा— राजा यह पानी रानी को पिलाना, तुम्हारे पुत्र होगा । तब राजा हर्षित हुआ । पानी का प्याला लाकर रानी के पास रख दिया । राजा बात कहना भूल गया और यह कहा नहीं कि हे रानी ! यह पानी तुम पीना । जब जल का प्याला नौकर ने लाकर रानी को दिया तब रानी ने जल का प्याला कलश के ऊपर रखवाकर ढ़ांपा कर छोड़ दिया । सोचा—राजा ने जिस पानी रखवाया है सो आप ही कह देंगे । रात को राजा महल में

पाछि म्हे सरदाँ हुरवाँ थ टावर पालिस्यो। म्हाँसु न पले । थ पालिस्यो। ताहराँ प्रधान मुहता सरब एकठा हुवा । राजा नुं सरदाँ साथे मढल पहुँचायो। राजा री क्रम कीयी । पुत्र रो नाम मानधाता दीयो। टीको राजा रे दीयो। ताहराँ राजा बारह बरसाँ रो हुवो ताहराँ माँ नानाणे गई। राजा अजयपाल ले पगे लगायो छे। हिवे राजा अजयपाल कन्हे राजा मानधाता रहे। अजयपाल मामो होमाम्याँ रा मुजरो करे। एक दिन राजा अजयपाल रो रावलोक राणी रे डेरे एकठो हुवो छै।

तिसे समीये माहे भाणेज मानधाता आइ मुजरो कीयो। रांणियाँ कहे छे भाणेज एके समीये थारे मामो जी नुं तू पूछ खुसीयाल करि, करल पर पूछे महाराजा मोहल माहे पधारो छो ताहरां नीसासा क्युं नाखो छो इणरो ब्योरो म्हानुं से देई। राजा मानधाता राजा अजयपाल सुं खुसियाल करि ने वीनती कीधी

हुम चली होंगी । हमसे बच्चा न पलेगा तुम्हीं पालना । तब सब प्रधान मंत्री इकट्ठे हुए । सतियों के साथ राजा को मरघट्भूमि में पहुँचाया । राजा का अन्तिम संस्कार किया गया । पुत्र का नाम मानधाता रखा गया । राज्याभिषेक किया गया । जब राजा बारह वर्ष का हुआ तब माँ लेकर ननिहाल गई । उसे राजा अजयपाल के चरण स्पर्श कराये । अब राजा अजयपाल के पास राजा मानधाता रहता । अजयपाल मामा है । मामियों को मानधाता प्रणाम करता । एक दिन राजा अजयपाल के रनिवास की रानी के डेरे में इकट्ठे हुए ।

उस समय भानजे मानधाता ने आकर प्रणाम किया । रानियों ने कहा—भानजे एक समय तुम अपने मामाजी से पूछना, खुश करके और वचन लेकर पूछना कि महाराज ! जब आप महल में पधारते हैं, तब निःश्वास क्यों छोड़ते हैं । इसका ब्योरा हमें आकर देना । राजा मानधाता ने राजा अजयपाल को खुश देखकर प्रार्थना की कि मामाजी एक विनती

मामाजी एक बीनती छे । थाहरों कह्यो माणोज कहि । मामाजी केन थी तो कहूँ । थाहरों कोल दीयो । थाहरों माणोज कहे मामाजी रावले घरे घणा भला दसोता राण्यां बेट्यां छे । ने महाराज रावलीयां में पधारो थाहरों निसासा क्यु मेलो । थाहरों या बात सुणी राजा मलयपाल मायो धूणीयो । ने मानधाता थें बुरा कीधी या बात पूछी । या बात पूछणी न थी । पर पूछीयो है सो कन्हा कबस लीयो पर बात पूछी तो आइ में महल माहे कांच छे सु ले आव । मानधाता महल माहे आइ में कांच सु हाथ घालीयो । कांच हे सु हाथ घालत समान कोंज घोली फिरि गई ।

मानधाता सु ले डरी छे । सात समदरा रे पार उतरीयो छे राजा मानधाता वीठो आइजे केथ थाहरों एक मारिग दीठो । वीये मारिग चालीयो । आगे आवे इन्हें तो तपसी च्यार बेठा छे । ६ पूर्णा

है । उन्होंने कहा—कहो मानजे । उसने कहा—मामा, वचन दो तो कहूं । तब उन्होंने वचन दिया । तब मानधा कहने लगा—मामाजी आपके घर बड़े-बड़े देशों की बहू-बेटियां हैं । पर महाराज, जब आप रनवास में पधारते हैं तब निःश्वास क्यों डालते हैं ? यह बात सुनते ही राजा मलयपाल का मस्तक घूमने लगा—(और वह कहने लगा) मानधाता, यह तुमने बुरा किया कि यह बात पूछी । यह बात पूछनी न थी । और पूछी भी तो मुझसे वचन लेकर बात पूछी । तो अब जाकर महल के अन्दर जो लकड़ी पड़ी है उसे ले आओ । मानधाता ने महल में जाकर लकड़ी पर हाथ डाला । हाथ डालते ही लकड़ी उसके शरीर के चारों ओर फिर गई ।

वह मानधाता का नगर उड़ गई । सात समुन्दों के पार उतारा । राजा मानधाता ने सोचा कि यहां चलना चाहिए । तब उसे एक रास्ता दिखाई दिया । उस रास्ते चला । आगे जाकर देखा तो चार तपस्वी

पाछि म्हे मत्यों हुरमां पे टावर पालिस्यो। म्हांसुं न पलै। थ पालिस्यो। वाहरो प्रधान मुहता सरप पकठा हुआ। राणी नुं सत्यों साथे मसल पहुंचायो। राजा रो क्रम कीयो। पुत्र रो नाम मानधाता दीयो। टीको राजा रे दीयो। वाहरो राजा बारह बरसां रो हुवो वाहरो मां नानाणे गई। राजा अजयपाल से पगे लगायो छे। हिवै राजा अजयपाल कन्हे राजा मानधाता रहे। अजयपाल मामो छे। मान्यां रा मुजरा करे। एक दिन राजा अजयपाल रो राजलोक राणी रे डेरे एकठो हुवो छे।

तिसे समीये माहे भाणेज मानधाता आइ मुजरो कीयो। रांणियां कहे छे भाणेज एके समीये थारे मामो जी सुं तुं पूछ खुसीयाल करि, केसुं घर पुठे माहराजा मोहल माहे पधारे छो थाहरो नीसासा क्युं नाखो छो इवरो थोरो म्हाने के देई। राजा मानधाता राजा अजयपाल नुं खुसियाल करि नै वीनती कीधी

हुए सती होंगी। इससे बच्चा न होगा तुम्हीं पालना। तब सब प्रधान मन्त्री इकट्ठे हुए। रानियों ने साथ राजा को समशानभूमि में पहुंचाया। राजा का अन्तिम संस्कार किया गया। बेटे का नाम मानधाता रखा गया। राज्यतिलक किया गया। जब राजा बारह वर्ष का हुआ तब मां लेकर ननिहाल गई। उसे राजा अजयपाल के चरण स्पर्श कराये। अब राजा अजयपाल के पास राजा मानधाता रहता। अजयपाल मामा है। मामियों को मानधाता प्रणाम करता। एक दिन राजा अजयपाल के राजलोक रानी के डेरे में इकट्ठे हुए।

उस समय भानजे मानधाता ने आकर प्रणाम किया। रानियों ने कहा—भानजे एक समय तुम अपने मामाजी से पूछना, खुश करके और वचन लेकर पूछना कि महाराज! जब आप महल में पधारते हैं, तब निःश्वास क्यों छोड़ते हैं। इसका भेद हमें आकर देना। राजा मानधाता ने राजा अजयपाल को खुश देखकर प्रार्थना की कि मामाजी एक विनती

मामाजी एक वीनती छै। थाहरौं कह्यो आलोच करि। मामाजी बोल
दो तो कहूँ। थाहरौं बोल दीयो। थाहरौं आलोच कहै मामाजी
थम पर बडा बडा बैसोता रायवाँ बेल्यौ छै। नै महाराजा
रानीयाँ में पधारो थाहरौं निसासा क्युं मेलौ। थाहरौं या बात सुणी
पछ मस्तक मायो धुणीयौ। नै मानधाता नै बुरा कीवी या बात
पूछी। या बात पूछणी न थी। पर पूछीयाँ है सो कन्हा कबल
लीनाँ पर बात पूछी तो थाह जो महल माहे फ़ाय छै सु ले आव।
मानधाता महल माहे थाह में कांच सु हाय घालीयो। कांच छै सु
हाथ भाटव समान बीझ थूँमी फिरि गई।

[मानधाता तुं ले वही छै। सात समंदरा रै पार सवरीयाँ छै
पछ मानधाता दीठो थाहजे केय थाहरौं एक मारिग दीठो। दीयौ
मारिग चालीयाँ। आगे आवै देखे तो तपसी च्यार बैठा छै। हे पूर्यां

है। उन्होंने कहा—कहो मामाजे। उसने कहा—मामा वचन दो तो
कहूं। तब उन्होंने वचन दिया। तब मानधा कहने लगा—मामाजी
थम्भे पर बड़े-बड़े देवों की बहू-बेटियां है। पर महाराज जब आप
रनवास में पधारते है तब निःश्वास क्यों छोड़ते है? यह बात सुनते ही
उसने मस्तक को धुनते लगा—(और यह कहने लगा) मानधाता,
यह तुमने बुरा किया कि यह बात पूछी। यह बात पूछनी न थी। और
पूछी भी तो मुझसे वचन लेकर बात पूछी। तो अब जाकर महल के
अन्दर जो लकड़ी पड़ी है उसे ले आओ। मानधाता ने महल में जाकर
लकड़ी पर हाथ डाला। हाथ डालते ही लकड़ी उसके शरीर के चारों ओर
लिपट गई।

अब मानधाता का तिरकर चल पड़ी। सात समुद्रों के पार उतरा।
तब मानधाता ने सोचा कि कहाँ चलना चाहिए। तब उसे एक रास्ता
दिखाई दिया। उस रास्ते चला। आगे जाकर देखा तो चार तपस्वी

छे। कोई धु ई स्वाली छै। च्यारि धू ई आगे च्यार तपसी बेठा छै। राजा जाइ अर तपसीयाँ नुं नमसकार कीयौ। तपेसरीया कह्यौ आव भाणेज थांनुं राजा धर्मपाल मेल्हीयो छै। कह्यौ मोनुं मामे-जी मेल्हीयो छै। तांहरां तपेसरीया कह्यो राजा तूं पावडीयां ल्याव। तांहरां मानधाता जाइ नै पावडीयाँ नुं हाथ घातीयो छै। हाथ घातत समान पावडीयाँ ले उडीयां छै। मेर गिर पर्वत पर ले जाइ उतरीयो छै। आगे जाइ देख्यो तो अपछरां रा महल छै। महल माहे पैठो आगे ढोलीयो बिछायो छै। ऊपरि सेज बिछायल्यां कीया छै। तांहरां राजा बिचारीयो—इयैं ढोलीयै कोई सु आवो रहसी। तांहरां राजा ढोलीयै ऊपर सूतो छै सु नींद आ गई छै। अपछरां इन्दर रे अखाड़े सु आयाँ छै।

देखै तो आगे राजा मानधाता सूता छै। अपछरायां आइ बैठ्यां छै। तांहरां राजा जागीयो छे तांहरां अपछरायां कह्यो भाणेज

बैठे हैं। १ धूनी है २ धूनी रमानी है, चार धूनियों के आगे चार तपस्वी बैठे हैं। राजा ने जाकर तपस्वियों को नमस्कार किया। तपस्वियों ने कहा—भानजे आओ, तुम्हें राजा धर्मपाल ने भेजा है। उसने कहा—मुझे मामाजी ने भेजा है। तब तपस्वियों ने कहा—तू खड़ाऊं ले आओ। तब मानधाता ने जाकर खड़ाऊं पर हाथ डाला। हाथ डालने के साथ खड़ाऊं उसे ले उड़ीं। सुमेरु पर्वत पर उसे ले जाकर उतारा। आगे जाकर देखा तो अप्सराओं का महल है। महल में घुसा। आगे मंच बिछा हुआ था। ऊपर सेज हुई थी। तब राजा ने सोचा—इस मंच पर कोई आता रहेगा। तब राजा मंच पर सो गया और उसे नींद आ गई। अप्सराएं इन्द्र के अखाड़े से आईं।

देखा तो आगे राजा मानधाता सोया हुआ है। अप्सराएं आकर बैठीं। तब राजा जगा। तब अप्सराओं ने कहा—भानजे तुम्हारे मामाजी

मामा मेलीयो । कह्यो श्री मामाजी मेलीयो छै । ताहरां एके अप छरा माणेक रे वरमाल घाली छै । सु अपछरा सु सुख भोगवे छै । यु करतां मास ६ हुआ । छठे महीने कोठार री कुच्यां लाया छै । अपछरायां कह्यो कै च्यार कोठार मतां खोलेज्यो । यु कहि अपछरायां इन्द्र रे मुजरे गयां छै । ताहरां माणेक मानधाता दीठो ऐसो अपछरायां कह्यो छै कै कोठार मतां खोलेज्यो सु हु कोठार १ खोलीस । ताहरां कोठार १ खोलीयो । देखे तो कोठार माहे एक गरुड़-पंख छै । ताहरां गरुड़-पंख आसीस दीन्ही छै । कह्यो भलो हो राजा मानधाता थारे बिना संसार रो पायेरो कुण दिखावे । मोनु केई बरस हुइ गया हुआ बंदीखाने पड़ीया ।

राजा मानधाता पूछे कह्यो गरुड़-पंख तोनु किसे वासते रोकीयो छै । गरुड़-पंख कहे वे हु ठाकुरां रो रथ छुं, सो ऊपर असवार

मे बैठा है । उसने उत्तर दिया—श्री मामाजी ने भेजा है । तब एक अप्सरा ने माणक के वरमाला डाली । वह उस अप्सरा के साथ सुख भोगता है । इस प्रकार ६ मास व्यतीत हुए । छठे महीने अप्सराएं कमरे की चाबियां लाई हैं । अप्सराओं ने कहा कि ये चार कमरे मत खोलना । यह कहकर अप्सराएं तो इन्द्र का मुजरा करने गई । तब माणक मानधाता ने सोचा—देखो अप्सराओं ने कहा है कि ये कमरे मत खोलना । परन्तु एक कमरा खोलूं गा । देखूं तो अन्दर क्या है । तब एक कमरा खोल लिया । कमरे में देखा तो एक गरुड़पंख दिखाई दिया । तब गरुड़पंख ने आशीर्वाद दिया और कहा—हे राजा मानधाता तुम्हारा भला हो । तुम्हारे बिना संसार के दर्शन कौन कराता ? बन्दीखाने में पड़े मुझे कई वर्ष बीत गये ।

राजा मानधाता ने पूछा—हे गरुड़पंख बतलाओ तुम्हें किसलिए रोक रखा है ? गरुड़पंख कहता है—मैं भगवान की सवारी हूँ, मुझ पर

हुवो तो ठाकरां री दरसण कराइ ल्याऊं । राजा गरुड़-पंख ऊपर असवार हुवो छै । गरुड़पंख राजा नु इन्द्र रे अखाड़ै ले गयो छै । उठै परमेसरजी रो दरसण हुवो छै । उठै अपछरायां इन्द्र रे अखाड़ै मांहे नाचै छै । अपछरा नाचती नाचती मानधाता नैं दीठो छै । तद ताल चूकी छै । तद कहै छै मानधाता नजर आवै छै । तद वै कह्यौ छै अठे मानधाता कठा [illegible] आवै । ताहरां यु करता अखाड़ो विखरयो छै । मानधाता घरे आयो छै । गरुड़-पंख नु आण नैं जड़ीयो छै । राजा आइ नैं सोइ रह्यो । इतरे मैं अपछरायां आया छै । आइ नैं कोठार संभालीया छै । देखै तो ताले रो काठ उतारीयो छै । अनै कह्यौ राजा तालो उघाड़ीयौ हुवा । ताहरां राजा कहै मैं तालो उखेलीयो हुवो गरुड़ दीठो हुवो । ताहरां राजा कन्है कूंची खड़ी लीधी । छ मास लग कूंची मल राखी छै ।

सवार हो जाओ तो मैं तुम्हें भगवान् के दर्शन करवा लाऊं । राजा गरुड़ पंख पर सवार हुआ । गरुड़पंख राजा को इन्द्र के अखाड़े में ले गया । वहां भगवान के दर्शन हुए । वहां अप्सराएं इन्द्र के अखाड़े में नाच रही थीं । अप्सराओं ने नाचते-नाचते मानधाता को देखा । तब ताल चूक गई और कहा कि मानधाता नजर आता है । तब दूसरी अप्सराओं ने कहा—यहां मानधाता कहां कहां से आता ? तब यों करते हुए दरबार विसर्जित हुआ । मानधाता घर आया । गरुड़पंख को लाकर बन्द कर दिया । राजा आकर सो रहा । इतने में अप्सराएं आईं । आकर संभाले संभाले । देखा तो ताले का काठ उतरा हुआ है । इन्होंने पूछा—राजा तुमने ताला खोला था ? तब राजा ने कहा—मैंने ताला खोला था । गरुड़ देखा था । तब राजा ने चाबियां वापिस ले लीं । ६ मास तक चाबियां अपने पास रखीं । इसी बीच अब सब अप्सराएं कहने लगीं—हमारे को चाबियां रख आयी

पछै एक दिन सरब अपछरायां खोलवा कोठार री कूंची मेल्ह
आवी । आगे कूंची खोजी लागे छै । ताहरां कूंप्या राजा
नु दीयां छै नै कह्यो छै राजा तालो मतां खोले तालो खोल्या
थारे नुकसाण हुसी । ताहरां कह्यो नहीं खोलूं । राजा विचारीयो
अपछराया टाले छै सु कोठार मतां खोलो । सु हूं ओहस सु माहे
कासूं छै । ताहरां राजा तालो उघलीयो । देखै तो माहे मोर छै ।
मोर कह्यो धन्य राजा तु मानु संसार रो बायरो लगायो । राजा
कहे मोर तो माहे किसा गुण छै । ताहरां मोर कहे सुणो राजा
हूं थानु नागलोक दिखाड़ूं पिण थे नु नाग-कन्या देखि नैं रमो
मतां रह । उणा माहे किस छै ते कहूं छूं । राजा कहे तुरत
आसीस । ताहरां मोर कह्यो म्हारां परां माहे पैसि न्यु ल आऊं ।
ताहरां राजा मोरां परां माहे पैसो छै । ताहरां मोर ल नै
हालीयो छै ।

पास चाबियां नहीं लगती है, तब कुंजियां राजा को दे दीं । राजा मत
लेकर कहा—राजा ताला मत खोलना । ताला खोलने से नुकसान अहित
होगा । तब उसने कहा—नहीं खोलूंगा । राजा ने सोचा—अप्सराएं रोक
गई हैं कि कमरा मत खोलना । सो मैं देखूं तो कि इसमें क्या है ? तब
राजा ने कमरा खोला । देखा तो अन्दर मोर है । मोर ने कहा—धन्य हो
राजा तुमने मुझे संसार का दर्शन कराया । राजा ने पूछा —हे मोर,
तुम में कौन-सा गुण है ? तब मोर ने कहा—हे राजा तुम्हें मैं नाग
लोक दिखाऊं किन्तु वहां नागकन्या देखकर वहीं मत रहना । उसमें निप
है इसलिए कहता हूं । राजा ने कहा—अभी आ जायेंगे । तब मोर ने
कहा—मेरे पंखों पर बैठो जिससे ले चलूं । तब राजा मोर के पंखों पर
बैठ । तब मोर लेकर उड़ा ।

[पाताललोक ले गयो छै । सारी ठांवां बतायां छै । सात लोक दिखालीया छे । फेर मोर छिपायो हुवो तब आयो छै । राजा मोर नूं छिपायो लगायो छे । ताला जड़ि नें आप आइ नें सूतो छै । जिवरे अपछरायां स्वर्गलोक सूं आयां छै । ताहरां कोठार साम्हो जोयो जाहरां दीठो सु तालो खोलीयो छे । आइ नें राजा मैं जगायो छै । घणी राजा थातु घणी हुवो तालो मतां खस्लीयो, मे तालो क्यूं खोल्यो । घणी मैं आणीयो पा कोठार माहे घणुं छै । देसरा नूं खोलीयो । ताहरां अपछरा पूंची बरही लीधी] छ मास वले हुवा छै । ताहरां अपछरां इन्द्र रे मुजरे आवणां ताहरां बोलीयां पूंची राजा । तु था आपां नहीं ल जावां । ताहरां कूंची राजा नु दी । घणी जी कोठार मतां खोलीयां । पूं कहि ने इन्द्र रे मुजरे गया छै । राजा उठि ने कोठार री मुंहडो उघ-लीयो छै । इसे तो मांहे सपतमुखो घोड़ो छै । घोड़ो आसीस दे उठीयो छै । भले राजा मानधाता तैं बिगर मोनूं कुण छोडै ।

पाताललोक ले गया । सारे स्थान दिखलाये सातों लोक दिखलाये । फिर जिस स्थान पर मोर था उस स्थान पर वापिस आ गया । राजा ने मोर को यथास्थान बन्द कर दिया । ताला बन्द करके पास आकर सो गया । इतने में अप्सराएं स्वर्गलोक से आईं । तब कमरे की ओर देखा । देखा तो ताला खुला मिला । आकरके राजा को जगाया और और कहा—राजा तुम्हें हम कह गई थी कि ताला मत खोलना तुमने ताला क्यों खोला ? उसने कहा—मैं यह जानना चाहता था कि कमरे में क्या है ? देखने के लिए खोला था । तब अप्सराओं ने चाबियां वापिस ले लीं । फिर छ महीने बीत गए । तब अप्सराएं इन्द्र का मुजरा करने को जाने लगीं तब कहने लगीं—चाबियां राजा को दे दो हम नहीं ले जायेंगी । तब चाबियां राजा को दी और कहा—कमरा मत खोलना । यह कहकर इन्द्र का मुजरा करने गईं । राजा ने उठकर कमरे का दरवाजा खोला । देखा तो अन्दर सप्तमुखी घोड़ा है । घोड़ा आशीर्वाद देकर उठा और कहने लगा—राजा मानधाता बड़े अच्छे हो तुम्हारे बिना मुझे कौन छुड़ाता ?

वाहरां राजा कहै घोड़ा थो माहे किसो गुण छै। वाहरां घोड़ो कहै राजा थो ऊपर चढ़ै तौ सारी धरती प्रदक्षिणा कराऊं। वाहरां राज घोड़ो छोडि हाथ फेरि सीस करि ऊपर असवार हुवो छै। घोड़ो मृत्युलोक ने आयो छै। सारी धरती प्रदक्षिणा की। राजा नु सारा ठिकाणा पधाया छै। वने ठिकाणे आयो छै। राजा घोड़ मूं उतरि घोड़ो ठिकाणे बांधो छै। आप आडनी सूतो छै। अपछरां इन्द्र रे आगे नाटक करि गाइ नै आयो छै। काई सामहो रखै तौ कोई सुतो छै। वाहरां अपछरा राजा नु कह्यो जी थे वासो उरलीयो। कह्यो जी म्हे अम्हेलीयो। सो कह्यो जी म्हां थांनु पाछीया हुवां। कह्यो जी सु वो म्हे अम्हेलीयो। वाहरां कृपी करही मीघो छै। राजी मास दे राजा सुख मू मिलसे छै। तिवरै इन्द्ररै अखाड़ै नु अपछरां तैयार हुयां छै। वाहरा कुंवरां राजा नु दीयां छै। अपछरा इन्द्र रे अखाड़ै गयी छै। वाहरां राजा वालो उत्पत्ति कपाट खोलीयो छै।

तब राजा ने पूछा—घोड़े तुम में कौन-सा गुण है? तब घोड़े ने कहा—राजा मुझ पर चढ़ो तो सारी पृथ्वी की परिक्रमा करता हूं। तब राजा घोड़े को मुक्त करके शीश नमाकर, हाथ फेर कर ऊपर चढ़ा। घोड़ा उन मृत्युलोक में ले आया सारी पृथ्वी की परिक्रमा की। राजा को सारे स्थान बतलाये। फिर अपने स्थान पर आ गया। राजा ने घोड़े से उतर कर घोड़े को यथास्थान बांध दिया और आप जाकर सो गया। अप्सराएं इन्द्र के आगे नाटक करके और गाकर आई हैं। उन्हें भी आगे देना था स्मरण हुआ है। तब अप्सराओं ने राजा से पूछा—क्यों जी तुमने नाम लिया था? उसने कहा—जी मैंने लिया था। उन्होंने कहा—हम तुम्हें मना कर गई थीं। उसने कहा—जी मैंने तो नाम लिया। तब चाबियां वापिस ले लीं और का नाम न रखीं। राजा सुख से रहता था। इसमें कि इन्द्र के अखाड़े में जाने के लिए अप्सराएं तैयार हुई। तब चाबियां राजा को दीं। अप्सराएं इन्द्र के अखाड़े में गयीं। तब राजा ने ताला खोल कर दरवाजा खोला।

देखें तो मांहे गदहो बंधो छै। ताहरां गदहे राजा नूं तसलीम की छै। कह्यो छै धन्य राजा तूं मोनूं संसार रो पासरो लगायो छै। राजा कहे गदहे नूं में कुण गुण छै। गदहे कहे हूं थोनूं राजा अजैपाल नू भटाऊं। ताहरां राजा कहे सावास गधा तैं भली बात कही। ताहरां राजा गदहे नूं बाहर कढीयो छै। राजा गदहे असवार हुवो छै। गदहो कढीयो नू अजमेर आयो। ताहरां गदहे टकरडी दीठी। ताहरां राजा नूं नाखि नै गदहो टकरडी लुटीयो। गदहा चरता हुवां गदहू दीठो गदहां जाय मिलीयो। ताहरां राजा उठि नै गदहे नु लेण गयो। गदहे गदहा मिलि जोड़ रही गदहो अलोप हुवो। राजा अजमेर सामो आई गयो। ताहरां राजा जिको गदहो पकड़े सु अजमेर नु दौडे। राजा अजैपाल रै पगे लागो। राजा मानधता सूं अजैपाल मिलीयो। घणो हरख कीयो। कह्यो आयो माज्यां नु सलाम करी।

देखा तो अन्दर गधा बंधा है। तब गधे ने राजा को सलाम किया और कहा—हे राजा, तुम धन्य हो कि मुझे संसार के दर्शन कराये। राजा ने पूछा—गधे, तुझ में कौन सा गुण है? गधे ने कहा—मैं तुम्हें राजा अजयपाल से मिला दूंगा। तब राजा ने कहा—शाबाश रे गधे, तुमने अच्छी बात कही। तब राजा ने गधे को बाहर निकाला। राजा गधे पर सवार हुआ। गधा उसे ले अजमेर आया। तब गधे ने एक घूरा देखा। तब राजा को पटक कर गधा घूरे पर लोट गया। वहां गधे चर रहे थे उन गधों में जाकर मिल गया। तब राजा उठ कर गधे को लेने गया। लेकिन गधा गधों में मिल गया था। इसलिए राजा जिस गधे को पकड़ता वही अजमेर को दौड़ता। राजा हैरान हुआ। गधा अन्तर्धान हो गया। राजा अजमेर आया। आकर राजा अजयपाल के चरणस्पर्श किये। राजा मानधाता ने मजम पान किया। उसे बड़ा हर्ष हुआ। कहा—आओ अपनी स्वामिनी को प्रणाम करो।

ताहरां माम्यां नु मलाम की है। ताहरां राजा धर्मपाल मानधाता नु बात पूछी । सारी हकीकत मालूम की । ताहरां राजा धर्मपाल कह्यो मामोज आ ठोड भली कि उवा ठोड । ताहरां कह्यो मामाजी उवा ठोड भली । म्हो नीसासा मुं नाखतो हुतो । एक दिन राजा मानधाता नु माम्यां बोलायो आखाज थारो मामो तो निसासा नाखतो सु हुई भाखे छै । आ बात तो अधिक हुई । ताहरां मामोज माम्यां नु भारी बात कही । बात सगले परगट हुई । ताहरां राजा धर्मपाल मानधाता नु राज देने आप तपस्या करवे गयो । राजा मानधाता बडो राजा हुवो । चकवे कहांणो । बडी साहिबी हुई ।

इति मानधाता री बात संपूर्ण ।

तब मामियों को सलाम की । तब राजा धर्मपाल ने मानधाता से बात पूछा । सारे हालचाल मालूम किए । तब राजा धर्मपाल ने पूछा—मामाजी यह स्थान अच्छा कि वह स्थान ? तब उसने कहा—मामाजी, वह स्थान अच्छा है । धर्मपाल ने कहा—मैं निःश्वास इस लिए छोड़ता था । एक दिन राजा मानधाता को मामियों ने बुलाया और कहा—भानजे, तुम्हारा मामा तो निःश्वास छोड़ता ही था अब तुम भी छोड़ने लगे । यह बात और भी बुरी हुई । तब भानजे ने मामियों को सारी बात कही । यह बात सब जगह प्रगट हुई । तब राजा धर्मपाल मानधाता को राज्य देकर स्वयं तपस्या करने चला गया । राजा मानधाता बड़ा भारी राजा हुआ । चक्रवर्ती कहलाया । उसका राज्य बहुत बड़ा था ।

मानधाता की कहानी सम्पूर्ण ।

टिप्पणी

राजा मानधाता के सम्बन्ध में प्रचलित उपाख्यानों में से एक उपाख्यान निम्नलिखित रूप में मिलता है —

'मानधाता एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा था। वह युवनाश्व का पुत्र था और अयोध्या उसकी राजधानी थी। कहते हैं कि राजा युवनाश्व कोई सन्तान न होने पर भी संसार त्याग कर ऋषियों के साथ रहने लगा था। ऋषियों ने उस पर दया करके उसके घर सन्तान होने के लिए यज्ञ किया। आधी रात के समय जब यज्ञ समाप्त हो गया तब ऋषियों ने एक घड़े में अभिमन्त्रित जल भरकर वेदी में रख दिया और आप सो गये। रात के समय जब युवनाश्व को बहुत अधिक प्यास लगी तब उसने उठ कर वही जल पी लिया जिसके कारण उसे गर्भ रह गया। समय पाकर उस गर्भ से दाहिनी कोख फाड़ कर पुत्र उत्पन्न हुआ जो यही मानधाता था। इन्द्र ने इसे अपना अंगूठा चुसा कर पाला था। आगे चलकर यह बड़ा प्रतापी और चक्रवर्ती राजा हुआ और इसने शशबिन्दु की कन्या बिन्दुमती के साथ विवाह किया जिसके गर्भ से पुरुकुत्स अम्बरीष और मुचकुन्द नामक तीन पुत्र और पचास कन्याएं उत्पन्न हुईं।"

उक्त उपाख्यान तथा राजस्थानी बात में मूलतः साम्य होने पर भी राजस्थानी बात ने कहानी को जो मनोहर रूप दिया है वह उसकी मौलिकता का पूर्ण परिचायक है। स्वर्गलोक की दिव्य स्मृति लेकर भाग्य के विधान से गर्भभार के अमर शिशु की तरह मानधाता को पृथ्वी पर आना पड़ा लेकिन स्वर्ग की स्मृति की मीठी वेदना उसके हृदय में हमेशा कसकती रही। इस वेदना के कारण राजमहल में मिलने वाले सब आनन्द उसे तुच्छ और फीके मालूम पड़ने लगे और निःश्वास मात्र उसका पारायण रह गया। इस वेदना के रहस्य के कारण ही राजस्थानी कहानी में मार्मिकता और माधुर्य आया है। मानधाता की तरह जो पाठक इस निःश्वास का रहस्य जानना चाहेगा वह स्वयं निःश्वास छोड़ कर ही इसे समझ सकेगा।

अथ बात सूराँ अर सतवादी री

एक राजा कठी देस रौ। जैरो नाम वीरमाण। उणरौ कुँवर सरप करतौ देखै क्युं नहीं। कुपंथी चाकरी बराबर कर मारवे। तद इयै रै तीन्ह साथी मेळ्या एक बाह्मण एक लोहार एक सुथार। यां सूं कुँवर रै बडो प्यार। तद रजपूत कामदारां मेळी हुय नै कुँवर नुं कह्यौ राज थ म्हारा निर्भय थका करी छौ। इण कही रजपूत सूं प्यार नहीं। सु राज करण क्यों दौ क नहीं। तिणरै इतरी कही तद कुँवर कही आगणा सरणागती अर राज ये तो वैनै श्री परमेसरजी दीयौ देवा छै। प तीन्हौं सों मन दे। इणु मैं म्हारी मही वे। बडा बुरो रा पेसी छै। जितरै महाराज मया छै इतरै ये सरब म्हारा छौ। अर जद महाराज किरपा न हुई तद ए तीन्ह म्हारा वे। यौ साथै हुसी, कुँवर इतरी कही तद लोकै कही थांरो

शूरवीर और सत्यवादियों की कहानी

किसी देश का एक राजा था। उसका नाम था वीरभाण। उसका कुँवर सर्प करते कुछ देखता ही नहीं था। नौकरों की तरह उसमें रहता था। उसके तीन साथी थे। एक ब्राह्मण, एक सुनार, एक बढ़ई। कुँवर का इनसे बड़ा प्रेम था। तब राजपूत कामदारों ने इकट्ठे होकर कुँवर से कहा कि हे कुमार! तुम खाना-खराब खर्च कर रहे हो और किसी राजपूत में तुम्हारा प्रेम नहीं। राज्य का काम करोगे कि नहीं? इनके उतना कहने पर कुँवर ने कहा कि खाना, अर्चना और राज्य—ये तो मुझे परमेश्वर देता है, उनके ही साथी इन तीनों से प्रेम है। इसलिए ये मेरे ही शरीर हैं, दुःख-भलाई के साथी हैं। जितने दिन परमात्मा की कृपा है, उतने दिन तुम सब मेरे हो और जब भगवान की दया न रहेगी तब ये तीनों मेरे हैं—ये साथी होंगे। कुँवर ने ऐसा कहा। तब

टिप्पणी

राजा मानधाता के सम्बन्ध में प्रचलित उपाख्यानों में से एक उपाख्यान निम्नलिखित रूप में मिलता है—

'मानधाता एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा था। वह युवनाश्व का पुत्र था और अयोध्या उसकी राजधानी थी। कहते हैं कि राजा युवनाश्व कोई सन्तान न होने पर भी संसार त्याग कर ऋषियों के साथ रहने लगा था। ऋषियों ने उस पर दया करके उसके घर सन्तान होने के लिए यज्ञ किया। आधी रात के समय जब यज्ञ समाप्त हो गया तब ऋषियों ने एक घड़े में अभिमन्त्रित जल भरकर वेदी में रख दिया और आप सो गये। रात के समय जब युवनाश्व को बहुत अधिक प्यास लगी तब उसने उठ कर वही जल पी लिया जिसके कारण उसे गर्भ रह गया। समय पाकर उस गर्भ से दाहिनी कोख फाड़ कर पुत्र उत्पन्न हुआ जो यही मानधाता था। इन्द्र ने इसे अपना अंगूठा चुसा कर पाला था। आगे चलकर यह बड़ा प्रतापी और चक्रवर्ती राजा हुआ और इसने शशबिन्दु की कन्या बिन्दुमती के साथ विवाह किया जिसके गर्भ से पुरुकुत्स, अम्बरीष और मुचुकुन्द नामक तीन पुत्र और पचास कन्याएं उत्पन्न हुईं।"

उक्त उपाख्यान तथा राजस्थानी बात में मूलतः साम्य होने पर भी राजस्थानी बात ने कहानी को जो मनोहर रूप दिया है वह उसकी मौलिकता का पूर्णतः परिचायक है। स्वर्गलोक की दिव्य स्मृति लेकर माघ के विमान से गर्भमार्ग के प्रकार शिशु की तरह राजकुमार को पृथ्वी पर आना पड़ा लेकिन स्वर्ग की स्मृति की मीठी वेदना उसके हृदय में हमेशा कसकती रही। उस वेदना के कारण राजमहल में मिलने वाले सब आनन्द उसे तुच्छ और फीके मालूम पड़ने लगे और निःश्वास मान उसका धारावाहिक पड़ गया। इस वेदना के रहस्य के कारण ही राजस्थानी कहानी में मार्मिकता और लालित्य आया है। मानधाता की तरह जो पाठक इस निःश्वास का रहस्य जानना चाहेगा वह स्वयं निःश्वास छोड़ कर ही इसे समझ सकेगा।

अथ बात सूरां अर सतवादी री

एक राजा कही देस रो। तैरो नाम वीरभाण। सु वो कुंवर सरच करतो देखो क्यु नहीं। कुपीयी कोठरी बराबर कर सरचे। तद इये रै तीन्ह खवास मेसु एक ब्राह्मण एक लोहार एक सुथार। इरां सू कुंवर रै घणो प्यार। तद रजपूत कामदारे भेळा हुय नें कुंवर सु कही राज मे सरच निर्मल बना करी छो। हर कही रजपूत सू प्यार नही। सु राज करण को छो क नही। तरै इतरी कही तद कुंवर कही ब्राह्मण सरचखारी अर राज जो तो मैनें श्री परमेसरजी दीनें देरा छै। ए तीन्हों मों भेळ छै। इसु म्हारी देही छै। देहा बुरी रा सीरी छै। जिवरै महाराज मया छै इनरै मे सरच म्हारा छो। पार जद महाराज किरपा न हुई तद ए तीन्हे म्हारा छै। यो सायै हुसी, कुंवर इतरी कही तद लोके कही थारी

शूरवीर और सत्यवादियों की कहानी

किसी देश का एक राजा था। उसका नाम था वीरभान। उसका कुंवर खर्च करते कुछ देखता ही नहीं था। कंजूसों की तरह उसे कहना था। उसके तीन साथी थे। एक ब्राह्मण एक सुनार, एक बढ़ई। कुंवर का उनसे बड़ा प्रेम था। तब राजपूत कामदारों ने इकट्ठे होकर कुंवर से कहा कि हे कुमार! तुम अनाप-शनाप खर्च कर रहे हो और किसी राजपूत से तुम्हारा प्रेम नहीं। राज्य का काम करोगे कि नहीं? इसके इतना कहने पर कुंवर ने कहा कि खजाना, अर्थ और राज्य—ये तो मुझे परमेश्वर देता है, क्योंकि ये साथी इन तीनों में प्रेम है, इसलिए ये मेरे ही शरीर है, बुरी भलाई के साथी हैं। जिस दिन परमात्मा की कृपा है, उस दिन तक सब मेरे हो और जब भगवान की दया न रहेगी तब ये तीनों मेरे हैं—ये साथी होंगे। कुंवर ने ऐसा कहा। तब

धीरज दीसै दे । परमेसर इसी तजबीज राज दसा । तद कुंवर कही म्हं तजबीज लेसाँ तद परमेसर देसी घर जिके मनुष धीरजवंत है तिणारा कारज परमेसरजी करसी । इतरी कहि नै औ दूहो कहे ॥

दूहो ॥ सूरां घर सतवादियां धीरां एक सुभाव । दई करेसी कामड़ा भरज फलेसी दाव ॥१॥ औ दूहो कुंवर कहीयाँ था पाछै लोग सरब कुंवर सूं सूमा करे । तद लोकाँ री राजा री छोटी राणी नु भरमाया नै कही जो धीरमाण ना कहसी तो राज थाँरी हुवे । तद इवे राणी राजा नु भरमाय नै कुंवर नु देसोटो दिरायो । ब्राह्मण सोनार सुथार ये तीन्हे साथ छै । बाहराँ री उबार देस नु चालीया जावे । उठे कही समुद्र रे तीर गया । उठ एक रोही हुंती उठे रोही माहि एक सुथार घर वासीदार रहे । सु पड़स लखोलणी री हुनर

लोगों ने कहा—तुम्हारा धैर्य ऐसा ही दीखता है, परमेश्वर देगा तभी राज्य लोगे । तब कुंवर ने उत्तर दिया कि मैं अभी लूंगा अब परमेश्वर देगा और जो मनुष्य धैर्यवान है उनके कार्य भगवान् करेगा । यह कह कर कुंवर ने यह दोहा कहा—

दोहा—सूरवीर सत्यवादी धीरों का मन एक ।
दई करेगा काम कल एरिह देगा भेद ॥

यह दोहा कुंवर ने कहा । इसके बाद सब लोग कुंवर से ईर्ष्या करने लगे । तब लोगों ने राजा की छोटी रानी को बहका कर कहा—जो धीरमाण का निर्वासन करा दे तो राज्य तुम्हारा हो जाय । तब इस रानी ने राजा को बहका कर कुंवर को वनवास दिलवा दिया । ब्राह्मण, सुनार और बढ़ई—ये तीनों साथ थे । वे उत्तर दिशा की तरफ चलने लग गये थे । वहाँ कहीं समुद्र के किनारे गये । ऊपर एक वन था । उस जंगल में एक माली घर बनाकर रह रहा था । वह लखमसलीणे की विद्या जानता

जावे। आगै चलै। तठ भी म्यार आय नीसरिया छै। उठे म्यारी री तु म्यार री सीसो करै वह आमरण रसोड़ करै। मैं म्यारे जीमै। इये भांत सजा सजा करै सुथार रै आया। तद कुंवर सुथार नु पूछीयो। म्हा र तू करै क्यों एकलो रहै छै। सहर सं कोई नहीं। जद सुथार कही भी करै एक वस्तु रै घड़ाऊं छू मैरे वास्ते रहूं छू। तद कुंवर कही र एक मानस म्हारी रै पासे मजूर रहे तो रखो। तद इण कही रखीस।

जाहरी सुतहार नु अठै राख हर कही वडरा ऋटोसणी री हुनर सीख कर आये। सुथार नु अठै राखि नै आया चालीया। तीनें जर चालता चालता एकै रोही मांहे गया। इसै वी एक लोहार रहै छै उणे रोही मांहे जाहरी कने लोहार रै आय नीसरिया। तद लोहार नु पण पूछीयो। कही र है घटै एकलो घर मांडीयो है।

था और वहां बैठ (अकेले) बनाया करता था। उस समय वे चारों उधर आ निकले। जब इन चारों के ही भोजनादि का प्रबन्ध हुआ तभी बढ़ई रसोई करता और चारों भोजन करते। इस प्रकार घूमते-फिरते एक बढ़ई के पास आये। तब कुंवर ने बढ़ई से पूछा—अरे तू यहाँ अकेला क्यों रहता है, (पास में) कोई नगर या है नहीं। इस पर बढ़ई ने उत्तर दिया—मैं यहाँ पर एक चीज बनाता हूं जिसके लिए रहता हूं। तब कुंवर ने कहा—अरे, एक मनुष्य हमारा तुम मजदूर के रूप में रख लो तो रख जायें। तब उसने कहा—रख लूंगा।

तब बढ़ई को वहीं रखा और कहा—आज्ञानुसार का हुनर सीखकर आना। बढ़ई को वहीं रखकर वे आगे चले। तीनों चलते चलते एक जंगल में आ निकले। वहाँ क्या देखते हैं कि एक लुहार उस जंगल में रहता है। वे उस लुहार के पास गये और उससे पूछा—अरे, तू यहाँ घर बना कर अकेला क्यों रह रहा है? लुहार ने उत्तर दिया—

सु घांसू घरे छे। तद लोहार कही राज हूँ थठे बावड़ी रे पाणी सू पाणी देने तरवार करूँ छूँ। सु किसा तरवार खास लाख रुपीया मोल छे। अरे कुंवर लोहार नुं कही रे लोहार एक तू म्हारो चाकर सो पासे राखे तो म्हे राखों। तद इयै कही जी राखीस। चाकरी कुंवर लोहार नुं कही तू थठे रहि अर तरवार रो हुनर सीख हर आवे। लोहार नुं थठे राख हर थे आपा चालीया। तिके चालीया चालीया एक रोही मांहे आया। थठै एक ब्राह्मण रो घर। थठे ब्राह्मण सघरो ही रहे। तद कुंवर ब्राह्मण रे घर गयो। थठे जाय न ब्राह्मण नुं पूछी। कही इसता तू थठे क्यू रहे छे रोही मांहे। तद ब्राह्मण कही थठे हूँ एक विद्या सीखूं छूं। विद्या रो जाप मृत्युंजय रो जाप छे। सु जपे सु तीन वरस रो मूवो जीवे। तद कुंवर आपरे ब्राह्मण नुं कही थठे रहि औ मंत्र सीख अर आवे। तद ब्राह्मण कही जी हूँ थाने कठे मिलीस। तद कुंवर कही सुतहार उडणखटोलणी रो

साहब मैं यहाँ बावड़ी के पानी से तलवार के धार चढ़ाता हूँ जिससे लाख-लाख रुपये मिलते हैं। तब कुंवर ने सुनार से कहा—रे सुनार तू अपने पास एक हमारा आदमी भी रख ले। तब कुंवर ने सुनार से कहा—तू यहाँ रह और तलवार का हुनर सीख कर आना। सुनार को वहीं छोड़ कर वे आगे बढ़े। चलते चलते एक जंगल में पहुँचे। वहाँ एक ब्राह्मण का घर था। वहाँ केवल ब्राह्मण ही रहता था। तब कुंवर ब्राह्मण के घर गया और वहाँ जाकर ब्राह्मण से पूछा—ऐसा तू यहाँ जंगल में क्यों रहता है? तब ब्राह्मण ने कहा—यहाँ मैं एक विद्या सीख रहा हूँ। विद्या का जप मृत्युंजय का जप है। जिसका जप करने से तो तीन वर्ष का मुर्दा भी जाग। तब कुंवर ने अपने ब्राह्मण से कहा—यहीं रहो और मंत्र सीख कर आना। तब ब्राह्मण ने कहा—यहाँ मैं आपसे कहाँ मिलूंगा? तब कुंवर ने कहा—जहाँ उड़नखटोला

भाली तैरे साथ आवजो। तद आसण नु उठे राख हर आप पाँडे चढि पवनो आगे चालीयो। तिको किही पहाड़ माँहि गयो। एक पहाड़ री गुफा दीठी। तद कुंवर माँहि पड़ोयो। सु आघो जावे तो घणू चानणो दीसे। तद चलो आघो गयो तद आगे देखे तो घणू एक बड़ा सहर छै पण राकस सूनो कर राखीयो छै। बाजार री हाटाँ मालाँ सु भरी पड़ी छै। आगे देखे तो घणू घर पण सूना पड़ीया छै। मनाह पड़ी री छै पण मनख री बात नहीं। तद घाँ घोड़े चढ़ीयो। आघे गयो आगे देखे तो घणू चोखा छै महलायत छै। उठै एक कन्या कही राजा री छै। तिका राकस ले आयो छै। सु पालणै मैं बैठी रोवै छै। नाम फूलमती छै।

[कुंवर नु देख घणू राजी हुई। तद कुंवर फूलमती नु देख आगो महल माँहि आयो। देखे तो घणू बहुत सुन्दर। कुंवर री मन

लेकर चलेगा उसके साथ आ जाना। तब राजपुत्र ने वहाँ रहकर तथा स्नान करके घोड़े पर सवार (कुंवर) अकेला आगे बढ़ा। वह किसी पहाड़ में पहुँचा। एक पहाड़ की गुफा दिखाई दी। तब कुंवर उस गुफा में घुसा। जब आगे गया तो उसे कुछ रोशनी दिखाई दी, तब वह फिर आगे बढ़ा तो क्या देखता है कि एक बड़ा भारी शहर है किन्तु राक्षस ने उसे सूना बना रखा है। बाजार की दुकानें माल से भरी पड़ी हैं। आगे क्या देखता है कि घर सूने पड़े हैं, माल तो खूब है पर मनुष्य का नाम नहीं। तब घोड़े पर चढ़ कर आगे बढ़ा। आगे देखता क्या है कि महल है, सुन्दर है। वहाँ किसी राजा की एक कन्या है। उसे राक्षस ले आया है। वह झूले में बैठी रो रही है। नाम उसका फूलमती है।

कुंवर को देखते ही वह बहुत खुश हुई। तब कुंवर फूलमती को देख कर आगे महल में आया। देखता क्या है कि (कुमारी) बहुत ही

इये मों लागो अर फूलमती कुंवर नु देख मोहत राजी हुई । तद फूलमती बोली रे मानखी तू अठे क्युं आयो। अठे राक्षस आयो तो थनैं मारसी । तद कुंवर कही तो तेह गत मैह गत । तद फूलमती कही गत काम् करैं । थानूं राक्षस मारसी । तद कुंवर कही राक्षस मारसी तो एक वार तो तू मोनूं अंगीकार कर। तद फूलमती कहे । हूं कुंवारी हूँ । तद कुंवर फूलमती नु हाथ पकड़ अर फेरा ले परणीज अर उठे भोगवी । तेसां मैं राक्षस री डर री मारी संकोचीज अर रही हुंती तद कुंवर री हाथ लागी वे सू फूल गई । तद इये कुंवर नु कही इये नू मत बाँध अर राक्षस नु मार नहीं तो आपाँ बिहुं नू मारसी । ताहराँ कुंवर खड्ग ले लूणे छिप ऊभो छै । अर राक्षस आयो तद आवतेइ फूलमती नु फूली दीठी । तद राक्षस कही फूलमती आज तो जोबन सू फूलीया छै ।

सुन्दर है । कुंवर उस पर आसक्त हो गया और कुँवर को देखकर फूलमती बहुत खुश हुई । तब फूलमती कहने लगी—हे मानव तू यहाँ कैसे आया ? यदि राक्षस यहाँ आ गया तो तुझे मार डालेगा । तब कुंवर ने कहा—जो तुम्हारी गति होगी, वही मेरी भी होगी । तब फूलमती ने कहा—तुमसे क्या बनेगी, तुम्हें राक्षस मार डालेगा । तब कुंवर ने कहा—राक्षस मारेगा (तो देखा जायगा) एक बार तू मुझे अंगीकार तो कर । तब फूलमती ने कहा—मैं तो कुमारी हूँ । तब कुंवर ने फूलमती का हाथ पकड़ कर भाँवर लेकर उससे विवाह कर लिया और उसके साथ आनन्द मनाया, जिसमें वह राक्षस के डर की मारी संकोच से रहने वाली कुंवर के हाथ लगने से खिल गई । तब उसने कुंवर से कहा—अब तू मजबूत हो जा और राक्षस का मार, नहीं तो वह हम दोनों को मार डालेगा । तब कुंवर खड्ग लेकर कोने में छिप कर खड़ा हो गया । राक्षस आया । तब आते ही उसने फूलमती को खिली हुई देखा । तब राक्षस ने कहा—फूलमती तो आज यौवन से फूली हुई है ।

२ व.

पर फूलमती कही हवै राज फुर्तीया का। इतरै राक्षस मारुणी माँहि नीचो सिर कर पकड़तो हतो भर कुंवर खड्ग मार्यो जैसूं राक्षस मारीयो। इने प राक्षस मार आपरो सहर कर सूखी करै छै। तद सहर माँहि सिंह आयो। जाहरां फूलमती कही-राज सिंह आयो छै। जद कंवर सिंह नु मारीयो। तद पीछे दिन हाथीयाँ रो डार आयो। तद बीरमाण जिको आगो पड़ो कुंवर इसो तिको मारीयो। तद और हाथी भाग गया। जाहरां कुंवर हाथी रो माथो चीर भर गज मोती काढ फूलमती रै मोहडै आगे ढिग कीयो। जसूं इवै एक साड़ी आपरो मोतियाँ रो कीवी। एडो साहिबी करै। नदीसूं रांधी कर-चोखी पकाय पांखी रो भर ले आवै भर रसोई करै। तद कुंवर पांच पातल परिसाय नै दोय पातल आप राणी जीमैं भर तीन्ह पातल ते सु पंखी जनावरां नै घाते। जाहरां कुंवर नु राणी पूछीयो कही राज प पातल तीन ये परिसायर

तब फूलमती ने कहा—हाँ, पूरी हुई है। इतने में राक्षस दरवाजे में सिर नीचा करके घुसने लगा और कुंवर ने खड्ग का वार किया जिससे राक्षस मारा गया। अब राक्षस को मार कर शहर को अपना बना कर कुंवर मौज करने लगा। तब शहर में सिंह आया। फूलमती ने कहा—महाराज! सिंह आया है। तब कुंवर ने सिंह को मार डाला। तब दूसरे दिन हाथियों का झुण्ड आया। तब बीरभान ने जो आगे सबसे बड़ा कुंवर था, उसको मार डाला। तब और हाथी भाग गये। तब कुंवर ने हाथी का मस्तक चीर कर तथा गजमुक्ता निकाल कर फूलमती के मुख के आगे पेश किया जिससे इसने एक साड़ी तथा गहना मोतियों का बनाया। यहाँ वे राज्य करने लगे। नदी से अमीरा पानी पानी का घड़ा भरकर ले आती और भोजन बनाती। तब पाँच पत्तलों में भोजन परस कर उनमें से दो पत्तलों से कुंवर स्वयं तथा रानी भोजन करते और जो शेष तीन पत्तल हैं उनको पशु—पक्षियों के सामने डाल देते थे। इस पर रानी ने कुंवर से पूछा—महाराज! ये तीन पत्तल परस कर

जनावरां नै केरै नांव पाखी को सु कही । ताहरां कुंवर कही बैराना साच कहीजै नही । ताहरां रांणी कही तौ हूं थांहरी मरण-सरीरी किसी विध हूं मर मैं थारै पगा राखस नै मरायो थर थे मना सांच कहौ नहीं तौ थाहरी प्यार किसो । ताहरां कुंवर कही म्हारा तीन्ह चाकर छै । हूं वीच रास्ता आयो छूं । तेना न पावसां परम् छूं । पुलाणी राजा री बेटो छू । इसे भांत नीसरीयो छूं । जेडी भांत नीसरीया सो बात मांड हर कही । ओवै आयसी ताहरां आपां देस जासां । एक दिन रांणी पांणी सु गई हुंती उठै मोजड़ी ७
सिलको सु पांणी मांहि गई । तद मोजड़ी मछ रै हाथ आई । सु मछ नीगली । तद रांणी दीठो एक मोजड़ी नहीं तो इणे नूं कासूं करूं । तद रांणी बीजी मोजड़ी पग सुं चलाय पहाड़ री गुफा मांहे राखी ।

पशु-पक्षियों को किसके नाम से जानते हो सो मुझे बतलाओ । तब कुंवर ने कहा-स्त्रियों को सच्ची बात नहीं कहनी चाहिए । तब रानी ने कहा-फिर मैं तुम्हारी धर्मपत्नी किस तरह ? और मैंने तुम्हारे द्वारा राक्षस को मरवाया फिर भी तुम मुझे सच्ची बात नहीं कहते तो तुम्हारा प्यार कैसा ? तब कुंवर ने कहा—मेरे तीन चाकर हैं जिनको मैं रास्ते में ही मैं छोड़ आया हूं । उनके लिए मैं पश्चात्ताप करता हूं । अमुक राजा का लड़का हूं । इस प्रकार निकला हूं । जिस तरह निर्वासन हुआ था वह बात सभी भांति कह दी (तथा यह भी कहा) कि जब वे आयेंगे तब हम अपने देश चलेंगे ।

एक दिन रानी पानी लाने के लिए गई थी । वहां उसकी जूती फिसल गई सो पानी में गिरी । वह जूती मगरमच्छ के हाथ लगी जिसको मगरमच्छ निगल गया । तब रानी ने देखा कि एक जूती तो है नहीं तो एक का क्या करूंगी इसलिए रानी ने दूसरी जूती पैर से निकाल कर पहाड़ की गुफा में रख दी । बाद पानी लेकर घर आई और

आप पांखी से परे आई अर मोजड़ीवो चीओ ओड़ो करावी । अर ए मछ अठी मोज करै नदी नदी आड़ीवो तिकी कठै अठी धमख दिसे आदी राजा रै पास आयो । राजा रै मछ तेल करायर्थो। ईंवां वद नदी माहे जाल नाखीयो । तद मछ सी जाल मांहे आयो । तद राजा मछ रो पेट चीरायो तो मांहा अठा मोतीयां री जोड़ी जसा रुपीयां री मोजड़ी । तद मोजड़ी राजा जना देखने ढंढोरो फरीयो कहीयो हवे मोजड़ी री जोड़ी पैदास करी हो जेनु आधो राज अर बेटी परणाऊं । तद औ ढंढोरो राजा रे रनवास ईलो माइ तेरी बहू सुणीयो । तद माई री बहू माइ नु कहीयो राजा कहै वो जा मोजड़ी पाय छे हवे यो मोजड़ी रे परखावर नु पैदास करै । नायन फूली हुवी । माई जाय राजा नु कहे महाराज म्हारी नायन कहे है महाराज कहे तो मोजड़ी री जस्तु बाकी जेरी जा

जूतियों का दूसरा जोड़ा बनवा लिया । और वह मत्स्य संयोगवश वहीं नदी बहता बहता उसके किनारे पर जा पहुंचा जो ओर किसी राजा के देश में आया । तब राजा को मत्स्य-तैल तैयार करवाना था ।

इसलिए नदी में जाल डलवाया गया । तब यह मत्स्य जल-जाल में आ गया । अब राजा ने मत्स्य का पेट चिरवाया तो उसमें एक लाख रुपयों की मोतियों की जूती निकली । उस जूती को देख कर राजा ने यह ढिंढोरा पिटवाया कि जो इस जूती के जोड़े का पता लगायगा उसे आधा राज्य और बेटी दूंगा । राजा के इस ढिंढोरे को राजा के नाई की स्त्री ने सुना । तब नाइन ने नाई से कहा कि यदि राजा कहें तो यह जूती क्या चीज है, इस जूती की पहननेवाली को लाकर पेश करूं । नाइन दूती थी । नाई ने जाकर राजा से कहा—महाराज मेरी नाइन कहती है कि यदि महाराज कहें तो जूती क्या चीज है जिसकी यह जूती है उसी को लाकर

जोड़ी री मोचड़ी थे देनु पैदास करूं । तद राजा कयो साबास साबास थाईज थाईज खुशीयों ले आवी । वाहरां नायण राजा पास सरची लेनै आदमी दस बीस ले नै एक रूं को करायनै नदी नदी चाली । जठे केई सहर मांहे नदी आवै सहर मांहे जाय साहूकार रा घर देखे पैरा गहणा वेस पहरीया जठे देखे तद पाछी आय रूं देवे आपी चालै । इये भांत केई सहर दीठा । तद आ देखती देखती सूने सहर आई । तद वठे पिण रूं की खमी रास्त सहर मांहे बठस लागी । तद एकण सूणो बचा बीबी पण मोजड़ी पड़ी दीठी । तद नायण सूती उठाय लीवी अर पाछी आय सूती को आव्यां नु दीवी । कह्यो सूती की पछीयांरी पण अठे हुसी । तद नायण गुफा मांहकर भीतर गई । आगे सूती हाथां पड़ी छे करोड़ री पण हाथां मिठाई सूं भरी पड़ी छे । तद नायण मिठाइ री

पेश करूं । तब राजा ने कहा—शाबाश ऐसी वस्तु ले आओ । तब नाइन राजा के पास से खर्च लेकर तथा दस-बीस आदमी लेकर एक नाव बना कर नदी-नदी चली । जब जिस शहर के पास नदी आवे वहां पर साहूकारों के घरों को जाकर देखती—स्त्रियों के गहने वेश-भूषाएं देखती फिर वापिस आकर नाव में बैठकर आगे चलती । इस प्रकार कई शहर देखे । इसके बाद देखती-देखती वह सूने शहर में आई । वहां नाव खड़ी करके जब वह शहर में घुसने लगी तब एक कोने में उसे वह दूसरी जूती पड़ी हुई दिखाई दी । तब नाइन ने जूती उठा ली और वापिस आकर जूती को नौकरों को दे दी और कहा—जूती की मालकिन भी यहीं होगी । नाइन गुफा के अन्दर में घुसी । आगे गुफा में जूती पड़ी है पर करोड़ (हलवाई) की गुफा में मिठाई से भरी पड़ी है । तब नाइन मिठाई की चोरी कर कर और बाहर

पाछ मर हर माहर आय रजपूतां नु वेह भाई । रजपूतां नै कठे ही पेड़ी माहे राखि आई । अर आप भीतर गई । आगै आ देखे तो आसू फूलमती बैठी छै । हींडोलाट माहें हींडै छै । तद नायण पाय पलासा कीनां अर कही पोती आआ म्हारी माणोजी हूँ ऊपर । इतरी कही नायन पास आइ बैठी । कही सू म्हारी माणोजी छै हूँ थारी मासी छूं । तद फूलमती कही भी बोहोत भला । तद नायण पूछी कही थारी धणी कठै छै । तद इये कही सिकार गयो छै । तद नायण इये नु पीठी कर सनान कराय माथो गूथ तैयार कीवी । इतरै कुंवर सिकार से आयो ।

[तद कुंवर फूलमती नु पूछीयो आ कौण छै । तद उंयी कही म्हारी मासी छै । तद इये रे मन सुखीपाछि हुंवो तद उठे इये नु राखी । आ उठे मायण रहै अर टहल करै । रजपूतां सीधो मिठाई लेअ विश्व

जाकर राजपूतों को दे आई । राजपूतों को कहीं जङ्गल में छोड़ आई तथा आप भीतर गई । आगे जाकर क्या देखती है कि फूलमती झूले में बैठी झूल रही है । तब नाइन ने जाकर प्रणाम की और कहा—मनकी भानजी पर न्यौछावर होती हूँ । इतना कहकर नाइन पास जाकर बैठ गई और कहा—तू मेरी भानजी है, मैं तुम्हारी मौसी हूँ । तब फूलमती ने कहा—बहुत अच्छा । तब नाइन ने पूछा—तुम्हारा पति कहाँ है । उसने कहा—शिकार के लिए गया है । तब नाइन ने इसके पीठी (उबटन) कर स्नान करा कर चोटी गूथकर उसे तैयार कर दिया । इतने में कुँवर शिकार से आया ।

तब कुँवर ने फूलमती से पूछा—यह कौन है ? तब रानी ने कहा मेरी मौसी है । तब इसके मन में विश्वास हो गया और उसे वहीं रख लिया । यह नाइन वहीं रहती और सेवा करती । राजपूतों के लिए भोजन

औषधि

ने जाय देवै । इयै भांत रहवै । रहितां नायण फूलमती नु कही एक हूँ ओखद आछो जाणूं तेनु घणोई सुख हुसी । तद फूलमती कही तो बणाव । तद नायण उठै गुटकी बणायो अर खवायो कुंवर नु अर फूलमती नु दोनां ही नु । तेसु घणे सुख राजी हुवा घणे सुखसूं रहवै । इयै भांत रहितां २ एकै दिन नायण घणो कही कुंवर नु एक गोळी बणाय छां तसु ये राजी हुसो । तद कुंवर कह्यो गोळी बणाय । तद नायण विस गोळी बणाय कर कुंवर नु दीवी । अर आपरो पालखो आय सूती । कुंवर पिण आय सूतो । तिको विस री गोळी सुं उठे मुवो । तद फूलमती कुंवर नु घणो ही बोलायो पण कुंवर तो बोले नहीं । इसा नायण देखै तो कासू कुंवर तो मूवो । तद्दतां फूलमती विचारीयो जु हमे कुंवर तो आपां री उठै कोई नहीं अर इयै बिनास कुंवर

मिठाई दे जाकर देती । इस प्रकार रहते—रहते नायन ने फूलमती से कहा—मैं एक औषध जानती हूँ जिससे तुम्हें बहुत सुख मिलेगा । तब फूलमती ने कहा—तो तैयार करो । तब नायन ने उठ कर गुटका बनाया और कुंवर और फूलमती दोनों को खिलाया जिससे वे दोनों ही बहुत खुश होकर सुख से रहने लगे । इस प्रकार रहते-रहते नायन कुंवर को फिर कहने लगी कि एक बटी बनाती हूँ जिससे तुम खुश होवोगे तब कुंवर ने कहा—बटी बनाओ । तब नायन ने विष की गोली बनाकर कुंवर को दे दी और फिर आप महल के बाजू में जाकर सो गई । कुंवर भी जाकर सो गया । वह विष की गोली से वहीं मर गया । तब फूलमती ने कुंवर को खूब बुलाया पर कुंवर तो बोलता ही नहीं । वह नायन क्या देखती है कि कुंवर मर गया । तब फूलमती ने विचारा—यदि मैं रहूँगी तो यहाँ पर अपना कोई नहीं । इस दुःख से कुंवर को

नु मारीयो । देना कहे कामू हुवे । तद फूलमती विचारी की
कुंवर रो ब्राह्मण आवे तो वणे पाखे संजीवन विद्या है ।
सु जीवाडसी । तद फूलमती कठे कुंवर नु महलायत मांह मरेड़
री रूख हुवो तेरे पानों माह लपेट अर मरेड़ रे रूख ऊपर
राखीयो । परभात हुवो तद नायण कही राजकुंवरजी कठे ।
बाहरों इये कही कुंवर तो राते मूवो । सु राकोपत राकस खाय
ले गयो । अठे राकस आवे छै । इतरी इये कही तद नायण
कही तो इसरे आपां अठे सु परी हालां । तद ए अठे सु उठ अर
नदी आई । आगे अठे रजपूत ढूंकी लीयां बैठा छै ।
नायण फूलमती नु ढूंकी बैसाण अर ढूंकी चलाइ । सु
ए चालीया आपरे सहर आया । नायण फूलमती ने ले ढूंकी सु
उतर अर राजा री हजूर ले राजा रे आगे आंख सलाम करावे ।
महाराजा आ अठे मोकली रो पेहरण वाली आई छै अर अठे मोकली

मार डाला । इस प्रकार से क्या काम होगा ? तब फूलमती ने विचार
कर इस कुंवर का ब्राह्मण आयेगा तो उसके पास संजीवन-विद्या है सो
जिला देगा । तब फूलमती ने कुंवर का वहीं महलों में जो एरंड का पेड़
था उसके पत्तों में लपेट कर एरंड के पेड़ पर रख दिया । जब प्रभात
हुआ तो नाइन ने पूछा—राजकुमार कहाँ है ? तब उसने उत्तर दिया—
कुंवर तो रात को मर गये सो रात में ही राक्षस खा कर ले गया । यहाँ
राक्षस आया करता है । इतनी बात जब इसने कही—तब नाइन ने कहा—
तो क्या हम यहाँ से कहीं निकल चलें । तब वे वहाँ से उठ कर नदी के
पास आईं । वहाँ आगे राजपूत नाव लिये बैठे थे । नाइन ने फूलमती को
नाव पर चढ़ाया और नाव चलाई । सो वे अपने-अपने नगर में
आये । नाइन ने फूलमती को नाव से उतार कर राजा की हाजिरी को
ले कर राजा के आगे जाकर सलाम कराई और कहा—महाराज यह यहाँ
पर यह भी पहनने वाली आ गई है । और यहाँ यह बहुत भी

उपा हाजर कीधी । उठै राजा इणै री रूप देख बहुत राजी हुवो । नायण ना पण इनाम देने फूलमती नु भीतर ले गयी । उठै रात पड़ी जद राजा फूलमती रे माळीये गयो । तद फूलमती कही राजा थो सू मोनु हाथ लायो तो हूं पण मरोस अर थनैंई मारीस अर एक बरस तांई दूर देख हूं अदेह महल रहीस पछै बरस दिन तांई पुन्य कर कुंवर री परसो कर पछै थारै होलीये आईस इणरै मनैं देहै मती । तादरा राजा एक छचोत महल कराय उठै इणै नु राखी । पाखती उणा नायण अर तीन कीजी राखी छोकरी कुंवारी एक ब्राह्मण री बेटी है एक सुनार री बेटी एक लुहार री बेटी । उठै ओ तीन्ह छोकरी राखी । उठै फूलमती सदा-वरत मांडीयो जिकोई आवै तेनु सीधो दीजै । इयै भांत रहे उठै उवे नारी कुंवर तीन्ह पाछर राजा आयी हुवो तिका हुनर सीखीया । जिके सुथार पाखतीयो सु ओहार पासे आयो लुहार नुं ले

हाजिर की । वहाँ राजा इसके रूप को देखकर बहुत खुश हुआ और नाइन को इनाम देकर फूलमती को भीतर ले गया । जब रात हुई तब राजा फूलमती के महल में गया । तब फूलमती ने कहा—राजा जो तूने मेरे हाथ लगाया तो मैं तो मरूंगी ही और तुझे भी मार डालूंगी और यदि एक वर्ष तक एकान्त भवन में तू मुझे रखे तथा एक वर्ष तक पुण्य करके कुंवर की शादी कर लेने दे तो बाद में तेरे पास आऊंगी । इसने मुझे मत छेड़ । तब राजा ने एकान्त महल बना कर उसे वहाँ रखा । पास में वह नाइन और तीन कुमारी छोकरियाँ रख छोड़ीं—एक ब्राह्मण की लड़की है एक सुनार की बेटी है एक लुहार की बेटी है । वहाँ उन तीनों लड़कियों को रख दिया । वहाँ फूलमती ने सदाव्रत बाँटना शुरू किया । जो आता उसे भोजन दिया जाता । इस प्रकार से वे लोग भीतर जितने कुंवर राजा था हुनर सीख गये । जो बढ़ई था वह चल कर लुहार के पास आया । लुहार को लेकर

अर बाम्हण पासे आया तीन्है भेला हुआ अर कुंवर री खबर करण नें चालीया । चिके चालिया चालिया उवे सहर आया जिके सहर फूलमती आइ हंती वठ भी सदावरत नें लवण गया । उठे बड़ा च्यार जणा री सीधो मांगीयो । वद बड़ा नें कह्यो थे तीन ही च्यार रो सीधो क्युं मांगो । तद बड़ा कह्यो म्हे च्यार छां । तद जिके सदावरत देता हंता जिके आय कह्यो फूलमती राजवीन्है जणा आया है जिके च्यार रो साधो मांगे है कांण हुकम । ताहरां रांणी कह्यो दीयो । तद बड़ा नें सीधो दीयो । उठे ही अ महल नीचे रूख हंतो तठे ही बाम्हण रसोइ कीवी हर च्यार पातल परोसी । एक पातल अर लाटो आघो मल नमस्कार कर अर बाम्हण जीमण बैठो अर उवे सुथार लोहार पिण पातल री परिक्रमा कर जीमण बैठा । तठे फूलमती दीठा । तद फूलमती विचारी ए सही भांत कुंवर कह्यो तिका हीज है । ताहरां रांणी आपरा कपड़ा

तथा ब्राह्मण के पास आकर तीनों इकट्ठे हुए और कुंवर का पता लगाने के लिए चले । वे चलते-चलते उस शहर में आये जिस शहर में फूलमती आई थी । तब वे वहाँ सदाव्रत लेने के लिए गये । उन्होंने चार जनों की सामग्री मांगी । तब उनको कहा कि तुम तो तीन हो चार की सामग्री क्यों मांग रहे हो ? तब उन्होंने कहा—हम चार हैं । तब जो सदाव्रत दिया करता था उसने आ कर कहा—कुंवरी तीन जने चार हुए हैं, वे चार की सामग्री मांगते हैं, क्या हुक्म है ? तब रानी ने कहा—दे दो । तब इनको सामग्री दे दी गई । उसी महल के नीचे एक वृक्ष था । वहीं ब्राह्मण ने भोजन बनाया और चार पत्तल परसी । एक पत्तल और लोटा आगे रख कर तथा नमस्कार करके ब्राह्मण भोजन करने बैठा और वे बढ़ई और लुहार भी पत्तल की परिक्रमा कर भोजन करने बैठे । उस समय फूलमती ने देख लिया तो फूलमती ने विचार किया—जिनके विषय में कुंवर कहा करता था वे ठीक ये ही आदमी हैं । तब रानी अपने कपड़े

उतार दासी रा कपड़ा पहर अठीं कन्है आई तद रांणी पूछीयी साथ कहो थे कोण छो अर पावस केनु 'पासे राम हर नमस्कार करो छो अर जीमो छो। तद अठीं कही म्हे वीरभांण कुंवर रा चाकर छां। सु म्हाने पाछे राख आयी हंती सु हमें म्हे कवर री खबर करण आया छां। तद राणी कही थाने जे वास्ते पांसे राखिया हुंता सु विद्या सीखी क नहीं। तद अठीं कही नू इवरी पूछ सु नूं कोण छे। तद इये आपरी हकीकत कही। इये कही इण भांत कुंवर परणी हंती हूं कुंवर री राणी छूं। थें मने इये भांत ले आया छे तिका हकीकत पण पूसमती अठां ने कही। तद अठां कही पता विद्या म्हे सीख आया छां। तद या अठां ने मौहल मांहे ले आय भरा खरणस्वगोलकी मुचार अर इवरा बैठा तीन तो थे अर रांणी तीन्ह खोपरी अर नापख ले बैस अर ध्य सु स्यगोली मा कही सटोली वाजरणों ढंढ खेव आये नेम म्हारे

उतार कर और दासी के कपड़े पहन कर उनके पास आई। तब रानी ने पूछा—तब कहो तुम कौन हो और किसके लिए प्रणाम कर कर नमस्कार करके भोजन करते हो? तब उन्होंने कहा—हम वीरभान कुमार के चाकर हैं। वह हमें पीछे छोड़ आया था सो अब हम कुंवर का पता ... है। ... ने कहा—तुम्हें जिस वास्ते पीछे ...

कुँवर री पिंड । तद् खटोली उडी जठै राजा दरबार किमी बैठो छै । अर नायण री माटी मोरछल करे छै । जठै रांणी कही अठै नायण सु नाख दियो । जठै नायण नुं पकड़ हर कही करै स पावै इतरी कही ने नाखी । तिका दरबार बीच आय पड़ी । तद राजा नाई दीठो ओ कांई हुयो । पछो नायण नु नाख चलता हुआ । नायण तो मर गई अर वै उवै सागी सहर आया । महल मांहे आय अरंड रै रूख सु कुंवर ने उतार अर ब्राह्मण जाप कीयो जैसु कुंवर जीवियो जठै फेर कुंवर आ हकीकत सुणी तद कुंवर दूहो कह्यो ॥ सूरा और सतवादियां, धीरे एक मनाह । दई करैसो धमड़ा अरंड फलेसी तांह ॥१॥ ओ दूहो कहि कुंवर जठै जवै छोकरी हुंती सु ब्राह्मणी ब्राह्मण नु परणाई सुथारी सूतहार नु परणाई लोहारी लोहार नुं परणाई । जठै सहर मांहे मता हुती सु ले ने असवार वसाया घोड़ा हाथी ले ने बड़ो लसकर कीयो । तद उठै सु चालीया

तब खटोली उड़ी । जहाँ राजा दरबार किए हुए बैठा था और नाइन का पति चँवर डुला रहा था, वहाँ रानी ने कहा कि यहाँ नाइन को पटक दो । उन्होंने नाइन को पटक कर कहा—'करे सो पावे' । इतना कह कर पटक दिया । वह दरबार के बीच में आकर पड़ी । तब राजा और नाई ने देखा—यह क्या हुआ । वे तो नाइन को पटक कर चलते बने । नाइन तो मर गई और वे ठीक उसी शहर में आये । महल में आकर एरण्ड के वृक्ष से कुँवर को उतार कर ब्राह्मण ने जप किया, जिससे कुँवर जीवित हो उठा । वहाँ फिर कुँवर ने यह सब वृत्तान्त सुना, तब कुँवर ने यह दोहा कहा—

शूरवीर सत्यवादी वीरों का मन एक ।
दई करेगा काम सम एरण्ड देगा फल ॥

यह दोहा कह कर कुँवर ने वहाँ जो छोकरियाँ थीं, उनमें से ब्राह्मणी ब्राह्मण को बढ़ई को सुथारिन लुहार को ब्याह दी । उस शहर में जो माल था उसे लेकर सवार बसाये घोड़े-हाथी लेकर बड़ी भारी सेना तैयार की । तब वहाँ से चले ।

उतार दासी रा कपड़ा पहर इणां कन्हे आई तद रांणी पूछीयो साच कही थे कोण छो अर पावल केनुं पासे रास कर नमस्कार करो छो अर सीसो छो। तद इणां कही म्हे वीरभांण कुंवर रा चाकर छां। सु म्हाने पाछे राख आयो हंतो सु हमें म्हे कुंवर री खबर करण आया छां। तद रांणी कही थाने जो मारगे पाछे राखिया हंता सु विद्या सीखी क नहीं। तद इणां कही तूं इतरी पूछे सु तूं कोण छे। तद इये आपरी हकीकत कही। इये कही इण भांत कुंवर परणी हंती हूं कुंवर री राणी छूं। अै मनें इये भांत ले आया छै तिका हकीकत पण फूलमती इणां ने कही। तद इणां कही म्हे विद्या म्हे सीख आया छां। तद आ इणां ने मोहल मांहे ले आय अर उडणखटोलणी सुधार अर इतरा बैठा तीन तो अै अर रांणी तीन छोकरी अर नायण ऐ बैस अर उठा सु खटोली मा कही उडोली आगयौं बंद जेय आये तेय म्हारे

उतार कर और दासी के कपड़े पहन कर इनके पास आई। तब रानी ने पूछा—सच कहो तुम कौन हो और किसके लिए पावल रख कर नमस्कार करके मांगते हो? तब इन्होंने कहा—हम वीरभान कुमार के चाकर हैं। वह हमें पीछे छोड़ आया था सो अब हम कुंवर का पता लगाने के लिए आये हैं। तब रानी ने कहा—तुम्हें जिस वास्ते पीछे छोड़ गया था वह विद्या तुम लोगों ने सीखी या नहीं? तब उन्होंने कहा—तू इतनी पूछताछ करती है सो तू कौन है? तब इसने अपना सब वृत्तान्त सुनाया। इसने कहा—इस प्रकार कुंवर ने मुझसे विवाह कर लिया था। मैं कुंवर की रानी हूँ। ये मुझे इस प्रकार से लाये हैं। ये सभी बातें फूलमती ने इनको बतलाई। तब इन्होंने कहा कि हम वे विद्याएं सीख आये हैं। तब वह रानी इनको महल में ले गई तथा उड़नखटोले पर इतने जने सवार हुए—तीन तो ये और रानी तीन दासियाँ और नायन—इन्होंने वहाँ बैठ कर खटोले से कहा—हे खटोले उड़ वहीं जल्दी चलो! जहाँ जाना है जहाँ हमारे कुंवर का घर पता है।

कुँवर री पिंड । तब महेली कही जठै राजा दरबार कि बैठो छे । भर नाग्या री माटी मोरछड़ करी छै । जठै राणी का घटै नायण नु नाख दियो । जठै नायण नुं पकड़ हर कही करे सप इवरी कड़ी में नाखी । तिका दरबार बीच आय पड़ी । तद राजा ना दीठो भी कसू हुयो । मतो नायण नु नाख चलता हुआ । नायण र मर गई भर मैं उनै साथी सहर आया । महल मांहे आय भरेक लसु कुंवर नै उतार कर ब्राह्मण आन कीयो जैसु कुंवर जीवित जठै फेर कुंवर आ हकीकत सुणी तद कुंवर दूहो कह्यो ॥ मूर भीर सतवादियां, धीरां एक मनाह । रह फरैसा धसमसा करस फजेसी तांह ॥१॥ भो दूहो कहि कुंवर उठै उवै छोकरी हुती ब्राह्मणी ब्राह्मण नुं परणाइ मुनारी मुनहार नुं परणाई लोहारं लोहार नुं परणाइ । उठै सहर मांहे मथा हुती सु ले नै असवार बसाया घोड़ा हाथी ले नै बडो समबर कीयां । तद उठै सु चालीय

तब सहेली कही । यहाँ राजा दरबार किये हुए बैठा था और नायन का पति चँवर डुला रहा था, वहाँ रानी ने कहा कि यहाँ नायन को पटक दो । उन्होंने नायन को पटक कर कहा—इसे खा जावे । इतना कह कर पटक दिया । यह दरबार के बीच में आकर पड़ी । तब राजा और नाई ने देखा—यह क्या हुआ । वे तो नायन को पटक कर चलते बने । नायन तो मर गई और वे ठीक उसी शहर में आये । महल में आकर एरण्ड के वृक्ष से कुंवर को उतार कर ब्राह्मण ने जल दिया, जिससे कुंवर जीवित हो उठा । यहाँ फिर कुँवर ने यह सब वृत्तान्त सुना, तब कुंवर ने यह दोहा कहा—

शूरवीर सत्यवादी धीरों का मन एक ।
ऐसे करेगा काम जब एरण्ड देता टेक ॥

यह दोहा कह कर कुँवर ने वहाँ जो छोकरियाँ थीं, उनमें से ब्राह्मणी ब्राह्मण को सुनारी सुनार को ब्याह दी । उस शहर में जो माल था, उसे लेकर सवार बनाये घोड़े-हाथी लेकर बड़ी भारी सेना तैयार की । तब वहाँ से चले ।

तिके चालता चालता बाप रै देस आया । तब राजा नु खबर गई सु कोई राजा देस पर चाढीयो आवे छै । तद इयै राजा साम्हां आपरा परधान मेलीया । कुंवर पासे आय पूछण लागा कैरो साथ छै । तद कुंवर रा लाख्यां कही कुंवर वीरभांन छै फलाणो री बेटो छै सु बाप रे पासे आवे छै देसोटै गयो हुतो तिको आयो छै । परधांने आय राजा नु कही महाराज रावलो कुंवर वीरभाण छै सु रावलै पासे आवे छै । तद राजा रै छोटै महल रै छोरू क्यु नहीं । राजा इतरी बात सुणी राजी हुवो । राजा पण साम्हो चढीयो छै । जठै नजीक आया तद कुंवर घोडे सु उतर नै बाप रे पगे आय लागो । तठै राजा बेटे सू मिल हर राजी हुवो । बाजे बाजते राजा बेटे नु ले घरे आयो छै । तद कुंवर आपरा रजपूता नु कही श्री परमेसर मोनू राज देण हुतो तो दीया छै तो रजपूतां कही राज कही सु सही करै छै । बात सूरा सतवादीयां री संपूरण ।

तो चलते-चलते अपने पिता के देश में आये । तब राजा को खबर हुई कि कोई राजा देश पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है । तब इस राजा ने सामने अपने प्रधानों को भेजा । वे कुंवर के पास आकर पूछने लगे कि यह किस की सेना है ? तब कुंवर के आदमियों ने कहा—अमुक राजा के लड़के कुंवर वीरभाण हैं वे अपने पिता के चरणस्पर्श के लिए आये हैं । वनवास में गये हुए थे सो लौट कर आये हैं । प्रधानों ने आकर राजा से कहा कि महाराज ! आपका कुंवर वीरभाण है, जो आपके चरणस्पर्श करने के लिए आ रहा है । राजा की छोटी रानी के कोई लड़का हुआ नहीं था इसलिए राजा यह बात सुनकर खुश हुआ । राजा अगवानी करने के लिए गया । जब नजदीक आया तब कुंवर घोड़े से उतर कर पिता के पैरों आ गिरा । तब राजा पुत्र से मिलकर खुश हुआ । राजा बाजे-गाजे के साथ पुत्र को लेकर घर आया । तब कुंवर ने राजपूतों से कहा—श्री परमेश्वर को मुझे राज्य देना था वह दे दिया है । तब राजपूतों ने कहा—महाराज आपने कहा सो ठीक है ।

शूरों और सत्यवादियों की कथा । सम्पूर्ण ।